समस्याओं के समाधान का पथ अणुव्रत

◈ mRd"k tu 12वीं
श्रीमती कंचन देवी
उच्च मा. विद्यालय
ब्यावर, अजमेर, राजस्थान

अणुव्रत जाति, वर्ग, देश व प्रान्त की सीमाओं को अतिकान्त कर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये एक अन्तहीन धरातल प्रस्तुत करता है। इसके आदर्श जितने व्यापक हैं, उतने ही उपयोगी हैं। एक मजदूर की झोपड़ी से लेकर संसद भवन तक अणुव्रत की गूँज अनुध्वनित हो रही है। वर्तमान के इस अनिश्चय व तनावभरे वातावरण में अणुव्रती व्यक्ति निश्चिंत और तनावमुक्त जीवन जी सकता है।

;गीन समस्याओं का अर्थ ऐसी समस्या है जिससे किसी राष्ट्र अथवा किसी क्षेत्र विशेष की प्रगति में बाधा उत्पन्न होती है। वर्तमान युग में देखा जाये तो पता लगता है कि वर्तमान में कई समस्याओं ने संसार को घेर लिया है। जैसे हिंसा, आतंकवाद, अविश्वास, आबादी की वृद्धि, धोखाधड़ी आदि समस्यायें चाहे संसार में कितनी ही क्यों न हों परंतु उनका हल उन्हीं में ही समाहित होता है।

leL;k,a

- हिंसा : यह एक ऐसी समस्या है, जो आगे से आगे उलझती जा रही है। इसे सुलझाने के सारे प्रयास असफल हो रहे हैं। कुछ लोगों की यह धारणा बन गयी है कि यह समस्या मनुष्य जाति की जिंदगी का अपरिहार्य हिस्सा बन गयी है। इसे सुलझाना संभव नहीं है। हमारा अभिमत यह है कि संसार में ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान न हो। शर्त एक ही है कि समस्या से जुड़े हुये सभी पक्ष समाधान पाने के लिये तैयार हों। भारत में पंजाब, असम और कश्मीर में आतंकवाद ने अपने पग जमाये हैं, यह स्थूल दृष्टिकोण है। हमारी

चिंता राजनीतिक दृष्टि से नहीं, मानवीय दृष्टिकोण से प्रेरित है। हमारी दृष्टि में इस समस्या का समाधान है 'अहिंसा'। अहिंसा महाव्रत ही नहीं, अहिंसा अणुव्रत भी इसे सुलझा सकता है। मनुष्य अहिंसा–अणुव्रत को समझे और उसे जीवन व्यवहार के साथ जोड़े।

- अविश्वास भी एक समस्या : दूसरी समस्या है अविश्वास की। आपसी विश्वास धुंधलाते जा रहे हैं। भाई–भाई का विश्वास नहीं करता। दायां हाथ बायें हाथ का विश्वास नहीं करता। बहुत बार ऐसा हो जाता है कि व्यक्ति स्वयं का विश्वास नहीं करता। विश्वास के अभाव में जीवन दूभर हो जाता है। सत्य महाव्रत विश्वास की बुनियाद है। सब लोग महाव्रती नहीं बन सकते। सत्य–अणुव्रत का कवच पहन लिया जाये तो अविश्वास के तीरों से सुरक्षा हो सकती है।

- धोखाधड़ी : तीसरी समस्या है धोखाधड़ी की। मनुष्य को चिंता सताती रहती है कि वह ठगा जाएगा। संबंधों में धोखे का भय, व्यापार में धोखे का भय, बाजार में धोखे का भय, शादी–विवाह के प्रसंग में धोखे का भय। दवाई में मिलावट का भय, खाद्य पदार्थों में मिलावट का भय, और तो और धर्मगुरुओं से भी धोखे का भय। चारों ओर धोखा ही धोखा। इसका समाधान है "अचौर्य व्रत"। प्रामाणिकता, ईमानदारी या कथनी–करनी की एकरूपता का प्रतीक अचौर्य व्रत स्वीकृत हो जाये तो धोखाधड़ी का भय निर्मूल हो सकता है।

- आबादी की समस्या : चौथी समस्या है आबादी की। परिवार नियोजन के व्यापक प्रचार और गर्भनिरोध कृत्रिम उत्पादों के प्रयोग से भी जनसंख्या नियंत्रित नहीं हो पायी है। एक ओर मुक्त सैक्स, दूसरी ओर भ्रूणहत्या, गर्भपात और जन्म के साथ ही अवांछित संतान की हत्या। किन्तु आबादी द्रोपदी का चीर बनती जा रही है। जनसंख्या को नियन्त्रित करने का अमोघ उपाय है बह्मचर्य की साधना। बह्मचर्य महाव्रत का पालन सबके लिये शक्य नहीं हो सकता। पर अणुव्रत का लक्ष्य न हो तो समाधान कैसे होगा? निरंतर अबह्मचर्य की अधिक से अधिक साधना कर दुर्बलता से बचा जा सकता है।

- चिन्ताओं के चक्रव्यूह में : पाँचवीं समस्या है लालसा की, संग्रह की। अर्थ जीवनयापन का साधन है किंतु उसे ही साध्य मानने वाले व्यक्ति सोते–जागते 'धन' के सपने ही देखते हैं। वे अपनी आकांक्षाओं को असीमित विस्तार देते हैं। फिर उनकी पूर्ति के लिये उचितानुचित सब तरीके काम में लेते हैं। एक इच्छा की पूर्ति अनेक नई इच्छाओं को जन्म दे जाती है। लाभ से लोभ बढ़ता है–आगम का यह सच प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। आर्थिक भ्रष्टाचार में लिप्त व्यक्ति कब क्या कर लेता है, कुछ कहा नहीं जा सकता।

  यौगलिक युग की जीवन शैली कितनी सीधी और सरल थी। न खाने–पीने की चिन्ता, न मकान की चिन्ता, न बाल–बच्चों की चिन्ता, न शादी–विवाह की चिन्ता, न लोभ–लालसा की चिंता और न ही संग्रह की मनोवृत्ति। निश्चिन्त जीवन और लम्बा आयुष्य। इसका एकमात्र कारण "अपरिग्रह" का सिद्धान्त है। जो लोग पूर्ण रूप से अपरिग्रही न बन सकें, वे परिग्रह की सीमा करके चिन्ताओं के चक्रव्यूह से बाहर निकल सकते हैं।

- समाधान का राजपथ है अणुव्रत : 'अणुव्रत' वह खोज है जो व्यक्ति की अभीप्सा को पूरा करती है। अणुव्रत क्या है? अपनी वृत्तियों का शोधन, अपने आपका परिमार्जन। वृत्ति–शोधन और आत्म–परिमार्जन की बात जब शुरू हो जाती है तो अन्तर्मुखी होना ही पड़ता है। अन्तर्मुखता वह स्थिति है, जहाँ पहुँचकर सुख और शांति स्वयं कृतार्थ हो जाती है। अणुव्रत जीवन का विज्ञान है। इसका अध्ययन किए बिना सारा अध्ययन अधूरा है। अणुव्रत का विज्ञान समझ में आ गया तो बहुत कुछ समझ में आ गया।

अणुव्रत सुखी जीवन की चाबी है। मानवता की न्यूनतम मर्यादा की अवहेलना करने वाला व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र मनुष्यता के धरातल को तैयार नहीं कर सकता। अणुव्रत आपको यही कहता है कि बाहरी भटकन को छोड़कर एक बार अपने भीतर झांक लो। आत्म–ज्ञान और आत्म–साक्षात्कार की एकमात्र यही प्रक्रिया है। इसके आधार पर ही

व्यक्ति सुखी हो सकता है। अणुव्रत को आधार बनाकर जीवन जीने का संकल्प हो तो भी अनेक समस्यायें सुलझ सकती हैं।

अणुव्रत जाति, वर्ग, देश व प्रान्त की सीमाओं को अतिकान्त कर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये एक अन्तहीन धरातल प्रस्तुत करता है। इसके आदर्श जितने व्यापक हैं, उतने ही उपयोगी हैं। एक मजदूर की झोपड़ी से लेकर संसद भवन तक अणुव्रत की गूँज अनुध्वनित हो रही है। वर्तमान के इस अनिश्चय व तनावभरे वातावरण में अणुव्रती व्यक्ति निश्चिंत और तनावमुक्त जीवन जी सकता है क्योंकि उसका चिन्तन संयत है, प्रवृत्ति संयत है और लालसा संयत है। जीवन के चौराहे पर मंजिल गामी पथ की खोज में रहने वाले व्यक्ति के लिये अणुव्रत वह राजपथ है जो उसे दीर्घकालीन भटकन से उबार कर गति देने में सक्षम है। इससे व्यक्ति आनंद का अनुभव करेंगे और समस्याओं के समाधान में सक्रिय भूमिका निभा पायेंगे। ✿

अध्यात्म व भौतिकता में संतुलन जरूरी

◈ **j:tuk feŸky** 11वीं
हलवासिया विद्या विहार
रोहतक गेट, भिवानी, हरियाणा

भ्रष्टाचार न केवल राजनीतिक स्तर पर ही प्रचलित है अपितु अन्य स्तरों पर भी है। डॉक्टर अधिक धन के लालच में रोगी का ठीक उपचार नहीं करता। अध्यापक कक्षा में ठीक न पढ़ाकर घर पर ट्यूशनें लेता है, विद्यार्थी नकल करके उत्तीर्ण होता है, व्यापारी मिलावट करता है, अफसर रिश्वत लेता है, सरकारी कर्मचारी ठीक पैसे वसूलने की वजाय बीच में पैसे खाता है तो यह सब भ्रष्ट आचरण ही है।

0र्तमान दौर भौतिक उन्नति की रफ्तार में है। मनुष्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की सहायता से असीम आसमाँ से भी ऊपर मैराथन कर रहा है। अधिकाधिक सुख एवं ऐश्वर्य परस्त जीवन का कथित आनंद लेने हेतु मनुष्य धन एकत्रण में लगा है। वर्तमान युग में हर मनुष्य संकट के जाल में है। कोई उन्माद से ग्रसित है, तो कोई राजनीतिक वर्चस्व का शिकार है। कोई गरीबी का मारा है तो कोई आतंकवाद से सहमा हुआ है। कोई भ्रष्टाचार में लिप्त है तो कोई भगवान बनकर लाखों किलो सोना इकट्ठा करने वाला है। कोई प्रदूषण की समस्याओं से त्रस्त है तो कोई राष्ट्रीय हित में भी स्वयं के लिए करोड़ों रुपये इकट्ठा करने में व्यस्त है।

आज विश्व कई समस्याओं से जूझ रहा है। भ्रष्टाचार, आतंकवाद, पर्यावरण प्रदूषण, राजनीतिक उन्माद, महंगाई, संप्रदायवाद, जातिवाद, धोखाधड़ी, नशा–सेवन नामक सुरसा–परिवार का कद नित नई बुलंदी को छू रहा है। लेकिन यह बुलंदी का स्तर हमारी लाखों पुरानी मानव सभ्यता के नाश का आरंभिक प्रतिबिंब ही तो है। विश्व के मौजूदा हालातों को देखते हुए कवि गोपालदास 'नीरज' आक्रोशित स्वर में कहते हैं:

'जहाँ भी जाता हूँ, वीरान नज़र आता है
खून में डूबा हर मैदान नज़र आता है,
कैसा है वक्त कि दिन के उजाले में भी
नहीं इन्सान को इन्सान नज़र आता है।'

हर मनुष्य के मन में एक आकांक्षा है विशिष्ट होने की, असाधारण बनने की। वह इस जनमंडल में सामान्य नहीं रहना चाहता। वास्तव में मनुष्य का अस्तित्व चेतनायुक्त है। उसका जीवन अचेतन शरीर से युक्त है। हम कह सकते हैं मनुष्य यौगिक है, जिसमें चेतन और अचेतन दोनों का मिश्रण है। इस तरह मनुष्य की समाज में रहकर कुछ अंतर्मुखी तो कुछ बहिर्मुखी गतिविधियाँ नकारात्मक रूप लेते हुए तुच्छ प्रतिभा को प्रदर्शित करती हैं। वह अपने मन–मस्तिष्क के सुप्रयोगों को भूल रहा है और यही इस युग की समस्याओं का मूल है। इन समस्याओं से उभरने के लिए किसी ने सही कहा है:

'आत्मिक उन्नयन जरूरी है
भौतिकी संचयन जरूरी है,
किन्तु अध्यात्म और भौतिकता
दोनों में संतुलन जरूरी है।'

युगीन समस्याओं में आतंकवाद को प्रथम क्रमांक पर रखा जा सकता है। रोज ही भारत में साँप–नेवले जैसी नोंचानोंची होती है। नए–नए आतंकवादी संगठन कुकुरमुत्तों की तरह उग रहे हैं। जार्ज बनार्ड शॉ ने लिखा है 'राजनीति दुष्ट प्रवृत्ति के व्यक्तियों के लिए अंतिम शरणालय है।' शॉ का यह कथन भारत की राजनीति पर पूरी तरह घटित हो चुका है। प्रथम ब्रेन्ट रिपोर्ट में यह प्रश्न उठाया गया था कि क्या हमें अपने उत्तराधिकारियों के लिए बढ़ते हुए मरूस्थल, कमजोर हो चुकी धरती व बीमार पर्यावरण वाला जला–भुना ग्रह छोड़ कर जाना है।

वास्तव में विश्व की आबादी के सामने यह ज्वलंत प्रश्न है, चुनौती है। आज पर्यावरणीय समस्याएँ बढ़ रही हैं। हिमनदी पिघल रही है। बर्फीले पर्वत पीछे हट रहे हैं। तापमान में वृद्धि हो रही है। धरती की छाती पर

वाहनों, मशीनों की रफ्तार की दर दिन दुनी रात चौगुनी होती जा रही है। किसी कवि ने क्षरित होती धरती की सुरक्षा में ये दो पंक्तियाँ सटीक कही हैं:

''चिमनी से जब धुआँ निकले
धरती भी खाँसी करती होगी,
बिना दवा के वो भी शायद
पड़ी–पड़ी चुप रोती होगी।''

आंतरिक दृष्टि से आज मनुष्य में मानवता का भाव कम और आर्थिक आय एवं सामाजिक प्रभुता का भाव ज्यादा है। इसी चक्कर में रोज रिश्वतखोरी, जालसाजी, कालाबाजारी, धोखाधड़ी और घोटालेबाजी के चर्चे आम हो गए हैं। इसी वर्ष भारत में कॉमनवेल्थ, आदर्श और टूजी स्पेक्ट्रम जैसे घोटाले सामने आए हैं।

भ्रष्टाचार न केवल राजनीतिक स्तर पर ही प्रचलित है अपितु अन्य स्तरों पर भी है। डॉक्टर अधिक धन के लालच में रोगी का ठीक उपचार नहीं करता, अध्यापक कक्षा में ठीक न पढ़ाकर घर पर ट्यूशनें लेता है, विद्यार्थी नकल करके उत्तीर्ण होता है, व्यापारी मिलावट करता है, अफसर रिश्वत लेता है, सरकारी कर्मचारी ठीक पैसे वसूलने की वजाय बीच में पैसे खाता है तो यह सब भ्रष्ट आचरण ही है। यह अमानवीय व्यवहार है, क्योंकि इससे समाज का अहित होता है।

आज भारत की राजनीति में जाति, धर्म, मत और संप्रदाय असल किरदार निभा रहे हैं। जिस प्रकार विधानपालिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका तीनों को एक मुट्ठी में दे दें तो तानाशाही का जन्म होता है, उसी प्रकार अगर इनके साथ धर्म का भी मेल हो जाए तो औरंगशाही का जन्म होता है जो अपनी सल्तनत और कुल–परंपरा का घातक होता है। जिस प्रकार औरंगजेब की कट्टरता के कारण गौरवशाली मुगल सल्तनत का सूरज डूब गया। अणुव्रत आचार संहिता के अंतर्गत ग्यारह संकल्प दिए गए हैं। यदि कोई मनुष्य विद्यार्थीकाल से ही अनिवार्य रूप से अपने जीवन में इनका पालन करे तो भारत देश फिर से 'सोने की चिड़िया' बन सकता है।

युगीन समस्याओं के पीछे सबसे बड़ा कारण, जिसका सूत्र है–'जैसा अन्न वैसा मन' है। जार्ज बनार्ड शॉ मांस नहीं खाते थे। एक व्यक्ति ने जब उनसे मांस खाने के लिए कहा तो उन्होंने उत्तर दिया, "मैं अपने पेट में कब्रिस्तान नहीं बनाना चाहता।" क्या मांस खाने वाला पशु के संस्कार को भी साथ–साथ नहीं खाता। मांस को खा ले और पशुओं के संस्कार को छोड़ दे, यह बात संभव ही नहीं है। आज इसी कारण से दुष्ट एवं आतंकवादी प्रवृत्ति नस्ल का जन्म अत्यंत तीव्र गति से हो रहा है।

इसके पीछे तृषणा भी एक प्रमुख कारण मानी जा सकती है। आदमी को सब कुछ पाने के चक्कर में वास्तविकता दिखाई देती। परिणामतः उसे उद्‌वेग प्रलापित कर देता है और वह उन्माद की श्रेणी में जा बैठता है, फलस्वरूप व्याधि उसे घेर लेती है और वह स्वयं को अनैतिक आचरण में संलिप्त कर लेता है। अणुव्रत नियमों को सख्ती से पालन करने से व्यक्ति का नैतिक उत्थान होगा और सामाजिक समस्याओं पर अंकुश लग जाएगा।

किसी विद्वान ने कहा है– "भारतीय संस्कृति शतदल कमल के समान है जिसकी हर पंखुड़ी के सहयोग से ही उसकी शोभा है। किसी भी एक पंखुडी के अभाव में उसकी शोभा छिन जाएगी। इसलिए उसकी हर पंखुडी का महत्व समान है।" इसलिए कहा जाता है कि भारत की अनेकता में ही उसकी एकता सन्निहित है। इस देश में अनेक धर्मों, जीवन पद्धतियों और विचारधाराओं को मानने वाले रहते हैं। उनके आपसी सहयोग, सौजन्य और सद्भाव से ही देश की एकता की रक्षा की जा सकती है तथा अलगाववादी, पृथकतावादी, उग्रवादी, विच्छिन्नतावादी शक्तियों का सामना सफलतापूर्वक किया जा सकता है। अतः ठीक ही कहा है:

"निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें,
स्वार्थ साधना की आँधी में, वसुधा का कल्याण न भूलें।" ✿

नैतिकता से हल हो सकती हैं समस्याएं

◈ vk;"kh tu 10वीं
वर्धमान शिक्षा मंदिर, पद्मचंद मार्ग
दरियागंज, दिल्ली

समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार विकराल रूप धारण करता जा रहा है। इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीके अपना रहा है। शासकों की बदनीयती और बदइंतजामी एक बहुत बड़ा उदाहरण है।

eमानव समाज ने प्रगति की बुलंदियाँ छू ली हैं। प्रगति की ऊँचाई तक पहुंचाने के लिए उसने जो मार्ग तय किये हैं, उनमें उसके अस्तित्व पर ही खतरा उत्पन्न हो गया है। मानव जीवन का लक्ष्य मात्र भौतिक सुविधाओं को प्राप्त कर समाज में अपना स्थान कायम करना रह गया है परंतु जीवन में सुख, शांति सौहार्द इसका भी उतना ही महत्व है जितना धन और संपत्ति का है।

अणुव्रत आंदोलन मानव जीवन को मानवीय मूल्यों के प्रति सचेत करने का आंदोलन है। विज्ञान के विकास में मानव मूल्यों का सरंक्षण तो नहीं किया गया बल्कि उसका कोई मूल्य भी नहीं रखा, फलतः मानव समाज आज अनेकानेक युगीन समस्याओं से जूझ रहा है। भौतिक सुविधाओं की पूर्ति करने तथा अपने आप को ज्यादा ऊँचा और पैसे वाला दिखाने में मानव अपनी नैतिकता और अपने आदर्शों को पीछे छोड़ता चला जा रहा है और इसी होड़ में अनेक समस्याओं के दरवाजे खुलते जा रहे हैं।

भ्रष्टाचार, दहेज, आतंकवाद, नक्सलवाद, साम्प्रदायिकता का प्रभाव मानव की नैतिकता और आदर्शों पर हावी होता जा रहा है। आधुनिक युग में

व्यक्ति अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता, अराजकता और स्वार्थपरता का बोलबाला हो गया है। परिणामस्वरूप मानव की संस्कृति और उसका पवित्र और नैतिक स्वरूप धुँधला सा हो गया है।

समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार विकराल रूप धारण करता जा रहा है। इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीके अपना रहा है।

शासकों की बदनीयती और बदइतंजामी एक बहुत बड़ा उदाहरण है। काला धन, तस्करी, जमाखोरी का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। तस्कर खुलेआम व्यापार करता है। देश की, समाज की स्थिति यह हो गई है कि लोग अपने ही देश को खोखला करने में लगे हैं। समाज का आधार परस्परावंलबन है। समाज एक–दूसरे के सहारे से चलता है जो अब समाज में होते हुए स्वार्थ का स्वरूप लेता जा रहा है।

मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए अणुव्रत आंदोलन आचार्य तुलसी जी ने शुरू किया क्योंकि उनका मानना था कि आत्म संयम के बिना मनुष्य का कल्याण संभव नहीं है। अणुव्रत की विचार सारणी इससे भिन्न है। अणुव्रत का दर्शन भगवान महावीर के ढाई हजार वर्ष पुराने चिंतन पर आधारित है। उनके अनुसार संघर्ष जीवन का आधार नहीं है। जीवन का आधार है अहिंसा, प्रेम, करुणा और मैत्री। यद्यपि इस बात को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि जीवन में हिंसा करनी पड़ती है।

आधार और अनिवार्यता दो भिन्न पहलू हैं। अणुव्रत विचारधारा के अनुसार हिंसा जीवन की अनिवार्यता हो सकती है किंतु मानसिक स्तर पर उसे समर्थन नहीं दिया जा सकता क्योंकि वह जीवन का आधार नहीं है। श्रावक के लिए महारम्भ महाहिंसा को वर्जित बताया गया है। महारम्भ से उपरत रहने का तात्पर्य है हिंसा का अल्पीकरण। हिंसा की अनिवार्यता को स्वीकृति मिलने पर भी हिंसा के अल्पीकरण की दिशा में गति यह

प्रमाणित करती है कि जीवन का आधार हिंसा नहीं, अहिंसा, प्रेम और मैत्री है।

अणुव्रत की दृष्टि से स्वस्थ समाज रचना के लिए उक्त तथ्य वाछंनीय है। महावीर ने कहा महाहिंसा नरक का हेतु है। हिंसा की वृद्धि जीवन को नारकीय बना देती है। नारकीय यंत्रणाओं और संत्रास से बोझिल जीवन व्यक्ति को अधिक असंतुलित बना देता है और कई समस्याओं को जन्म देता है। कुछ धर्मों का उद्देश्य है जैसे–तैसे अधिकांश व्यक्तियों को धर्म के मार्ग पर लाना। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए समाज के कुछ व्यक्तियों को मिटा देने का सिद्धांत प्रशंस्य नहीं है।

एक–दूसरे की सत्ता या प्रभुत्व को समाप्त करने के लिए निरतंर हिंसा का सिलसिला चलता है। जिस समाज में हिंसा की अल्पता की ओर गति होती रहेगी, उस समाज में दुर्भावना और दुश्चिंताएं स्वयं क्षीण होती जाएंगी और हिंसा आतंकवाद और कुरीतियों जैसी समस्याओं को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा।

अणुव्रत कहता है किसी भी जीवन पद्धति में व्यक्ति का 'सच' खंडित नहीं है–अहम् भी संग्रह का विर्सजन नहीं है। यह अहम् का समूह ही सब दोषों का उत्पत्ति बीज है। हिंसा, झूठ, चोरी और अबह्मचारी परिग्रह ये सब किस लिए हैं, इसी सब के पोषण के लिए भौतिकवादी व्यवस्था स्वः को शोधन नहीं करती, नियमन करती है। फलतः प्रत्यक्षमय शांत और परोक्ष में उदित रहता है। इसलिए व्यक्ति अनैतिक आचरण करता है।

अंत में अणुव्रत आंदोलन के प्रमुख प्रणेता की यही उक्ति 'नैतिकता के बिना अहिंसा सिद्ध नहीं हो सकती।' अहिंसा के बिना नैतिकता प्रतिस्थापित नहीं हो सकती । अणुव्रत का अर्थ नैतिकता है जो तमाम युगीन समस्याओं का एकमात्र इलाज है। आत्म संयम और नैतिकता ही आज की युगीन समस्याओं का एकमात्र हल है। ✿

निजी स्वार्थ से उपजती हैं समस्याएं

जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि बेरोजगारी का मूल कारण है, अतः इस पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। जनता को परिवार नियोजन का महत्व समझाते हुए उसमें छोटे परिवार के प्रति चेतना जागृत करनी चाहिए। शिक्षा को व्यवसायप्रधान बनाकर शारीरिक श्रम को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

◈ **vkdk{kk flag** 11वीं
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल
बावतपुर, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

çत्येक समाज अपने सदस्यों की आकांक्षाओं और इच्छाओं की पूर्ति का साधन होता है। समाज के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसका प्रत्येक सदस्य प्रसन्न रहे और समाज के साधनों का उपयोग सभी व्यक्ति समान रूप से कर सकें। किन्तु समय के साथ–साथ जब जनसंख्या वृद्धि अथवा अन्य दूसरे कारणों से सामाजिक मान्यताओं का ह्रास होने लगता है और कुछ शक्तिशाली व्यक्ति केवल अपने स्वार्थ के लिए समाज के साधनों व सुविधाओं की पूर्ति करने लगते हैं तो समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं।

युगीन समस्याएँ दो स्तरों पर उत्पन्न होती हैं– राष्ट्रीय स्तर, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर। राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न होती हैं :

Òkjrh; lekt esa fL=;ksa dh fLFkfr o lq/kkj% नारी ने प्रेम के वशीभूत होकर स्वयं को पुरुष के चरणों में समर्पित कर दिया किन्तु निर्दयी पुरुष ने उसे बंधनों में जकड़ लिया। नारी अज्ञान के गहत गर्त में डुबकियाँ लगाने तथा सामाजिक प्रताड़नाओं को मूक पशु के समान सहन करने के लिए विवश होती है।

धीरे–धीरे भारतीय विचारकों एवं नेताओं का ध्यान स्त्री–दशा में सुधार की ओर आकर्षित हुआ। राजा राममोहनराय ने सती प्रथा का अन्त कराने का सफल प्रयास किया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने पुरुषों की भाँति महिलाओं को भी समान अधिकार दिए जाने पर बल दिया। गांधी जी सहित अन्य अनेक नेताओं ने महिला–उत्थान के लिए जीवनपर्यन्त कार्य किए। देश की स्वतंत्रता के साथ–साथ नारी वर्ग में भी चेतना का विकास हुआ। वह आज घर तक सीमित न होकर पुरुषों के समान कार्य–क्षेत्र में पदार्पण कर रही है।

भारतीय संविधान में भी यह घोषणा की गई है कि राज्य धर्म, जाति, सम्प्रदाय, लिंग आदि के आधार पर किसी भी नागरिक में विभेद नहीं करेगा। 'शारदा एक्ट' एवं 'उत्तराधिकार अधिनियम' द्वारा स्त्रियों की दशा सुधारने का प्रयास किया गया। आज उन्हें पुरुषों के समान आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की जा रही है। पिता की सम्पत्ति में पुत्रों की भाँति पुत्री के हिस्से को भी कानूनी व्यवस्था दी गई है।

स्त्रियाँ देश का भाग्य बदलने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। आज नारी नवचेतना एवं जागृति की भावना से ओतप्रोत है। वह अपने अधिकार एवं कर्तव्यों का पालन पूर्ण रूप से करने में समर्थ है।

आज वह समय आ गया है जिसकी हमें बहुत समय से प्रतीक्षा थी।

ngt çFkk o l/kkj % सामान्यतः दहेज का तात्पर्य उन सम्पत्तियों तथा वस्तुओं को समझा जाता है, जिन्हें विवाह के समय वधू–पक्ष की ओर से वर–पक्ष को दिया जाता है। अब इसका तात्पर्य उस सम्पत्ति अथवा मूल्यवान वस्तुओं से है, जिन्हें विवाह की एक शर्त के रूप में कन्या–पक्ष द्वारा वर–पक्ष को विवाह से पूर्व अथवा बाद में देना पड़ता है।

दहेज प्रथा समाज के लिए निश्चित ही एक अभिशाप है। कानून एवं समाज सुधारकों ने दहेज से मुक्ति के अनेक उपाय सुझाए हैं। इस दिशा में युवकों को स्वावलम्बी बनाया जाए। स्वावलम्बी होने पर युवक अपनी इच्छा से लड़की का चयन कर सकेगा। दहेज की माँग अधिकतर युवकों की ओर से न होकर उनके माता–पिता की ओर से होती है। स्वावलम्बी

युवकों पर माता–पिता का दबाव कम होने पर दहेज के लेन–देन में स्वतः कमी आएगी।

जब युवतियाँ भी शिक्षित होकर स्वावलम्बी बनेंगी तो वे अपना जीवन–निर्वाह करने में समर्थ हो सकेंगी। दहेज की अपेक्षा आजीवन उनके द्वारा कमाया गया धन कहीं अधिक होगा। इस प्रकार युवतियों की दृष्टि में विवाह एक विवशता के रूप में भी नहीं होगा, जिसका वर–पक्ष प्रायः अनुचित लाभ उठाता है।

प्रबुद्ध युवक–युवतियों को अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार दिया जाए। शिक्षा के प्रसार के साथ–साथ युवक–युवतियों में इस प्रकार का वैचारिक परिवर्तन संभव है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप विवाह से पूर्व एक–दूसरे के विचारों से अवगत होने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो सकेगा।

cjkstxkjh o nj dju d mik;% बेरोजगारी का अभिप्रायः उस स्थिति से है, जब कोई योग्य तथा काम करने के लिए इच्छुक व्यक्ति प्रचलित मजदूरी की दरों पर कार्य करने के लिए तैयार हो और उसे काम न मिलता हो। बालक, वृद्ध, रोगी, अक्षम एवं अपंग व्यक्तियों को बेरोजगारी की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। जो व्यक्ति काम करने के लिए इच्छुक नहीं हैं और परजीवी है, वे बेरोजगारी श्रेणी में नहीं आते।

जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि बेरोजगारी का मूल कारण है, अतः इस पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। जनता को परिवार नियोजन का महत्व समझाते हुए उसमें छोटे परिवार के प्रति चेतना जागृत करनी चाहिए। शिक्षा को व्यवसायप्रधान बनाकर शारीरिक श्रम को भी उचित महत्व दिया जाना चाहिए। कुटीर उद्योगों के विकास की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। कृषि के क्षेत्र में अधिकाधिक व्यक्तियों को रोजगार देने के लिए सहकारी खेती को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न होती हैं :

vkradokn% अपने लक्ष्य को प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य और अधिकार है लेकिन इसके लिए साधनों की पवित्रता परमावश्यक

है। हम हिंसा को किसी भी रूप में पवित्र साधन के तौर पर नहीं अपना सकते। आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है, जो राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शक्ति या अस्त्र–शस्त्र के प्रयोग में विश्वास रखती है। आतंकवाद मानव जाति के लिए कलंक है, इसलिए इसका कठोरता से दमन किया जाना चाहिए।

भारत सरकार ने आतंकवादी गतिविधियों को बड़ी गंभीरता से लिया है और इनकी समाप्ति के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। भारत की संसद ने 'आतंकवाद–विरोधी विधेयक' पारित कर दिया है जिसके अंतर्गत आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहने वाले व्यक्तियों को कठोर से कठोर दण्ड देने की व्यवस्था की गई है। आतंकवाद की समस्या का समाधान मानसिक स्तर पर किया जाना चाहिए। जिन लोगों को पीड़ा हुई अथवा जिनके परिवार अथवा सम्पत्ति को नुकसान हुआ है तथा जिनके संबंधियों और रिश्तेदारों की मृत्यु हुई है, उन्हें भरपूर मानसिक समर्थन दिया जाना चाहिए जिससे उनके घाव हरे न रहें और वे मानसिक पीड़ा के बोझ को सह न सकने की स्थिति में स्वयं भी आतंकवादी न बन जाएँ।

Ò"Vkpkj % जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामस्वरूप समाज की आर्थिक समस्याओं के अंतर्गत भ्रष्टाचार की समस्या सुरसा की तरह मुँह फाड़े खड़ी है और समाज रूपी हनुमान उसके जबड़ों के बीच फँसा हुआ है। सरकारी कार्यालयों में बिना रिश्वत लिए कोई काम नहीं होता। यद्यपि रिश्वत लेना और देना कानूनी अपराध है; फिर भी आज 'दस्तूर' के रूप में प्रचलित है। अपना उचित काम कराने हेतु भी आप रिश्वत देने के लिए विवश हैं और रिश्वत देकर आप अपना कोई अनुचित काम करा सकते हैं।

रिश्वत के कारण भ्रष्टाचार बढ़ता ही जा रहा है। अधिक लाभ कमाने के लालच में व्यापारी सामान को गोदामों में छिपाकर रख देते हैं और कृत्रिम अभाव पैदा करके उसे ऊँचे दामों पर बेचते हैं। इस काले धन का उपयोग पुनः सामाजिक भ्रष्टाचार को बढ़ाने के लिए किया जाता है। इस प्रकार इस रोग को इलाज कर पाना अत्यन्त कठिन हो गया है फिर भी कहीं तो कोई समाधान होगा ही। यह समाधान निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर ही संभव है। ✿

बेईमानी से पैदा किया हुआ धन केवल दस वर्ष ठहरता है। यदि वह सोलह वर्ष तक रुक गया तो फिर मूल सहित नष्ट हो जाता है, अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रत्येक क्षण ध्यान रखें कि हमारे कार्य, व्यवहार और व्यापार में ईमानदारी हो।

कार्य और व्यापार में हो ईमानदारी

◈ fn0;k flg 11वीं
लाल बहादुर शास्त्री
सी.सै. स्कूल, सैक्टर–3
रामाकृष्ण पुरम, दिल्ली

nश की वर्तमान स्थिति पर विज्ञान–भवन, दिल्ली में आयोजित चतुर्थ पुरस्कार सम्पूर्ण समारोह में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि ने श्री सुमित्रानंदन पंत को उनकी काव्यकृति 'चिदम्बरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ का एक लाख रुपये का पुरस्कार समर्पित करते हुए कहा था– "भारत आज विकट परिस्थितियों में से गुजर रहा है, अतः उसे कठिन प्रयास से प्राप्त स्वतंत्रता की रक्षा के लिए सदा जागरूक रहना है। वे प्राचीन मूल्य और पुराने संगठन, जिनसे अब तक समाज अविच्छिल था, अब टूटते जा रहे हैं और उनका स्थान लेने के लिए न तो कोई ठोस कार्यक्रम नजर आ रहा है, न कोई सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना, जो समयानुकूल हो, पनप रही है। परिणामस्वरूप सामाजिक विघटन के चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं। किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि राष्ट्रीय चेतना का आधार अणुव्रत है। वर्तमान परिस्थिति में जबकि चारों ओर साम्प्रदायिक, वैमनस्य की भावना और अनुशासनहीनता का बोलबाला है, यह आवश्यक है कि साहित्यिक कृतियों के प्रणेता राष्ट्रीय एकता के ध्येय को अपने समक्ष रखे और अनुशासन, समर्पण और सत्य की अनवरत खोज का वातावरण पैदा करें।"

देश वर्तमान स्थिति में आर्थिक, राजनैतिक एवं नैतिक पहलुओं में तो शैथिल्य है ही, असामाजिक तत्वों का बाहुल्य मानवीय पक्षों का ह्रास, अनियमित रहने की भावना, कर्तव्यविमुखता, पाश्चात्य शैलियों का अन्धानुसरण आदि कुछ ऐसे विषाक्त तत्व हैं जिनसे देश में भीतर ही भीतर मानों घुन लग गया हो, खोखला होता जा रहा है। यदि ऐसी ही स्थिति चलती रहती तो भारत का भविष्य क्या होगा, कहा नहीं जा सकता। लोग अधिकारों के लिए लड़ रहे हैं, मर रहे हैं पर हमारा कुछ कर्तव्य भी है, इसे कोई सोचता भी नहीं। अतः नीचे हम अणुव्रत कर्तव्यों पर दृष्टिपात करेंगे, जिनके अभाव में ऐसा प्रतीत होता है कि हम कुछ खो चुके हैं।

pfj= इस समय देश की सबसे बड़ी आवश्यकता जनता के चारित्रिक बल की है। हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक चरित्र का पतन हो जाने के कारण देश पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। इसलिए सबका एक पवित्र कर्तव्य है कि चरित्र की ओर ध्यान दें और सच्चरित्र बनें। किसी एक वस्तु का नाम चरित्र नहीं है, चरित्र में बहुत से गुणों का समन्वय होता है। बहुत से गुण मिलकर चरित्र के सुन्दर भवन का निर्माण करते हैं। सच्चरित्र बनने के लिए हमारा यह आवश्यक कर्तव्य है कि हम किसी को धोखा न दें। किसी को धोखा देना प्रवंचना कहलाता है। आज एक ऐसी हवा चल रही है कि प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे को धोखा देने में अपनी कार्यकुशलता अथवा बुद्धि की सफलता समझता है।

हमारा अणु कर्तव्य है कि हम समाज में एक–दूसरे के साथ ईमानदारी का व्यवहार करें। हर काम में, हर चीज में और हर क्षेत्र में आपको मिलावट और बनावट मिलेगी। समाज को पथभ्रष्ट करने वाले लोगों ने यह धारणा बना रखी है कि बेईमानी धीरे–धीरे रक्त में अब ऐसी मिल गई है कि हमारा ध्यान भी नहीं जाता कि ऐसा करने में हम कोई बुरा काम कर रहे हैं।

"अन्ययायोपाजितं द्रग्यं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे समूलं तु विनश्यति।।"

अर्थात् बेईमानी से पैदा किया हुआ धन केवल दस वर्ष ठहरता है। यदि वह सोलह वर्ष तक रुक गया तो फिर मूल सहित नष्ट हो जाता है, अतः यह हमारा कर्तव्य है कि हम प्रत्येक क्षण ध्यान रखें कि हमारे कार्य, व्यवहार और व्यापार में ईमानदारी हो। समाज में चारों ओर अविश्वास, भ्रम और संदेह का वातावरण छाया हुआ है। कोई किसी की बात पर आसानी से विश्वास तक नहीं करता। वह जानता है कि वह सरासर झूठ बोल रहा है परंतु दोनों एक–दूसरे की सुनकर सिर हिला रहे हैं और हाँ मैं हाँ मिला रहे हैं।

ukxfjd lH;rk% अंग्रेजी में जिसे 'सिविक सैंस' कहा जाता है, हमसे कोसों दूर चली गयी है। हम समझते नहीं कि सिविक सैंस क्या होता है और हमें कैसा आचरण करना चाहिए। समझें तो तब, जब कोई समझाने वाला हो। स्वतंत्र देश में जिस वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता है, उस पर कोई ध्यान नहीं देता। दुकान झाड़ने में तल्लीन लाला जी ऊपर से पानी डालने वाला पानी डाल ही देगा। लाला जी को इस बात की कोई चिन्ता नहीं है कि सड़क पर चलने वाले नहाये–धोये लोगों पर धूल जाएगी। जो कोई आप दूसरों को नहीं देंगे वह आपको दूसरों से नहीं मिलेगी। फिर अकेला चना भाड़ में कब तक भुनता रहेगा। आगे बढ़ने के लिए और उठने के लिए परस्परावलम्बन चाहिए। सहानुभूति मानव की सबसे बड़ी विभूति है। अतः यह मानवमात्र का कर्तव्य है कि वह समाज में सहयोग और सहानुभूति का व्यवहार करे। श्री गुप्त जी ने इसे स्वीकार किया हैः

"सहानुभूति चाहिये, महा विभूति है यही।
परस्परावलम्बन से उठो सभी बढ़ो सभी।"

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अणुव्रत आंदोलन में वे सब तत्व हैं जिनसे मनुष्य अच्छा व सच्चा मनुष्य बन सकता है। अतः अच्छाई होगी, वहां सच्चाई होगी और जहाँ सच्चाई होगी वहां समस्याएं या तो उत्पन्न नहीं होंगी, यदि होंगी तो वे अधिक देर तक अनसुलझी नहीं रह पाएंगी। ✿

स्वयं में छिपा है समस्याओं का समाधान

> *आज हमारे देश में अश्लील फिल्में, वीडियो सिनेमाधरों में बरसाती मेंढ़कों की भांति उपज रही हैं। लाखों रुपये फूँककर आज जिन फिल्मों का निर्माण हो रहा है, वे अपराध-वृद्धि में ही सहायक होती हैं। बालकों से लेकर प्रौढ़ों और वृद्धों तक सभी के मस्तिष्क को उन्होंने विकृत बना दिया है। फिल्मों का यह जहर क्रमशः भावी पीढ़ी को खोखला बनाता जा रहा है।*

◈ **fj;k uk.kpk** 11वीं
शारदा विद्या मंदिर
हाई सैकेंडरी स्कूल
पेटलावद, झाबुआ, मध्यप्रदेश

thवन को बुराई के गड्ढे में डाल देने वाले कुविचार आसानी से हमारे मन में आ जाते हैं पर ऊँचे बढ़ाने वाले, उन्नति की ओर ले जाने वाले मार्ग पर चलने में काफी प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ता है। बाधाओं से काफी संघर्ष लेना पड़ता है। तब कहीं जाकर सफलता मिलती है। जिसे कठोर परिश्रम का अभ्यास कहते हैं, वह ही अपने उन्नतिशील विचारों के अनुसार आचरण करता है।

मनुष्य को जीवन में स्वार्थ कभी नहीं करना चाहिए। सुंदर दिखने के लिए आजकल कॉस्मेटिक्स का खूब प्रचलन हो रहा है। सुंदर दिखने के लिए प्रयुक्त इन कॉस्मेटिक्स का बड़ा हानिकारक प्रभाव भी होता है। जीवन को नशा, वासना एवं आधुनिक खुली संस्कृति में नहीं गंवाना चाहिए। अगर स्वयं को और इस राष्ट्र को फिर से ऊँचा उठाना है तो हमें बुरी आदतों से दूर जाना चाहिए। माँसाहार, शराब, धूमपान ये सभी रोगों तथा दुःख की जड़ हैं। मंहगाई, भ्रष्ट्राचार, बेरोजगारी आदि को दूर करना चाहिए।

i;koj.k e vlrqyu% निरंतर विलुप्त होते वन्य जीवन एवं पक्षियों के कारण पर्यावरण में गंभीर असंतुलन पैदा हो गया है। धरती के पर्यावरण की समृद्धि एवं संतुलन पेड़–पौधों एवं जीव–जन्तुओं पर आधारित है। इनमें से यदि कोई जंतु कम होने लगे तो दूसरे पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। आज पशु–पक्षियों की बहुसंख्य प्रजातियां अपनी विलुप्ति के कगार पर हैं। निरंतर घटती संख्या अत्यंत चिंताजनक है। पर्यावरण के संरक्षण एवं विकास के लिए इनका अस्तित्व होना आवश्यक है।

जीव–जंतु हमारी संस्कृति एवं पर्यावरण है। इनका संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है और हमें उसका पालन अवश्य करना चाहिए। हमें वृक्षों को काटना नहीं बल्कि अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए। रेल लाईनों, सड़कों के किनारे वृक्ष लगाने चाहिए। वृक्षों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगानी चाहिए। यदि हम वृक्ष लगा नहीं सकते तो हमें वृक्षों को काटना भी नहीं चाहिए। वृक्ष हमारे जीवनदाता हैं। हमारे देश में वृक्षों की पूजा की जाती है। वृक्ष से हमें जीवनदायिनी गैस प्राप्त होती है। अतः हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने चाहिए।

u'k dk Òh"k.k rQku% युवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग ऐसा है जिसकी सोच, संस्कृति, जीवनशैली एवं मनोरंजन के सारे साधन बदल गए हैं। युवाओं के जीवन में भटकाव के तमाम दरवाजे खुल गए हैं। फैशन परस्ती और ड्रग्स उनके जीवन का आधार बन गए हैं। आज के युवक–युवतियों को किसी से कोई मतलब नहीं है। केवल अपना मनोरंजन करना तथा मनमानी करना इनकी आदत बन गई है। इन्हें न तो अपने परिवार से कोई लेना–देना है, न तो समाज से, न राष्ट्र से।

सकारात्मक सोच से बहुत दूर ये युवा वर्तमान युग की कई खोखली चीजों से प्रभावित हैं। आज के युवाओं को प्रभावित करने वाली चीजों में मुख्य हैं–इंटरनेट, अश्लील फिल्में, पब संस्कृति, ड्रग्स, फैशन, मंहगे मोबाइल जिनसे एस.एम.एस. एवं एम.एम.एस. करना। महंगी गाड़ियां एवं इन सबके लिए मोटी रकम।

ये चीजें ऐसी हैं जो युवाओं में रचनात्मक एवं सृजनात्मक सोच के बजाय

घातक सोच को अंजाम दे रही हैं। हमारे युवा इस घातक सोच को ही आधुनिक युग की प्रतिष्ठा एवं सम्मान का स्वरूप देने में जुट गए हैं। अश्लीलता की आग में युवाओं को ड्रग्स एवं नशा खूब जला रहे हैं। अपनी पहचान बनाने के लिए 16 साल के उम्र से पूर्व ही नशाखोरी शुरू हो जाती है। हमारे देश की धड़कन कहे जाने वाले, राष्ट्र को अपने मजबूत कंधों पर ले जाने वाले युवाओं ने अश्लीलता की हदें पार कर ली हैं। यौवन ऊर्जा का आगार है, इस ऊर्जा को नशा–वासना एवं आधुनिक खुली संस्कृति में नहीं गंवाना चाहिए।

v'yhy fQYe o ohfM;k% सिनेमा प्रचार का एक मुख्य साधन है, उससे जनजीवन की रुचियों को किसी भी दिशा में मोड़ा जा सकता है। चलचित्रों के इशारों पर उनके अनुकरण पर बालक, युवा और वृद्ध कुछ भी कर गुजरते हैं। खेद का विषय है कि जिस चलचित्र के क्षेत्र को माध्यम बनाकर हम सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक आदि अनेकानेक क्षेत्रों में नूतन क्रांति ला सकते हैं, उसी फिल्म का कुछ गिने–चुने लोग पैसे के चंद टुकड़ों के लालच में आकर दुरुपयोग कर रहे हैं तथा देश को, उसके नौनिहालों को अवनति के गर्त में धकेल रहे हैं।

आज हमारे देश में अश्लील फिल्में, वीडियो व सिनेमाघरों में बरसाती मेढ़कों की भांति उपज रही है। लाखों रुपये फूँककर आज जिन फिल्मों का निर्माण हो रहा है, वे अपराध–वृद्धि में ही सहायक होती हैं। बालकों से लेकर प्रौढ़ों और वृद्धों तक सभी के मस्तिष्क को उन्होंने विकृत बना दिया है। फिल्मों का यह जहर क्रमशः भावी पीढ़ी को खोखला बनाता जा रहा है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि कामोत्तेजक, अश्लील एवं उद्देश्यहीन फिल्मों का बहिष्कार किया जाए। माता–पिता यदि बालकों का हित चाहते हैं तो उन्हें न तो बचपन से ही सिनेमा दिखाने की बुरी आदत डालें और न ही फिल्मी गानों को सिखा–सिखाकर व्यर्थ पतन के गर्त में न झोंके। हमें सामूहिक रूप में ऐसे चलचित्रों का बहिष्कार करना होगा जो समाज में अनैतिकता फैलाते हैं। यदि फिल्मों के इस बढ़ते

कुप्रभाव को रोका न गया तो देश की संस्कृति और प्रगति एक दिन खतरे में पड़ जाएगी।

f’k{kk cuke lLdkj% शिक्षा की सार्थकता तभी है जब वह शिक्षार्थी को मानवीय गरिमा के अनुरूप सत्प्रवृत्तियों से अभ्यस्त करा सके। जिन्हें ऐसी सद्शिक्षा नहीं मिल पाती वे गंवार स्तर के पिछड़े हुए रह जाते हैं। यदि आजीविका ही शिक्षा का उद्देश्य रहा होता तो जिनके घर में साधन है या पैतृक व्यवसाय है वे अपने बच्चों को पढ़ने का श्रम करने के लिए क्यों बाध्य करते और क्यों उनका समय तथा अपना धन गंवाते? जितना पैसा उच्च शिक्षा में खर्च होता है, जितना समय बच्चों का लगता है, उसका हिसाब जोड़ने पर प्रतीत होता है कि इस संदर्भ में जो खर्च हुआ, उसे किसी बैंक में जमा कर दिया जाता तो प्यार से घर बैठे उतना मिल सकता था जितना कि आमतौर से वेतनभोगी को मिलता है।

इसे दुर्भाग्य कहना चाहिए कि आज शिक्षा और नौकरी पर्यायवाची बन गए हैं। जितने बच्चे बढ़कर निकलते हैं, उनकी तुलना में सबको नौकरी मिलना कठिन है। वस्तुतः शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए की पढ़ाई पूरी होने के बाद विद्यार्थी सब ओर अपने लिए द्वार खुले देखे।

cnljr Xyej dh nfu;k% आज की दुनिया ग्लैमर की दुनिया है, यह एक जादुई नशे के समान होती है जिसको सभी पाना चाहते हैं। नौजवान युवक–युवतियों के लिए तो यह अनबोला स्वर्ग है। इसमें ये अपना सपना बुनते हैं। ब्रांड बनाकर पत्र–पत्रिकाओं के मुखपृष्ठ पर अपनी छवि निहारना चाहते हैं। इन मॉडलों एवं सितारों को अगला दौर अंधेरे में डूबा रहता है। बुढ़ापे में सबको अपने हँसते–खेलते परिवार की याद आती है परंतु मिलती है उन्हें बस बेबसी और तन्हाई जिसकी घुटन को सहन न कर पाने के कारण वे खुद को ही खत्म कर लेते हैं।

tudY;k.k dh ryk’k% आजकल हम देखते हैं कि अध्यात्म से लेकर हर चीज का पूरा सफाया हो गया है। इस जमाने में आदमी न ही अध्यात्म में है, न ही संसार में है। त्याग के नाम पर, बलिदान के नाम पर, लोकसेवा के नाम पर, देश के नाम पर, धर्म के नाम पर समाज के

नाम पर कोई आगे नहीं आता है। अपने लिए और अपनों की स्वार्थपूर्ति के लिए हर कोई लालायित रहता है और उसी उधेड़बुन में दिन–रात लगा रहता है।

हवा के तरीके से खुशबू पहुँचाने के लिए कौन तैयार होता है, चंद्रमा के तरीके से चांदनी बिखेरने के लिए कौन तैयार होता है, कोई नहीं तैयार होता है। आज के जमाने में आदमी से यह आशा नहीं कर सकते कि वह श्रेष्ठ कार्यों के लिए आगे आएगा। हमें स्वार्थ को छोड़कर जनकल्याण के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए तभी युग की इन समस्याओं से पार पाया जा सकता है। ✿

भारत में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। कुछ विचारकों का मानना है कि यदि व्यक्तिगत संपत्ति नष्ट कर दी जाए तो आर्थिक विषमता की गहरी खाई पाटी जा सकती है। असल में हमें धन के बजाय श्रम का सहारा लेना चाहिए। समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि भ्रटाचारी को कभी सम्मानित न किया जाए।

व्यक्तिगत संपत्ति भी एक अड़चन

◈ f'kokuh oek' 8वीं बी
माऊंट आबू पब्लिक स्कूल
सैक्टर–5, रोहिणी, दिल्ली

vkज की इस आगे बढ़ती दुनिया में जितनी सुविधाएं बढ़ रही हैं, उतनी ही युगीन समस्याएं भी बढ़ रही हैं। दोनों की तेज़ी को रोका नहीं जा सकता पर युगीन समस्याओं को सुधारा जा सकता है। युगीन समस्या का अर्थ है वह समस्या जो हमें नुकसान पहुँचा सकती है। अनेक तरह की युगीन समस्याएं होती हैं और उनके समाधान भी होते हैं। समाधान का सबको पता तो है लेकिन कोई उसको अमल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ता।

पहले हम बढ़ती जनसंख्या, जो एक युगीन समस्या है, उसके बारे में बताएँगे। जनसंख्या की दृष्टि से भारत चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है। स्वतंत्र भारत को जिन समस्याओं से जूझना पड़ा है, उनमें जनसंख्या–वृद्धि की समस्या एक प्रमुख समस्या है। शेष अन्य समस्याएँ इसी समस्या से संबन्धित हैं। भारत में विश्व की कुल जनसंख्या का सातवां भाग रहता है। विश्व का हर सातवां व्यक्ति भारतीय है। सन् 1951 के बाद भारत की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है। जन्म–दर में वृद्धि, मृत्यु दर में कमी तो मूल कारण है। निर्धनता, अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, पुत्र

को वंश संचालक मानना, मुक्तिदाता मानना आदि भी जनसंख्या वृद्धि के कारण हैं।

भारत में जनसंख्या की समस्या का समाधान तीव्र गति से आर्थिक विकास, शिक्षा के प्रचार–प्रसार, अधिक आयु में विवाह तथा परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा देकर किया जा सकता है। ग्रामीण छोटे परिवार के महत्व को समझाना आवश्यक है। नसबंदी, गर्भ–निरोधक उपायों की अधिक व्यवस्था की जाए। परिवार नियोजन कार्यक्रम की सफलता जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

आज जिंदगी के हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार अब कई तरह से फैल चुका है। सुरा, सुन्दरी व धन तीन भ्रष्टाचार के अमोघ शस्त्र हैं। इनका इस्तेमाल कर किसी भी सदाचारी को भ्रष्टाचारी बनाया जा सकता है। रिश्वत, जमाखोरी, काला धन एकत्र करना, कर्तव्य का पालन न करना वगैरह भी भ्रष्टाचार के तहत आते हैं। भ्रष्टाचार की मुख्य रूप से दो शक्लें हैं। भ्रष्टाचार करने वाला व भ्रष्टाचार का शिकार। यह इसमें सहायक की भूमिका निभाता है। कुछ लोगों का मानना है कि समस्या ऊपर से नीचे की ओर चलती है।

भारत में भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अनेक कदम उठाए गए हैं। कुछ विचारकों का मानना है कि यदि व्यक्तिगत संपत्ति नष्ट कर दी जाए तो आर्थिक विषमता की गहरी खाई पाटी जा सकती है। असल में हमें धन के बजाय श्रम का सहारा लेना चाहिए। समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि भ्रटाचारी को कभी सम्मानित न किया जाए।

कन्या के विवाहोवसर पर माता–पिता और संबंधियों द्वारा दिए जाने वाले धन व उपहार को दहेज के नाम से जाना जाता है। अपने मूल रूप से यह एक सात्विक और सार्थक प्रथा है। प्राचीन काल से ही भारत में इसका प्रचलन था लेकिन दहेज–लोलुप एक बार दहेज लेकर पीछा नहीं छोड़ता। कई युवतियाँ प्रतिदिन की तू–तू, मैं–मैं से परेशान होकर आत्महत्या कर लेती हैं। इस प्रकार दहेज प्रथा नारी के जीवन को अभिशाप युक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

दहेज के इस कलंक से समाज को मुक्ति दिलाने के लंबे समय से प्रयास चल रहे हैं। अनेक समाज सुधारकों ने गंभीर प्रयास किए हैं। सरकार ने दहेज उन्मूलन के लिए कानूनी प्रावधान किए हैं, लेकिन यह प्रथा निरंतर बढ़ती जा रही है। इस कलंक को मिटाने के लिए देश के नवयुवकों को आगे आना होगा, उन्हें दहेज रहित विवाह को प्रश्रय देना होगा। समाज को इस कलंक से मुक्ति तभी मिल पायेगी, जब समाज की दूषित मनोवृत्ति में बदलाव आएगा और यह बदलाव अणुव्रत सिद्धांतों में कहीं छिपा है। अणुव्रत के अनेक सिद्धांत को अपनाकर उपरोक्त समस्याओं से कुछ तो निजात मिल ही सकती है। ✿

मन का लालच देता है आफत

◈ ekuh jfoUæ dkyc 9वीं
स्वामी विवेकानंद विद्या मंदिर
रामचंद्रनगर, महाराष्ट्र

आज हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या इतनी बढ़ गयी है कि पढ़-लिख कर भी नौकरी मिलने की आशा नहीं होती। अगर सौ लोगों को डिग्री मिलती है तो उसमें से सिर्फ दस लोगों को नौकरी मिलती है। इसलिए हमारी नवयुवक पीढ़ी इससे भटक रही है और गलत रास्तों को अपनाकर अपनी जिंदगी अस्त-व्यस्त कर रही है।

bस कलयुग में समस्याओं की कमी नहीं है। उनका समाधान वैसे तो है लेकिन उस पर अमल करने वाले लोगों की कमी है। सबसे बड़ी समस्याएं हैं पर्यावरण, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, निरक्षरता, तकनीकी समस्या, महंगाई प्रदूषण की समस्या में ग्लोबल वॉर्मिंग बढ़ गई है। ओजोन वायु में छिद्र पड़ गए हैं। कारखानों के कारण गर्म जहरीली वायु के उत्सर्जन से धरती का तापमान बढ़ गया है जिसके कारण उत्तरी ध्रुवों पर बर्फ पिघलने लगी है। अगर यह इसी तरह बढ़ता रहा तो जलसमाधि हो जाएगी।

इस समस्या का समाधान पाने के लिए कारखानों में से निकले हुए केमिकल पानी का बंदोबस्त करना जरूरी है। जगह–जगह पर पेड़ लगाने चाहिए। पेड़ की कटौती बंद होनी चाहिए। भ्रष्टाचार आज इतना बढ़ गया है कि गरीब आदमी और गरीब होता जा रहा है और अमीर आदमी और भी अमीर होता जा रहा है। बच्चों के पैदा होने के बाद जन्म दाखिला लेने से व मर जाने के बाद मृत्यु दाखिला लेने तक अफसरों को रिश्वत देनी पड़ती है। इसका समाधान यह है कि रिश्वत देना ही बंद कर देना चाहिए। क्योंकि हम देते हैं इसलिए वह लेते हैं।

अफसरों व हर एक नागरिक नैतिक जिम्मेदारी से काम करे तो भ्रष्टाचार का नामोनिशान मिट जाएगा। इसलिए सरकार को ऐसे कुछ कड़े नियमों की शुरूआत करनी चाहिए और उस पर अमल भी करना चाहिए।

आज हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या इतनी बढ़ गयी है कि पढ़–लिख कर भी नौकरी मिलने की आशा नहीं होती। अगर सौ लोगों को डिग्री मिलती है तो उसमें से सिर्फ दस लोगों को नौकरी मिलती है। इसलिए हमारी नवयुवक पीढ़ी इससे भटक रही है और गलत रास्तों को अपनाकर अपनी जिंदगी अस्त–व्यस्त कर रही है।

इस समस्या का समाधान यह है कि सिर्फ नए कॉलेज खोलकर काम नहीं चलेगा। प्रशासन को रोजगार की नई–नई तरकीबें ढूँढने, उनको वास्तव में लाकर रोजगार दिलाना चाहिए। प्रशासन कई खाली पद होकर भी भरता नहीं है। इस तरफ प्रशासन को कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए।

निरक्षरता भी एक समस्या है। कोई भी डिग्री लेनी हो तो अमीर आदमी पैसे भरकर प्रवेश पा लेता लेकिन जो सच में होशियार है, जिसकी कबलियत है, उसके पास पैसा न होने की वजह से वह पदवी से वंचित रह जाता है। प्रशासन ने ऐसे कदम उठाने चाहिए कि जो सच में होशियार बच्चा है, उसको प्रवेश सहजता से मिलना चाहिए।

अब बात करें महंगाई की। महंगाई के बारे में क्या कहें? आज के युग में सब लोगों की आमदनी तो बढ़ गई है लेकिन महंगाई उससे दोगुनी हो गई है। आदमी जितना कमाता है, उतना उसके घर खर्च में सब चुकता हो जाता है। इस पर उपाय सोचा जाए तो वह ढूँढना बहुत कठिन है। सच तो यही है कि हम सब पेड़ काटते हैं, इसलिए वर्षा भी कम होती है और वर्षा के कम होने से खेती में उत्पादन ठीक से नहीं आता और महंगाई बढ़ती है। इस तरह युग की समस्याएं खत्म तो हो सकती हैं पर मनुष्य का लालची मन चाहे तो ना। ✿

जनसंख्या रोकना राष्ट्रीय धर्म

◈ d- dLrjh 10वीं सी
माऊंट आबू पब्लिक स्कूल
सैक्टर–5, रोहिणी, दिल्ली

वर्तमान की अनेक समस्याओं में से एक महत्वपूर्ण समस्या है महंगाई। जब से देश स्वतंत्र हुआ है, तब से वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। रोजमर्रा की चीजों में 50 से 150 गुना तक की कीमत-वृद्धि हो चुकी है। बाजार में महंगाई तभी बढ़ती है जबकि माँग अधिक हो, किंतु वस्तुओं की कमी हो जाए। अतः जब माँग बढ़ी तो महँगाई भी बढ़ी।

;गीन समस्याओं की यदि हम चर्चा करें तो कुछ समस्याएं ऐसी हैं जिनका निवारण प्राथमिकता के आधार पर होना चाहिए। सर्वप्रथम प्रदूषण की बात करते हैं। प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है–वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि–प्रदूषण। प्रदूषण का जन्म अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति के कारण हुआ है। जब से मनुष्य की इस अंधाधुंध प्रगति हुई है हमारा समूचा परिवेश जीवन–घातक तत्वों से भर गया है। महानगरों में स्वच्छ वायु में सांस लेने को तरस गया है आदमी। वायु–प्रदूषण के कारण आँखों में जलन, त्वचा में एलर्जी, साँस में कष्ट, प्लेग, डेंगू आदि कितनी ही प्राणघातक बीमारियाँ जन्म ले रही हैं।

अविवेकपूर्ण औद्योगिकीकरण और परमाणु प्रयोगों के कारण विश्व भर का मौसम चक्र बिगड़ गया है। धरती पर गर्मी बढ़ रही है। वैज्ञानिकों को चेतावनी है कि यदि इसी प्रकार ऊर्जा का प्रवाह होता रहा तो हिमखंड पिघलेंगे, बाढ़ें आएँगी, समुद्र–जल में वृद्धि होगी।

जल–प्रदूषण आज की एक विकट समस्या है। कारखानों का दूषित जल, बचे हुए रसायन, कचरा सभी कुछ नालों के रास्ते नदियों में बहा दिया

जाता है। इसके अलावा नदी–तालाबों में लोगों का नहाना, कपड़े धोना, मल–मूत्र डालना, शवों की राख डालना, जानवरों की गंदगी डालना ऐसे अवगुण हैं जिनके कारण जल प्रदूषित हो जाता है और इससे तरह–तरह के रोग; जैसे–पीलिया, हैजा, पेचिश, मलेरिया, डेंगू आदि फैलते हैं।

आज भारत के सामने चिंतनीय समस्या है बेकारी। लोगों के पास हाथ है, पर काम नहीं है; प्रशिक्षण है, पर नौकरी नहीं है। प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के बेरोज़गारों की फौज़ जमा है। शहरों में हजारों बेकार मज़दूरों के झुंड़ नज़र आ जाते हैं। बेकारी का सबसे बड़ा कारण है बढ़ती हुई जनसंख्या। दूसरा कारण है, भारत में विकास के साधनों का अभाव होना। देश के कर्णधारों की गलत योजनाएं भी बेकारी को बढ़ा रही हैं। बैंक, सार्वजनिक उद्योग नई नौकरियाँ पैदा करने की बजाय अपने पुराने स्टाफ को ही जबरदस्ती निकालने में जुटे हुए है। सार्वजनिक उद्योग नई नौकरियाँ आगे नहीं बढ़ा रहे। यह कदम देश के लिए घातक सिद्ध होगा।

भारत के सामाजिक जीवन में आज भ्रष्टाचार का बोलबाला है। यहाँ का रिवाज़ है रिश्वत लो और पकड़े जाने पर रिश्वत देकर छूट जाओ। भ्रष्टाचार का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर बहता है। सरकारी कार्यालयों में बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता। अब तो प्रीमियम, डोनेशन, सुविधा–शुल्क या नए–नए नामों से भ्रष्टाचार को व्यवस्था का अंग बना दिया गया है। कहने का अर्थ है कि सरकार तक ने इसे स्वीकार कर लिया है। इसलिए व्यापारियों और व्यवसायियों का भी यही ध्येय बन गया है कि ग्राहक को जितना मर्जी लूटो। कर्मचारी ने भी सोच लिया है खूब रिश्वत लो और काम से बचो। भ्रष्टाचार मनुष्यों की बदनीयती के कारण बढ़ा।

वर्तमान की अनेक समस्याओं में से एक महत्वपूर्ण समस्या है महंगाईं जब से देश स्वतंत्र हुआ है, तब से वस्तुओं की कीमतें लगातार बढ़ती जा रही हैं। रोजमर्रा की चीजों में 50 से 150 गुना तक की कीमत–वृद्धि हो चुकी है। बाजार में महंगाई तभी बढ़ती है जबकि माँग अधिक हो, किंतु वस्तुओं की कमी हो जाए। अतः जब माँग बढ़ी तो महँगाई भी बढ़ी।

दूसरे, पहले भारत में गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले लोग अधिक थे परंतु अब ऐसे लोगों की संख्या कम है। बहुत–सी चीजों पर हम विदेशों पर निर्भर ही गए हैं। हमारे देश की एक बड़ी धनराशि पैट्रोल पर व्यय होती है। इसके लिए भारत कुछ नहीं कर पाया। अतः रोज–रोज पैट्रोल का भाव बढ़ता जा रहा है। परिणामस्वरूप हर चीज महँगी होती जा रही है।

महँगाई बढ़ने के कुछ बनावटी कारण भी होते हैं जैसे कालाबाजारी। बड़े–बड़े व्यापारी और पूँजीपति धन–बल पर आवश्यक वस्तुओं का भंडारण कर लेते हैं। इससे बाज़ार में अचानक वस्तुओं की आपूर्ति कम हो जाती है। महँगाई बढ़ने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम गरीबों और निम्न मध्यवर्ग को होता है। इससे उनका आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। या तो उन्हें पेट काटना पड़ता है, या बच्चों की पढ़ाई–लिखाई जैसी आवश्यक सुविधा छीन लेनी पड़ती है। जनसंख्या–विस्फोट भी भीषण समस्या है। जिस तेजी से भारत समस्याओं की बाढ़ में घिरता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं, जब भारत अपने ही बोझ से दब जाएगा। जनसंख्या की समस्या का समाधान कानून द्वारा नहीं, बल्कि जन–जागरण तथा शिक्षा द्वारा ही संभव है। राष्ट्रहित में प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि इस समस्या के प्रति सावधान हो तथा परिवार नियोजन को अपनाए।

lek/kku

- प्रदूषण : प्रदूषण से मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है इस समस्या के प्रति सचेत होना। अन्य उपाय हैं–आसपास पेड़ लगाना, हरियाली को अधिकाधिक स्थान देना। अनावश्यक शोर को कम करना। विलास की वस्तुओं की बजाय सादगीपूर्ण ढंग से जीवनयापन करना।
- बेरोजगारी : प्रत्येक समस्या का समाधान उसके कारणों में छिपा रहता है, अतः यदि ऊपर कथित कारणों पर प्रभावी रोक लगाई जाए तो बेरोजगारी की समस्या का काफी सीमा तक समाधान हो सकता है। व्यावसायिक शिक्षा लघु उद्योगों का प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, कम्प्यूटरीकरण पर नियंत्रण, रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू जाना चाहिए।

- भ्रष्टाचार : प्रश्न यह है कि ऐसा कब हो पाएगा? यह समय पर निर्भर है। जब भी कोई दृढ़ चरित्रवान युवा नेतृत्व आए या आरपार की भावना से समाज को प्रेरणा देगा, तभी यह मैली गंगा शुद्ध हो सकेगी।
- महँगाई : दैनिक उपयोग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रोकने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए। इसके लिए सरकार को लगातार मूल्य नियंत्रण करते रहना चाहिए। कालाबाजारी को भी रोका जा सकता है। इस दिशा में जनता का भी कर्तव्य है कि वह संयम से काम ले।
- आतंकवाद : आतंकवाद का सफाया करने के लिए जी–जान लगाने की हिम्मत चाहिए। हिम्मत ही नहीं, उसे कुचलने के लिए पूरी सावधानी, कुशलता और तत्परता भी चाहिए।
- जनसंख्या : जनसंख्या–वृद्धि रोकने के लिए आवश्यक है कि हर नागरिक अपने परिवार को सीमित करे। एक से अधिक संतान को जन्म न दे। लड़के–लड़की को एक मानने से भी जनसंख्या पर नियंत्रण हो सकता है। परिवार–नियोजन के साधनों के उचित उपयोग से परिवार को मनचाहे समय तक रोका जा सकता है। आज जनसंख्या रोकना राष्ट्रीय धर्म है। इसके लिए कुछ भी करना पड़े, वह करना चाहिए। ✿

बाल विवाह है कानूनी अपराध

◈ **fj;k jkBkj** 7वीं
इटमा विद्या निकेतन, एम.बी. रोड
इंदौर, मध्यप्रदेश

बाल-विवाह वैसे तो एक कानूनी अपराध है परंतु आज भी बहुत से गाँवों में यह अपराध लोग करते हैं। बच्चों का कम वर्ष की आयु में ही विवाह कर दिया जाता है। यह उनके पूर्ण जीवन को वहीं पर समाप्त कर देता है। उन बच्चों की शिक्षा भी वहीं समाप्त कर दी जाती है।

Òारत एक प्रगतिशील देश है। क्या कभी किसी ने सोचा है कि हमारे देश में देश की प्रगति के साथ–साथ उतने ही स्तर पर समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। समस्याओं पर यदि गौर किया जाये तो हमें कई समस्याएं युगीन भी होंगी। हमें देश की प्रगति के अनुसार इन युगीन समस्याओं का समाधान भी करना होगा तभी हमारा देश सभी देशों से अधिक समृद्ध बन सकेगा। कुछ समस्याओं को विवरणपूर्वक नीचे दिया जा रहा हैः

cky fookg % बाल–विवाह वैसे तो एक कानूनी अपराध है परंतु आज भी बहुत से गाँवों में यह अपराध लोग करते हैं। बच्चों का कम वर्ष की आयु में ही विवाह कर दिया जाता है। यह उनके पूर्ण जीवन को वहीं पर समाप्त कर देता है। उन बच्चों की शिक्षा भी वहीं समाप्त कर दी जाती है। उनका भविष्य फिर कुछ लायक नहीं बन पाता है। उन्हें अपनी बाल आयु में तो कुछ एहसास नहीं होता, किंतु उनकी बढ़ती आयु के साथ उन्हें एहसास होने लगता है। बाल आयु में बालिकाएँ गर्भवती हो जाती हैं, यह उनके लिए बहुत मुश्किल होता है। इस बाल आयु में वे इतनी बड़ी मुसीबत का सामना करती हैं।

lek/kku % गाँव में इन कानूनी नियमों को तोड़ा जाता है। लोग अपनी सोच को बदलना ही नहीं चाहते हैं। बाल विवाह से बच्चों के जीवन की बर्बादी के लिए जिम्मेदार उनके माता–पिता हैं, इस समस्या के समाधान हेतु कानून को सख्त कड़े कदम उठाने चाहिए। शहरों में तो बाल विवाह नहीं होता है परंतु गाँव के लोग बाल विवाह कर यह अपराध करते हैं। इस समस्या हेतु हमें सभी गाँव में घरों में जाकर बाल विवाह से क्या नष्ट हो जाता है, उनके बच्चों के ऊपर क्या असर पड़ता है, इन सब के बारे में उन्हें बताना चाहिए। उन लोगों को कड़ी से कड़ी सजा दिलानी चाहिए।

ngt çFkk % दहेज प्रथा प्राचीन समय से है परंतु प्राचीन समय में दहेज में सिर्फ गृहस्थी बसाने के लिए कुछ बरतन दिए जाते थे परंतु धीरे–धीरे आधुनिक युग में दहेज में स्कूटर, टी. वी., मोबाईल, फ्रीज और अधिक मात्रा में दौलत देनी ही पड़ती है। इस समस्या में सारा भार कन्या के परिवार पर ही होता है। आजकल अगर अधिक दहेज दे सकने की किसी की हैसियत न हो तो कन्या का विवाह होना मुश्किल है। पहले तो कन्यादान थोड़ी सी दक्षिणा देकर ही किया जाया करता था किंतु आज पंड़ितों को भी बहुत सी दक्षिणा देनी पड़ती है।

lek/kku % इस दहेज प्रथा का न तो हम विरोध कर सकते हैं और न तो कानून इसे रोक सकता है। यदि हम इसका विरोध करेंगे तो लोग हमारी एक नहीं सुनेंगे। इस प्रथा के समाधान के लिए लोगों को अपनी सोच बदलनी होगी। इस प्रथा का तभी निवारण हो सकता है, जब दहेज लेने वाला दहेज को अस्वीकार कर दे। इसी से हमारे देश की इस समस्या का हल होगा।

Òw.k gR;k % भ्रूण हत्या अर्थात् कन्याओं की हत्या। यह प्रथा भूतकाल में तो थी ही, वर्तमान में भी है। कहीं–कहीं पर पुराने समय में लड़के और लड़की में बहुत भेदभाव होता था। लड़के शिक्षा के लिए पाठशाला जाते थे और लड़कियां गृहस्थी संभालती थी। कहीं पर तो जन्म होते ही कन्या की हत्या कर दी जाती थी और लड़के को अच्छी परवरिश के साथ पाला जाता था। आज तो भ्रूण हत्या नहीं होती, किंतु कुछ जगह

के लोगों की सोच आज भी वहीं पर है। आज के युग में भी लड़कियों को लड़कों से कम महत्व का माना जाता है। लोग सोचते हैं, लड़कियाँ तो पराई होती हैं और लड़के उन्हें कमाकर खिलाते हैं। उनकी यह सोच बहुत गलत है।

lek/kku% सरकार ने इसलिए लड़कियों के लिए अधिक सुविधाओं की व्यवस्था की है। हमें उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए और भेदभाव को खत्म कर देना चाहिए। जो काम लड़के करते हैं वो लड़कियाँ ज्यादा अच्छे से कर सकती हैं। इसलिए लड़कियों को ऊँची शिक्षा दिलानी चाहिए। हमारे ही प्रयत्नों के कारण धीरे–धीरे आज भी कई लड़कियाँ लड़कों से आगे निकल जाती हैं। हमें तनिक–तनिक करके लड़कियों को लड़कों से आगे लाना होगा।

tkfrxr ÒnÒko% उच्च वर्ग के लोग नीचे वर्ग के लोगों से बहुत नफरत करते हैं। उच्च जाति के लोग नीची जाति के लोगों को हाथ नहीं लगाते थे, मंदिर नहीं जाने देते थे आज भी कई गाँवों में यह चलता है। उन लोगों को आज भी वह सम्मान नहीं मिलता, जो उन्हें मिलना चाहिए।

lek/kku% सरकार ने उन्हें कई व्यवस्थाएँ दी हैं परंतु गाँव में ये सुविधाएँ नीचे वर्ग के लोगों को नहीं मिल पाती हैं, क्योंकि वहाँ पर कोई सख्ती नहीं है, इसलिए गाँव में सरकार को ज्यादा सख्त होना होगा। उन्हें नहीं, हमें भी नीचे वर्ग के लोगों के लिए आन्दोलन करना चाहिए।

देश से हम यदि इन युगीन समस्याओं का निवारण कर दें, तो हमारा देश सभी देशों में सबसे अधिक शक्तिशाली बन जाएगा। समस्याओं का समाधान करने के लिए हमें लोगों के घर–घर में जाकर उन्हें समस्याओं के बारे में बताना चाहिए, आंदोलन करना चाहिए आदि। इसलिए हम सभी को मिलकर प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम भारत देश से इन समस्याओं को अणुव्रत के द्वारा समाधान कर इन समस्याओं का नाम मिटा देंगे। ✿

सामाजिक चेतना की आवश्यकता

भ्रूण हत्या को रोकने के लिए माता-पिता में जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुप्रथा को रोकने के लिए हमें नवयुवकों को अन्तर्जातीय विवाह करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि इससे वर चुनने का क्षेत्र बढ़ जाता है। स्त्री-शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि वे शिक्षित होकर अपने ऊपर निर्भर हो सकें।

◈ vk;"kh lgk; 10वीं ए
मोतीराम स्मारक कन्या
उच्चतम माध्यमिक विद्यालय
दिलशाद गार्डन, दिल्ली

'अति सर्वत्र वर्जते' अर्थात् अधिकता किसी भी बात की अच्छी नहीं होती। मर्यादा और सीमा के तोड़ने पर पुण्य पाप में परिणित हो सकता है और अमृत विष में। साधारण रूप से हमारा समाज पिछले कई युगों से अनेकानेक समस्याओं से घिरा है। ये समस्याएं राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक आदि वर्गों में बाँटी जा सकती हैं। राजनीति, धर्म और अर्थ ही नहीं बल्कि वैयक्तिक तथा पारिवारिक परिवेश भी समस्याओं से घिरा है तथा उनसे जूझ रहा है।

इन युगीन समस्याओं से घिरी मानवता दिन–प्रतिदिन दम तोड़ रही है। भवन बन रहे हैं, कारखाने लग रहे हैं, भीड़ बढ़ रही है परंतु मानव खोता जा रहा है, छोटा होता जा रहा है क्यों? क्योंकि युगों से चली आ रही समस्या रूपी दानव प्रत्येक क्षेत्र में उसे दबोच रहा है, उसका गला घोंट रहा है।

यह ठीक है कि मानव–मनोविज्ञान के अनुसार मानव में सद् तथा असद् वृत्तियाँ सदा से ही रही हैं। किंतु जब–जब असद् वृत्तियाँ बढ़ी हैं, तब–तब इन नई समस्याओं ने जन्म लिया है। कुछ युगीन समस्याएं हैं– दहेज

प्रथा, बाल विवाह, बाल श्रम, भ्रूण हत्या, शिक्षावृत्ति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि।

ngt çFkk % दहेज प्रथा पिछले चालीस वर्षों से समाज के लिए अभिशाप बनती चली आ रही है और इसकी भयानकता दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। प्राचीन काल से ही भारत में दहेज प्रथा का चलन था परंतु उस समय यह एक सात्विक और सार्थक प्रथा थी। कन्यादान के रूप में इसे माता–पिता एक पवित्र धार्मिक कर्म मानते थे। उस समय दहेज प्रथा का मूल उददेश्य यह था कि वर–वधू अपने गृहस्थ जीवन को सुचारू रूप से चला सके। कालांतर में इस दहेज दानव की भूख दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। दहेज सामाजिक बुराइयों में सबसे बड़ी बुराई है। इसे एक प्रकार का अभिशाप कहा जाए तो अधिक संगत होगा।

cky fookg % कानून के अनुसार विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों के लिए 18 वर्ष और लड़कों की 21 वर्ष है। इस निर्धारित आयु सीमा से कम आयु के नाबालिगों का विवाह ही बाल विवाह है। बालक ही राष्ट्र के दप्रण हैं। वे ऐसी कोमल कलियाँ हैं जो कल खिलकर पूरे राष्ट्र को महकाएंगी। इन नन्हीं–सी जानों पर यदि विवाह जैसा भार डाल दिया जाए तो क्या वे खुश रह पाएंगी?

Òw.k gR;k % प्राचीन काल से ही कन्याओं को सदैव लड़कों से नीचा समझा जाता है। उन्हें बोझ मानकर माता–पिता उनका पालन–पोषण करते थे परंतु कुछ कन्याओं को तो गर्भ में ही मरवा दिया जाता था। उन्हें इस दुनिया में प्रवेश करने भी नहीं दिया जाता। वैज्ञानिक साधनों की प्रगति के कारण यह तो अब और भी बड़े पैमाने पर होने लगा है।

lek/kku % इन सामाजिक कोढ़ों को दूर करने के लिए बहुत समय से प्रयत्न हो रहे हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय ने समाज की बुराइयों को सामूहिक रूप से दूर करने का प्रयत्न किया। इसी प्रकार कैप्टन केशव और महादेव गोविंद रानाडे ने नारी शिक्षा की व्यवस्था की और नारी–जाति में जागृति उत्पन्न करने का प्रयत्न किया, जिससे वे स्वावलंबी बनकर दहेज रूपी दानव के जबड़ों से अपने को मुक्त कर

सकें। दयानंद सरस्वती, श्रीमती एनी बेसेंट, दीनबंधु एण्ड्रुज, श्री हरविलास आदि महापुरुषों ने समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। साथ ही नारी जाति को साहसी और स्वावलंबी बनाने के लिए भी इन लोगों ने प्रशंसनीय कार्य किए। इस दिशा में महात्मा गांधी का योगदान भी कम नहीं रहा है।

दहेज और भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथाओं को दूर करने के लिए और नारी जाति की दशा को समुन्नत करने के लिए सबसे पहला संवैधानिक कदम भारत के संविधान में उल्लिखित समानता का अधिकार देकर दिया गया जिसके द्वारा नारी और पुरुष के भेद को समाप्त कर दिया गया।

इसके पश्चात दूसरा कदम सन् 1954 में विशेष हिंदू विवाह अधिनियम बनाकर उठाया गया। इस अधिनियम द्वारा स्त्री को भी तलाक देने का अधिकार दिया गया और एक पत्नी के रहते दूसरा विवाह करना अपराध घोषित कर दिया गया।

भारत एक विशाल देश है। जातिवाद की जटिलता के कारण ऐसे अनेक सामाजिक अपराध छिप जाते हैं अथवा छिपा दिये जाते हैं, जो समाज के लिए घातक सिद्ध होते हैं। समाजशास्त्रियों का मत है कि कानून से किसी सामाजिक समस्या का समाधान नहीं हो सकता। इसके लिए तो सामाजिक व्यवस्था में ही परिवर्तन करना पड़ेगा। जिन्हें दहेज देना है वे देंगे और जिन्हें लेना है वे लेंगे। कानून तो तब कारगर हो सकता है जब अपराध प्रत्यक्ष में किया जाए या उसके प्रमाण उपलब्ध हों।

इससे मुक्ति पाने के लिए नारी शिक्षा के साथ, नारी में स्वाभिमान तथा आत्मसम्मान की भावना को जगाना होगा। उसे आर्थिक दृष्टि से भी स्वावलंबी बनाने की आवश्यकता है। सामाजिक मान्यताओं में परिवर्तन की अपेक्षा हैं, अपात्र अथवा कुपात्र और लोभी–लालची युवक के साथ रहने की अपेक्षा लड़की के पिता के घर रहने के औचित्य को स्वीकारना होगा। ऐसी स्थिति में यदि विवाह नहीं होता तो भी लड़की को हेय दृष्टि से देखने की कुवृत्ति का त्याग करना होगा आदि।

भ्रूण हत्या को रोकने के लिए माता–पिता में जागरूकता उत्पन्न करने की आवश्यकता है। दहेज प्रथा जैसी सामाजिक कुप्रथा को रोकने के लिए हमें नवयुवकों को अन्तर्जातीय विवाह करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए क्योंकि इससे वर चुनने का क्षेत्र बढ़ जाता है। स्त्री–शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए ताकि वे शिक्षित होकर अपने ऊपर निर्भर हो सकें।

cky Je % चौदह वर्ष की आयु में कम आयु वाले बालक द्वारा श्रम करके जीविका कमाना बाल श्रम है। जिस बालक को सरकार द्वारा पढ़ने–लिखने का अधिकार दिया गया है, बाल श्रम द्वारा उसके अधिकारों का हनन किया जाता है। उसके मानसिक व शारीरिक विकास पर विराम लगा दिया जाता है।

lek/kku % यूँ तो कानून के द्वारा बाल श्रम पर रोक लगा दी गई है परंतु चोरी छिपे अब भी बाल श्रमिक कूड़ा बीनते, चौराहों पर सामान या जूते पॉलिश करते हुए अक्सर देखने को मिल जाते हैं। इसके लिए उनके हमउम्र बालकों को भी सजग रहना चाहिए। उनके माता–पिता को बच्चों को पढ़ाने के लिए दबाव डालना चाहिए।

fÒ{kkofÙk % भिक्षावृत्ति भी एक युगीन समस्या है। भारत में शिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है। प्राचीन भारत में भिक्षा वृत्ति और भिक्षा देने का कार्य पुण्य कर्म माना जाता था। रहीम ने मांगने को बुरा बताया है, मांगना मरने के समान है किंतु जो मांगने वाले भिखारी को कुछ नहीं देता उसे उन्होंने उस शिक्षुक से पहले मरा हुआ माना है। उन्होंने कहा है–

"रहिमन वे नर मर चुके जे, कहुँ माँगन जँहि,
तिनते पहिले वे मुये जिनके मुख निकसत नांहि।"

lek/kku % सर्वप्रथम तो भिक्षा को दण्डनीय अपराध घोषित करना होगा। भिखारियों को पकड़कर उनकी जाँच करनी होगी। स्वस्थ भिखारियों के लिए श्रम कार्य का प्रावधान करना होगा। लूले, लंगड़े व कोढ़ियों का इलाज करके उन्हें जीवन जीने योग्य शिक्षा देनी होगी। अपंग और असमर्थ भिखारियों को उनकी शारीरिक शक्ति के अनुसार काम देकर

श्रम के प्रति रुचि उत्पन्न करनी होगी ताकि वे भिक्षा जेसे तिरस्कृत ढंग वाले कार्य से हट सकें। इसके अतिरिक्त हम सभी को भिक्षा न देने के लिए दृढ़ निश्चयी होना होगा।

इसके अतिरिक्त और भी अन्य कई ऐसी समस्याएं हैं जो भारतवर्ष में युगों से चली आ रही हैं और दिन–प्रतिदिन भारतीय समाज को तोड़ रही हैं। इन युगीन समस्याओं रूपी दैत्यों को मिटाने के लिए समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है। ✿

खरपतवार सी बढ़ रही हैं समस्याएं

◈ **vt;iky flg** 12वीं डी
श्री जी पब्लिक सी. सै. स्कूल
नाथद्वारा, राजस्थान

आतंकवाद इस युग का अभिशाप है। आतंकवाद की घटना आए दिन होती रहती है। कितनी ही निर्दोष जानें चली जाती हैं। हिंसा के पथ पर बढ़कर मनुष्य, मनुष्य को ही मारे जा रहा है। कलयुग में समस्याओं की गिनती करें उतनी कम है। इस प्रकार देश में, संसार में युगीन समस्याओं का एक काला साया मंडरा रहा है जिसे निश्चित ही एक नए सवेरे की आवश्यकता है।

çत्येक युग कालरथ में बैठकर मानो निरंतर अपने रथ की गति को बढ़ा रहा हो तथा न जाने कितनी ही अच्छाइयाँ इस द्रुतगतिक कालरथ के नीचे आकर निःश्वास हो रही हैं और पनप रही हैं समस्याएं। 'कृभण युग' हो या 'राम युग' जिसमें क्रमशः कंस का कुचक्र हो या रावण की कुनीति, समस्याएँ जो अत्याचार या दुराचार को पानी दे रही हैं, पनपी हैं।

इन ही समस्याओं का मूल सहित नाश करने के लिए महान् विभूतियाँ भगवान स्वरूप कृभण, राम, महावीर व अनेक अन्य संतों का जन्म हुआ है। जन्म–जन्मान्तर के बीच आया कलयुग जिसे 'समस्याओं का युग' कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। स्वार्थता, लोभ, लालच, सत्तालोलुप्ता, नौकरशाही, भ्रष्टाचार, आतंकवाद और न जाने कितनी ही समस्याओं का प्रागट्य हुआ है जो खरपतवार की तरह बढ़े ही जा रही हैं।

निश्चित ही हर युग के युगनिर्माता की तरह इस बार के युगनिर्माता को अणुव्रत की संज्ञा दी जाए तो कोई शंका नहीं होगी। अणुव्रत जिसका आशय है छोटा संकल्प (व्रत) अर्थात् छोटे–छोटे संकल्पों से आत्मनिर्माण

व युग–निर्माण करना तथा इन छोटे–छोटे संकल्पों से जीवन को खुशहाल बनाना है।

;xhu leL;kvk l vk’k;% युग, एक दौर विशेष की कमियाँ, वहाँ के जन–जीवन में खलल, आम आदमी के लिए असुविधा आदि है युगीन समस्याएं। ऐसी घटनाएं जो प्रत्येक मनुष्य जो गरीब हो या अमीर, किसी न किसी बाधा से गुजरता है। ये बाधा ही समस्याएं कहलाती हैं। ऐसी ही समस्याओं में भुखमरी, गरीबी, भ्रष्टाचार, अन्याय, शोषण, सामाजिक असमता, भ्रूण हत्या, आतंकवाद, हिंसा, चोरी आदि मानवीय समस्याएं सम्मिलित हैं। इस वेदना को देखकर मन चिन्तित हो उठता है। न जाने विश्व में कितने ही लोग हैं जो भुखमरी व गरीबी के हाल में जी रहे हैं। अमीर और अमीर बनता जा रहा है तथा गरीब और गरीब। यह खाई इतनी चौड़ी होती जा रही है कि शायद इसे भरना किसी एक के वश में नहीं हैं।

चारों ओर बढ़ रहा भ्रष्टाचार, ईर्ष्या का भाव आदि मन को जला रहा है। एक टीस उत्पन्न होती है इन सब को देखकर। लगता है मानों यह पृथ्वी, यह युग समस्याओं रूपी अंधकार के साये में छिपता चला जा रहा है। यदि बात प्रदूषण की हो तो भी यह युग इसमें आगे है। अपने स्वार्थवश अपनी धरती मां के आँगन को ही मैला कर रहे हैं। कितने ही पेड़ काटे जा रहे हैं। कितनी ही तरह की जहरीली गैसें हमारे ओज़ोन मंडल के सीने को छलनी कर रही हैं।

आतंकवाद इस युग का अभिशाप है। आतंकवाद की घटना आए दिन होती रहती है। कितनी ही निर्दोष जानें चली जाती हैं। हिंसा के पथ पर बढ़कर मनुष्य, मनुष्य को ही मारे जा रहा है। कलयुग में समस्याओं की गिनती करें उतनी कम हैं। इस प्रकार देश में, संसार में युगीन समस्याओं का एक काला साया मंडरा रहा है जिसे निश्चित ही एक नए सवेरे की आवश्यकता है।

D;k mRiUu gkrh g ;xhu leL;k,% युगीन समस्याओं की उत्पत्ति के कई कारण हो सकते हैं। लोग इसे कलयुग का दोष ठहराते हैं। क्या यह उचित है? बिल्कुल नहीं। इसमें कलयुग का नहीं अपितु मानव का

स्वयं का दोष है, उसकी बुरी विचारधारओं का दोष है। लोगों में दानव प्रवृत्ति पैदा होने लगी है।

आपसी प्रेमभाव, सहयोग, समझदारी, साझेदारी आदि में कमी तथा ईर्ष्या, स्वार्थ धन लोलुप्ता में वृद्धि भी इसका एक कारण है। आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति अपना प्रभाव जमाना चाहता है। वह चाहता है उसका इस दुनिया में नाम हो तथा अपनी ख्याति के लिए कुमार्ग अपनाने लगते हैं। प्रत्येक प्रतिस्पर्धा की दौड़ में स्वयं को आगे पाना इन समस्याओं को पोषण देती है। प्रतिस्पर्धा रूपी घर्षण में एक चिंगारी उत्पन्न होती है जो इन समस्याओं को जलाने अर्थात् उत्पन्न करने में सहायक है। अतः कहा जा सकता है कि आज के लोगों में केवल अपना उल्लू सीधा करने की ही प्रवृत्ति बची है जो इन युगीन समस्याओं हेतु जिम्मेदार है।

v.kqor ,d fujkdj.k% अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन कर निश्चित ही अंधकार रूपी युगीन समस्याओं का काला साया दूर हो सकेगा। अणुव्रत इसमें सहायक होगा। अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन करके ही व्यक्ति के सुचरित्र का निर्माण होगा। अपने चरित्र के बलबूते पर वह युग का निर्माण करेगा जो निःसंशय ही सुखद होगा।

युग की समस्या से उत्पन्न होने वाली त्रासदी, दुःख–दर्द, गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं से निज़ात मिलेगी। यदि लोग अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन कर स्वयं की कमियों को ढूंढे व इन्हें एक–एक कर अपने जीवन से हटाए तो एक दिन संसार में सहयेाग, प्रेम, सद्भाव का उदय होगा और साथ अंधकार रूपी युगीन समस्याएं समाप्त होंगी और अणुव्रत अपने उद्देश्य में सफल हो पाएगा। ✿

आज की इन समस्याओं के समाधान में अणुव्रत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अणुव्रत संस्था समय-समय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिसमें भारी संख्या में बालक-बालिकाएं हिस्सा लेते हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य भावी पीढ़ी में अपने संस्कारों को पोषित करना तथा अपनी परम्पराओं से जोड़ना है क्योंकि अपनी जड़ों से अलग होकर कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता।

अशिक्षा देश के विकास में काला अध्याय

◈ vk;"kh 'kekZ 8वीं ए
के. एस. के. अकादमी
संगम विहार, दिल्ली

ftस प्रकार सोना आग में तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार मनुष्य भी कठिन परिस्थितियों या मुसीबतों का सामना करके जीवन को सफल बनाता है। किंतु जब जीवन में समस्याएं ही समस्याएं हों तो जीवन जीना भी कठिन हो जाता है। वर्तमान में ऐसी ही परिस्थितियाँ हमारे देश के सम्मुख हैं। आजादी के 64 वर्ष पूरे हो जाने पर भी हम मौलिक समस्याओं से तो निजात पा नहीं सके, ऊपर से भ्रष्टाचार, महंगाई, कालेधन रूपी अनेक समस्याएं विकराल रूप में हमारे सम्मुख आ खड़ी हुई हैं, जिनका समाधान असम्भव सा प्रतीत हो रहा है। ये समस्याएं हमारे देश की चहुँमुखी उन्नति में बाधक हैं। वर्तमान रूप में कुछ समस्याएं प्रमुख रूप से हमारे सम्मुख हैं:

vf'k{kk % आजादी प्राप्त हुए कई दशक बीत चुके हैं किंतु हम देश से निरक्षरता समाप्त नहीं कर पाये। अशिक्षा हमारे देश के विकास में एक काला अध्याय है। अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर यह हमारे लिए बहुत शर्मनाक स्थिति है। वर्तमान में हमारे देश का साक्षरता प्रतिशत 65 प्रतिशत है। निरक्षरता को दूर करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अनेक योजनाएं चलायी

जा रही हैं जो सुदूर स्थित वर्ग को शिक्षित करने में कारगर सिद्ध हुई हैं। भारत सरकार द्वारा हाल ही में एक योजना (शिक्षा का अधिकार) लागू की गयी है जिसमें छः से चौदह वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क शिक्षा का प्रयोजन है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के लिए भी अनेक योजनाएं चल रही हैं जिसका लाभ यह वर्ग उठा रहा है।

cjkstxkjh% उचित मार्गदर्शन के अभाव में तथा संसाधनों के सीमित होने के कारण देश में अनेकों युवा बेरोजगार हैं जिसका हमारी अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। अनेकों पढ़े–लिखे नवयुवक उचित अवसर न मिलने के कारण अपनी क्षमता को छोटे स्तर के कार्यों में लगा रहे हैं जिससे उनमें कुंठा का विकास होता है और वे मानसिक रोगों का शिकार हो जाते हैं। अन्य देशों की तुलना में हमारे पास युवा शक्ति अधिक है, यदि युवाओं को उनकी योग्यता के अनुरूप कार्य मिले तो एक बड़ा वर्ग जो विदेशों की ओर पलायन करता है, उसकी क्षमता का उपयेाग हम अपने देश की प्रगति में कर सकते हैं जिससे स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है।

vkradokn% 80–90 के दशक से हम आतंकवाद की समस्या से लड़ते आ रहे हैं किंतु परिणाम जस का तस है। इसका कारण कुछ राष्ट्र विरोधी तत्व असंतुष्ट बेरोजगार युवकों को उनके पथ से भटका देते हैं और अनेकों प्रलोभन देकर राष्ट्र विरुद्ध वातावरण तैयार करते हैं और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के लिए तैयार करते हैं। असंतुष्ट युवा वर्ग इन प्रलोभनों में आकर बिना परिणाम सोचे राष्ट्र विरोधी कार्यों में सक्रिय हो जाता है और इससे होने वाली हानि के विषय में नहीं सोचता।

आतंकवाद से मुक्ति के लिए कानून तथा सुरक्षा विभाग दोनों को ही सजग होना पड़ेगा तथा एक सजग नागरिक के कर्तव्यों का निर्वाह हमें भी करना होगा। सरकार को भी बेरोजगारी को दूर करने के लिए अनेकों रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे जिससे देश की युवा शक्ति की क्षमता का उपयोग विकास के कार्यों के लिए किया जाये न कि विध्वंसकारी कार्यों के लिए।

ckyJe% बालश्रम देश की प्रतिष्ठा में बदनुमा धब्बा है। अकेले हमारे देश में 11 से 12 करोड़ बच्चे बालश्रम रूपी गुलामी का जीवन जीते हैं। अशिक्षा तथा आर्थिक अभाव बालश्रम का मुख्य कारण है। कुछ माता–पिता सोचते हैं परिवार में जितने सदस्य हैं वे सभी कमाएं तो अच्छा हैं। कुछ लोगों की संवेदना समाप्त हो चुकी है। वे अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे हैं। वे बच्चों को बहुत कम धन देकर अधिक कार्य करवाते हैं इससे बच्चों का शोषण होता है। हमें जन आंदोलन चलाकर इस प्रथा पर रोक लगानी चाहिए।

egaxkÃ ,oa Òz"Vkpkj% महंगाई एवं भ्रष्टाचार का चोली–दामन का साथ है। महँगाई एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन चुकी है। इसका कारण सभी विभागों, चाहे व सरकारी हो या गैर सरकारी, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। आज संतरी से मंत्री तक सभी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। इसका कारण लोगों में बढ़ती लालच की प्रवृत्ति। वर्तमान में 2 जी स्पेक्ट्रम तथा राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन में कैग द्वारा जारी रिपोर्ट में किस तरह भ्रष्टाचार के आयोजन का कच्चा चिट्ठा खोला है। पूँजी का असमान वितरण एवं थोड़े से नवसमृद्ध वर्ग के हाथों में बेशुमार काले धन के आने से महँगाई की समस्या और भी बढ़ गयी है। सरकार में दूरदर्शिता का अभाव है जो विकास दर को मोबाइल तथा कारों की बढ़ती माँग से निश्चित करती है, जबकि देश की 80 प्रतिशत जनता अभी भी 20 रुपये प्रतिदिन की आय पर जीवन यापन करती है।

महँगाई पर लगाम लगाने के लिए सरकार को नीतिगत योजनाओं में पारदर्शिता को अपनाकर चालू करना चाहिए जिससे प्रत्येक वर्ग को लाभ हो व अपना जीवन सुचारू रूप से चला सके जिससे महंगाई एवं भ्रष्टाचार की समस्या से कुछ हद तक निपटा जा सकेगा।

lek/kku% आज की इन समस्याओं के समाधान में अणुव्रत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अणुव्रत संस्था समय–समय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करती है जिसमें भारी मात्रा में बालक–बालिकाएं हिस्सा लेते हैं। इन कार्यक्रमों को उद्देश्य भावी पीढ़ी में अपने संस्कारों को

पोषित करना तथा अपनी परम्पराओं से जोड़ना है क्योंकि अपनी जड़ों से अलग होकर कोई भी देश प्रगति नहीं कर सकता। अणुव्रत के माध्यम से छात्रों में नैतिकता, संयम, परिश्रम, अनुशासन आदि का विकास होता है जिससे उचित–अनुचित को रखने की योग्यता का विकास होता है। एक योग्य एवं सफल निर्देशक ही देश की समस्याओं का युक्तिसंगत हल निकाल सकता है।

दुर्व्यसनों से दूर रहना, अनुशासन तथा अहिंसा आदि गुणों से युक्त युवक ही स्वस्थ एवं समृद्ध राष्ट्र का निर्माण करते हैं। इन्हीं गुणों के कारण वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। वे अपने परिवार, समाज तथा देश का नाम रोशन करते हैं। इस प्रकार अणुव्रत वर्तमान समस्याओं के समाधान का एक सशक्त माध्यम बन सकता है। ✿

जहां प्यार वहीं परोपकार

भारत में विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का साम्राज्य स्थापित कर दिया गया है। भारत के कुटीर उद्योग और लघु उद्योग मर रहे हैं और औद्योगिक समूहों की आर्थिक स्थिति डांवाडोल है। भारत में छोटे उद्योगों व घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा भारत में निवेश पर रोक लगानी होगी।

◈ itk 12वीं बी
एल.डी. जैन गर्ल्स सी.सै. स्कूल
पहाड़ी धीरज, दिल्ली

आज की युगीन समस्याएं उसकी पूर्व समस्याओं का विकराल रूप है और समाधान की दिशा में उठाए गए विवेकहीन और असंगत उपायों का दुष्परिणाम है। स्वार्थ और दलहित से प्रेरित आत्मघाती दृष्टिकोण का अभिशाप है। इक्कीसवीं सदी में प्रविष्ट होने वाला समाज असाध्य रोगों से ग्रस्त, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों से पीड़ित और प्राचीन हानिकारक रूढ़ परम्पराओं से प्रताड़ित है।

राजनीतिक समस्याओं ने समाज में जीना दूभर कर रखा है। उग्रवाद, आतंकवाद और साम्प्रदायिकता भारत में नागरिकों से जीवन जीने का अधिकार छीन रहा है। भ्रष्टाचार भी आज समाज में सब जगह व्याप्त है। गरीब हो या अमीर, सरकारी कर्मचारी हो या व्यापारी कोई भी इससे अछूता नहीं है। स्वार्थ सिद्धी के लिए मानव एक–दूसरे का गला काट रहे हैं। भ्रष्टाचार रिश्वत और बेईमानी का पर्याय है। इसका मूल कारण है धन कमाने का लालच, जब धन सम्पत्ति की संग्रह की भावना सिर चढ़ बोलती है तब व्यक्ति कुछ भी नैतिक मूल्यों और आदर्शों की चिंता नहीं करता। आज भारत भ्रष्टाचार के रोग से ग्रस्त है। भारत में विभिन्न

प्रकार के घोटाले हुए हैं, जैसे राष्ट्रमंडल खेल के घोटाले, सांसद खरीद कांड, स्पेक्ट्रम घोटाले आदि।

आर्थिक समस्या आज भारत को निगलने के लिए मुँह बाए खड़ी है। अर्थ का अनर्थ हो चुका है। भारत विदेशों के अरबों रुपयों का कर्जदार है। महंगाई छलांग लगाकर निरंतर बढ़ती है जिसने मध्य वर्ग का जीना दूभर कर रखा है। काला धन, तस्करी और जमाखोरी महंगाई के वृद्धि के परम मित्र हैं। कालेधन के वर्चस्व ने तो देश की प्रतिष्ठा को ही काला कर रखा है। पाकिस्तान द्वारा पाँच सौ रुपए के जाली नोटों के प्रचलन ने देश की मुद्रा पर ही प्रश्न–चिन्ह लगा दिया है। दूसरी ओर भारत की 40 प्रतिशत जनता गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीने को विवश है। इसके लिए सरकार को विदेशी कम्पनियों को भारत में स्थापित करने पर रोक लगानी होगी तथा भारत में किसानों को प्रोत्साहित करना होगा जिससे उत्पादन बढ़े सके, गरीबी हटे।

आज देश की सामाजिक समस्याएँ भी तांडव नृत्य कर रही हैं। दहेज ने विवाह पूर्व और विवाहोपरांत जीवन में कैंसर पैदा कर दिया है। ऊंच–नीच के भेदभाव ने समस्त समाज को ही डस लिया है। नारी के शोषण, उत्पीड़न और बलात्कार ने 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के आदर्श को बाधित कर दिया है, इसके लिए सरकार को कड़े कानून बनाने चाहिए। समाज में अपनत्व की भावना समाप्त होती जा रही है। पुत्र में वैयक्तिक सुखों चाह की वृद्धि हो रही है, इसलिए वह माता–पिता से विद्रोह पर उतर आया है। समाज में संवेदना की समस्या बन गई है। आज का युग सुरा, सुन्दरी पदार्थों के सेवन में आत्मविस्तृत हो रहा है।

देश की जनसंख्या बढ़ने से प्रदूषण बढ़ रहा है और जनसंख्या बढ़ने से वनों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है। नदियों में विषैले रसायन बहाए जा रहे हैं। उद्योगों द्वारा प्रदूषण हो रहा है जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ रहा है, पेड़–पौधे तो प्रकृति की आत्मा है और मनुष्य इन्हें ही क्षति पहुंचा रहा है। प्राकृतिक संतुलन के बिगड़ने से भूस्खलन से पर्यावरण प्रदूषण, बाढ़ व भूकंप आदि समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

भारत में उद्योगों को आत्मनिर्भर बनाने, अपने पैरों पर खड़ा करने की भी समस्या है। कारण विदेशी पूंजी और तकनीक भारतीय उद्योग को परतंत्रता के लौहपाश में जकड़ती जा रही है। आज विदेश पूंजी और तकनीक ने भारत में विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का साम्राज्य स्थापित कर दिया है। भारत के कुटीर उद्योग और लघु उद्योग मर रहे हैं और औद्योगिक समूहों की आर्थिक स्थिति डांवाडोल है। भारत में छोटे उद्योगों व घरेलू उद्योगों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है तथा विदेशी कम्पनियों द्वारा भारत में निवेश पर रोक लगानी होगी।

वस्तुतः आज भारत अनेक समस्याओं का घर बन गया है। वह समस्याओं में घिरा हुआ है, आहत है, पीड़ित है। इनके दो प्रमुख कारण हैं–समस्या की सही पहचान न होना और उस पर पकड़ न होना तथा सत्ता–पक्ष और राजनीतिज्ञों की बदनीयती। इन सभी युगीन समस्याओं का समाधान सिर्फ अणुव्रत द्वारा ही किया जा सकता है। अणुव्रत में संयम है, धैर्य है। अहिंसा, त्याग, प्यार और परोपकार भी अणुव्रत है। अणुव्रत का पालन करके ही सभी मनुष्य सुखी रह सकते हैं। कहा भी गया है कि जहाँ संयम है वहाँ त्याग है और जहाँ प्यार है वही परोपकार है।

भ्रष्टाचार आज समाज में सब जगह व्याप्त है, अतः इसके विनाश के लिए आवश्यक है एकता। एकता वह शक्ति है जिससे बड़ी से बड़ी समस्या को मिलकर सुलझा सकते हैं। जिस प्रकार जलती हुई लकड़ियाँ अलग–अलग होने पर धुआँ फेंकती है और एक साथ होने पर प्रज्वलित हो उठती है, उसी प्रकार सभी धर्म और जाति के लोग मिलकर यदि आने वाली समस्याओं का समाधान करें तो हमारा भविष्य गर्व भरा व आनन्दमय होगा।

अतः जहाँ तक सम्भव है, मनुष्य को अपने अंदर धैर्य, संयम, त्याग, परोपकार सभी गुण अपनाने चाहिए। मनुष्य को सदा सत्य और मधुर वचन ही बोलने चाहिए क्योंकि प्यार के दो बोल पत्थर जैसे विशाल हृदय को भी मोम बनाने की क्षमता रखते हैं। ✿

ग्लोबल वार्मिंग भी है बड़ी समस्या

◈ **Lugk’kh"k pk/kjh** 8वीं बी
आर्मी पब्लिक स्कूल
मीरा साहिब, जम्मू

यद्यपि विगत शताब्दियों में पृथ्वी की जलवायु में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी जो मामूली सा परिवर्तन आया है, उसके प्रभाव से हम अछूते नहीं रहे हैं। तापमान में केवल एक-दो डिग्री सेल्सियस के अंतर के कारण ही धरती के अनेक भागों में कृषि में परिवर्तन आया है।

gर युग में समस्याएं भी उत्पन्न हुईं और उनके समाधान भी हुए। वर्तमान समय में बहुत सी समस्याएं हैं जिनमें से एक है वैश्विक तापमान यानि ग्लोबल वार्मिंग। आज हमारे समक्ष ग्लोबल वार्मिंग पर्यावरण चुनौती बनकर तात्कालिक चिंता का विषय है। ऐसा माना जा रहा है कि विश्व भर का बढ़ता तापमान मौसम में परिवर्तन लाएगा, समुद्र के जल–स्तर में वृद्धि करेगा तथा मौसम आधारित बदलावों की तीव्रता और आवृत्ति बढ़ेगी।

इसलिए वैश्विक तापन को लेकर विश्वभर में चिंता व्याप्त है। इससे निपटने के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रयास तेजी से किए जाने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

वैज्ञानिकों का मानना है कि इस शताब्दी में ईंधन जलाने, औद्योगीकरण तथा यातायात आदि गतिविधियों से उत्सर्जित कार्बन द्वारा तापमान में 1.1–6.4 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो जाएगी, जिसके फलस्वरूप समुद्र–सतह में वृद्धि होगी तथा अत्यधिक मौसम परिर्वतन की संभावना से वर्षा की मात्रा और समय में व्यापक परिवर्तन होंगे। कृषि उत्पादन,

ग्लेशियर, पश्चगमन प्रजातियों का विलुप्त होना तथा रोगवाहकों में व्यापक परिवर्तन संभावित है।

यद्यपि विगत शताब्दियों में पृथ्वी की जलवायु में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है, फिर भी जो मामूली सा परिवर्तन आया है, उसके प्रभाव से हम अछूते नहीं रहे हैं। तापमान में केवल एक–दो डिग्री सेल्सियस के अंतर के कारण ही धरती के अनेक भागों में कृषि में परिवर्तन आया है। चराई के लिए उपलब्ध क्षेत्र में भी परिवर्तन हुआ है, पानी की उपलब्धता पर भी इसका प्रभाव पड़ा है और इन सबके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में लोगों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा है।

तापमान में हो रही इस वृद्धि के लिए कार्बन डाई ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रोजन कार्बन आक्साईड की मात्रा लगभग 550 पीपीएम पहुँच चुकी है, जो औद्योगिक क्रांति काल की तुलना में लगभग दोगुनी अधिक है। यह स्तर भी तब है, जब हम वैश्विक समझौते द्वारा कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा और तापमान में और अधिक परिवर्तन की संभावना है। पृथ्वी के तापमान को बढ़ाने वाली इन गैसों के उत्पादन में अमेरिका एवं रूस क्रमशः 36 एवं 17 प्रतिशत का योगदान कर रहे हैं।

वैसे तो समस्त पृथ्वी का वातावरण काफी असंतुलित हुआ है। धनी देशों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक दोहन करने और प्रदूषणों का सर्वाधिक निष्कासन करने के कारण पर्यावरण में परिवर्तन आया है। बढ़ती जनसंख्या, गरीबी एवं संसाधनों का अभाव, पर्यावरण को स्वच्छ रखने में असमर्थ है। बढ़ते तापमान से पहाड़ों के हिमनदों की बर्फ लगातार पिघल रही है तथा बर्फ की मोटाई में भी कमी आ रही है। आईपीसीसी यानि 'इंटरगवर्नमेंटर पैनल ऑन क्लाइमेंट चेंज' की रिपोर्ट के अनुसार बीसवीं सदी के दौरान तापमान में 0.8 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई विभिन्न कम्प्यूटर मॉडलों ने सन् 2100 तक 1.5 से 5.9 डिग्री सेल्शियस की वृद्धि की संभावना व्यक्त की है।

पृथ्वी के तापमान में हो रही अनवरत वृद्धि आज मानवता के लिए सबसे प्रमुख चुनौती के रूप में सामने आई है। वास्तव में यह समस्या वायुमंडल

में एक निश्चित में पाई जानेवाली कुछ ऊष्मारोधी गैसों की मात्रा में वृद्धि हो जाने से जुड़ी हुई है। परंतु कुछ गैसें जैसे– क्लोराफ्लोरोकार्बन (सी. एफ.सी.), नाइट्रस आक्साइड एवं मीथेन इसके लिए उत्तरदायी हैं, जो पृथ्वी के चारों ओर बागवानी में प्रयोग किए जाने वाले 'ग्रीन हाउस' जैसा एक ऐसा आवरण बना लेती हैं, जो सूर्य की विकिरण ऊष्मा को धरती तक आने तो देती हैं, परंतु धरती से टकराकर उत्सर्जित होने वाली ऊष्मा को बाहर नहीं जाने देतीं। फलस्वरूप वायुमंडल के तापमान में लगातार वृद्धि होती जा रही है। सामान्य तौर पर घुटना को 'ग्रीन–हाउस प्रभाव' के नाम से जाना जाता है।

पृथ्वी के तापमान के तापमान में वृद्धि के ठोस प्रमाण सन् 1988 के उत्तरार्ध से मिलने प्रारंभ हो गए थे। नासा के जेक्स ई. हेन्सन एवं उनके सहयोगियों ने सन् 1960 से 1987 तक के भूमंडलीय तापमानों को विश्लेषण किया तथा यह बताया कि इस दौरान केवल कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा में पांच प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा पृथ्वी के तापमान में 0.5 से 0.7 डिग्री सेल्सियस तक वृद्धि हुई

वातावरण के लगातर गर्म होने से मौसम संबंधी अनेक परिवर्तन भी अवश्यभावी हैं। धरती का एक बड़ा भाग सूखे की चपेट में आ जाएगा, फसलों व वनस्पतियों की भारी क्षति होगी, कांटों का प्रकोप बढ़ जाएगा तथा भुखमरी की समस्या उत्पन्न हो जाएगी। अतः हमें इस बारे में जल्द से जल्द कुछ करना चाहिए। हमारे पास समय बहुत कम है। साथ ही इस समस्या के समाधान में अणुव्रत के सिद्धांत भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं क्योंकि आपाधापी व भौतिक सुख–साधनों पर संयम रखने से इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। ✿

कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए अनेकों उपाय किए जा रहे हैं। भ्रूण हत्या को रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग भी 'सॉफ्टवेयर मदर एंड चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम' का सहारा ले रहा है। इसके जरिये ग्रामीण गर्भवती महिलाओं पर भी विभाग की नजर रहेगी। माँ और शिशु की सारी जानकारी अपडेट की जाएगी।

भ्रूण हत्यारों को मिले कठोर सजा

◈ itk 11वीं
श्रीमती फूला देवी कन्या
वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
पतराम गेट, भिवानी, हरियाणा

çkचीन युग में ऋषियों की भूमि, ज्ञान का दाता और सोने की चिड़िया कहलाने वाले हमारे भारत देश में आज अनेकों समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। कहीं महंगाई की मार है तो कहीं आतंकवाद जोर पकड़ रहा है, कहीं भ्रूण हत्याएँ हो रही हैं, तो कहीं पर्यावरण प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार भारत में एक महामारी की तरह सर्वव्यापी हो गया है। इन समस्याओं को रोकने के लिए अणुव्रत आंदोलन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान समय में भ्रष्टाचार की आवाज जितनी प्रबल है, उतना प्रबल प्रयत्न उसे मिटाने का नहीं है।

Ò"Vkpkj d dkj.k% सामाजिक अंकेक्षण करने वाली संस्थाओं ने नरेगा योजना में 16 तरह का भ्रष्टाचार चिन्हित किया है। भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :–

- सामुदायिक जीवन के प्रति निष्ठा का अभाव।
- राष्ट्रप्रेम, प्रशासन कौशल और नैतिक शिक्षा का अभाव।

- धन, सत्ता एवम् पद की लोलुपता।
- अनुशासनहीनता एवं सामाजिक रूढ़ियाँ।
- गरीबी, महंगाई और दलदल राजनीति।

इसमें कम निर्माण और रिकार्ड पूरा, दरों में अंतर, कर का भुगतान नहीं, मजदूरों की संख्या में फर्क, बिना उपस्थिति के भुगतान इत्यादि प्रमुख हैं।

Ò"Vkpkj jksdus ds mik;% निम्न पहलुओं को अपनाकर हम भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं।

- कामकाज की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाकर।
- गरीबी उन्मूलन द्वारा।
- उत्तरदायी प्रशासन व्यवस्था द्वारा।
- जीवन रक्षक खाद्य पदार्थों, दवाइयों इत्यादि में मिलावट करने वालों को सजा का प्रावधान हो।
- गलत तरीकों से धन अर्जित करने वालों की मनोवृत्ति समाप्त करके।

उपर्युक्त उपाय अपनाकर हम भ्रष्टाचार को कम कर सकते हैं और देश को विकास की ओर अग्रसर कर सकते हैं। अणुव्रत आंदोलन और अन्य नैतिक आंदोलन इन सामजिक कुरीतियों को मिटाने में लगे हुए हैं।

dU;k Ò.k gR;k% वर्तमान युग में अपराधों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, इनमें जघन्य अपराध हैः भ्रूणहत्या। भ्रूणहत्या जैसे बढ़ते जघन्य अपराध के पनपने के तीन कारण हैं– बेटे की आकांक्षा, जन्म से पहले ही भ्रूण की हत्या, मुख्य कारण दहेज का तो है ही, क्योंकि इसके अलावा कई सामाजिक, आर्थिक कारणों के साथ–साथ पुरुष प्रधानता का अहंकार भी छिपा लगता है। आज यदि गर्भ में लड़की है तो उससे छुटकारा पाने की प्रक्रिया अपनाई जाती है, उस भ्रूण की चीत्कार अनसुनी कर दी जाती है।

Ò.k gR;k jkdu d mik;% कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए अनेकों उपाय किए जा रहे हैं। भ्रूण हत्या को रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग भी 'सॉफ्टवेयर मदर एंड चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम' का सहारा ले रहा है। इसके जरिये ग्रामीण गर्भवती महिलाओं पर भी विभाग की नजर रहेगी। माँ और शिशु की सारी जानकारी अपडेट की जाएगी।

इसी रिकार्ड के मुताबिक आशा वर्कर गर्भवती और शिशु का टीका कराएगी। गर्भ में पल रहे शिशु ने जन्म लिया है या नहीं यह जानकारी ऑनलाइन होगी। 'मदर एंड चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम' में हर गर्भवती महिला का पंजीकरण किया जाएगा। अब तक ढ़ाई हजार से अधिक गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण हो चुका है। भ्रूणहत्या करने वाले डॉक्टरों और करवाने वालों को 5 साल तक की सजा और 50 हजार रुपए तक के जुर्माने का प्रावधान है।

vkrdokn% आतंकवाद आधुनिक युग की सर्वाधिक भयंकर समस्या है यह समस्या केवल हमारे देश तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह समूचे संसार में फैल चुकी है। आतंकवाद ने अपने–अपने गिरोह बना रखे हैं और वे किसी भी देश की कानून व्यवस्था को स्वीकार नहीं करते। वे मनमाने ढंग से लोगों की हत्याएं करते रहते हैं। आतंकवाद का मुख्य कारण भुखमरी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार है। इसके अन्य कारण हैं, जितने भी लोग आतंकवाद की चपेट में आए हैं सभी बेरोजगार और अर्द्धशिक्षित युवक हैं। आतंकवाद की रीति–नीति चलाने वाले लोग इन बेरोजगार युवकों को अपने चंगुल में फँसा लेते हैं। जब युवकों का मन और मस्तिष्क अपरिपक्व होता है, उन्हें किसी भी सांचे में ढाला जा सकता है। पंजाब में जितने भी आंतकवादी पकड़े गए हैं, उनमें से अधिकांश ने बेरोजगारी से तंग आकर ही यह रास्ता अपनाया।

vkrdokn jkdu d mik;%

- आतंकवाद किसी के लिए भी लाभकारी नहीं है स्वयं आतंकवादियों के लिए भी नहीं।
- सरकार को उग्रवादियों के साथ कठोर कार्रवाई करनी होगी।

- अपनी सीमाओं पर कड़ी चौकसी करने की आवश्यकता है।
- जो युवक उग्रवाद की चपेट में आ चुके हैं, उन्हें सही रास्ते पर लाकर किसी उपयोगी रोजगार से जोड़ना होगा।
- लोगों में देशप्रेम की भावना को उत्पन्न करना चाहिए।
- स्कूल और कॉलेजों में राष्ट्रीय एकता की भावना को उत्पन्न करने की शिक्षा देनी चाहिए।
- समाज में बढ़ती हुई आर्थिक विषमता को भी समाप्त किया जाना चाहिए।

हमारा देश शांति और अहिंसा की जन्मभूमि है। यहाँ महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी और गांधी जैसे मानवता प्रेमियों का जन्म हुआ है। प्रत्येक भारतवासी का भी कर्तव्य है कि वह संकीर्णता के दायरे से बाहर निकल परस्पर धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करे। आचार्य तुलसी द्वारा प्रशस्त अणुव्रत आंदोलन को यदि आज समाज अपनाये तो उपरोक्त कई समस्याओं के निवारण में अवश्य मदद मिलेगी। ✿

घातक बनी है अंधाधुंध प्रगति

भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए प्रशासन को स्वयं शुद्ध रहकर नियमों का कठोरता से पालन करना चाहिए। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए। जब भी कोई दृढ़ चरित्रवान युवा नेतृत्व आर या पार की भावना से समाज को प्रेरणा देगा, तभी यह मैली गंगा शुद्ध हो सकेगी।

◈ **l|jfÒ vx|oky** 10वीं
ब्रह्मपुरी पब्लिक सी.सै. विद्यालय
ब्रह्मपुरी, दिल्ली

Iमस्याएं वस्तुतः जीवन का पर्याय है। हमारे युग में भी अनेक सामाजिक व राष्ट्रीय समस्याएं हैं। कुछ सामाजिक हैं जैसे दहेज प्रथा जो कि एक गंभीर समस्या के रूप में परिवर्तित होती जा रही है। दुर्भाग्य से आज दहेज प्रथा एक बुराई का रूप धारण करती जा रही है। आज दहेज प्रेमवश देने की वस्तु नहीं, अधिकारपूर्वक लेने की वस्तु बनता जा रहा है। आज वधू पक्ष से जबरदस्ती पैसा, वस्त्र और वस्तुएँ माँगते हैं। यह एक बुराई है।

दहेज के दुष्परिणाम अनेक हैं। दहेज के अभाव में योग्य कन्याएँ अयोग्य वरों को सौंप दी जाती हैं। दूसरी ओर अयोग्य कन्याएँ धन की ताकत से योग्यतम वरों को खरीद लेती हैं। गरीब माता–पिता दहेज के नाम से भी घबराते हैं। वे बच्चों का पेट काटकर पैसा बचाने लगते हैं। यहाँ तक कि रिश्वत, गबन जैसे अनैतिक कार्य करने से भी नहीं चूकते।

कुछ प्राकृतिक आपदाएँ या समस्याएँ भी हमारे युग की पहचान बनती जा रही हैं, जैसे प्रदूषण। जिसके विषय में वस्तुतः सभी जानते हैं परंतु कोई भी व्यक्ति कुछ नहीं करना चाहता। सबसे पहले मैं लिखना चाहूँगी वायु प्रदूषण के बारे में। आजकल हर सम्पूर्ण सन्तुष्ट घर में एयर कन्डीशनर

का प्रयोग किया जाता है, जिसमें से क्लोरोफ्लोरो कार्बन नामक गैस निकलती है जो कि हमारी पृथ्वी की ओजोन पर्त में छेद होने का कारण बनती है। ओजोन पर्त में छेद होने के कारण सूर्य से निकलने वाली अल्ट्रावॉइलेट किरणें सीधे हमारी तरफ आती हैं जिससे हमारी शारीरिक त्वचा बहुत प्रभावित होती है।

वायु प्रदूषण वाहनों से निकलने वाला धुआँ, फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआँ वृक्षों की कटाई, ईंट–बजरी और तारकोल के निर्माण, विद्युत–गृह और ताप–घर, प्लास्टिक परमाणु हथियारों का निर्माण, बमों, कीटनाशकों के अनावश्यक निर्माण से बढ़ता जा रहा है।

मनुष्य की इस अंधाधुंध प्रगति का दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारा समूचा परिवेश जीवन घातक तत्वों से भर गया। आदमी महानगरों में स्वच्छ वायु में साँस लेने से तरस गया है। वायु प्रदूषण के कारण आँखों में जलन, त्वचा में एलर्जी साँस में कष्ट, प्लेग, डेंगू आदि कितनी ही प्राणघातक बीमारियां जन्म ले रही हैं। अविवेकपूर्ण औद्योगिकीकरण और परमाणुविक प्रयोगों के कारण विश्वभर का मौसम चक्र बिगड़ गया है। धरती पर गर्मी बढ़ रही है। नदियों में जल प्रदूषण बढ़ रहा है।

आजकल हर जगह चुनावी नेताओं द्वारा भाषणबाजी के कारण प्रायः लाउडस्पीकरों के प्रयोग के कारण ध्वनि प्रदूषण भी प्रदूषण का एक नया प्रकार बनने लगा हैं। सांप्रदायिकता एक सामाजिक समस्या है। जब कोई संप्रदाय स्वयं को सर्वश्रेष्ठ और अन्य को हीन मानने लगता है तब सांप्रदायिकता का जन्म होता है।

बेरोजगारी भी एक चिन्तनीय समस्या है। लोगों के पास हाथ हैं, पर काम नहीं, प्रशिक्षण है, पर नौकरी नहीं। आज देश में प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित दोनों प्रकार के बेरोज़गारों की फौज हैं। रोजगार कार्यालयों में करोड़ों बेकार युवकों के नाम दर्ज है। बेकारी का सबसे बड़ा कारण है जनसंख्या।

आजकल सामाजिक जीवन में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है। यहाँ कर रिवाज है– रिश्वत लो और पकड़े जाने पर रिश्वत देकर छूट जाओ। जब से हमारा देश स्वतंत्र हुआ है तब से वस्तुओं की कीमत लगातार

बढ़ती जा रही है। रोजमर्रा की चीजों में 150 से 250 गुना तक वृद्धि हो चुकी है। आप लोगों ने कालाबाजारी के बारे में तो सुना ही होगा। बड़े–बड़े व्यापारी और पूंजीपति धन के बल पर आवश्यक वस्तुओं का भंडारण कर लेते हैं। ये हैं महँगाई बढ़ने के कुछ बनावटी कारण।

l ek/kku %

- दहेज प्रथा का समाधान तभी हो सकता है जब लड़कियाँ आत्मनिर्भर बनें। वे आजीविका कमाएं; नौकरी या व्यवसाय करें। इससे भी दहेज की माँग में कमी आएगी। दूसरा, कानून के प्रति जागरूकता। जब से 'दहेज निषेध विधेयक' बना है तब से वर पक्ष द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों में कमी आई है परंतु इस बुराई का जड़मूल से उन्मूलन तभी संभव है जब युवक–युवतियाँ स्वयं जागृत हों।

- प्रदूषण का पहला उपाय है इस समस्या के प्रति सचेत होना। दूसरा– आसपास पेड़ लगाना, हरियाली को अधिकाधिक स्थान देना। अनावश्यक शोर को कम करना, गांधी जी के द्वारा कहे गये "सादा जीवन, उच्च विचार" वाक्य से प्रेरणा लेना।

- सांप्रदायिकता की समस्या तब तक नहीं सुलझ सकती जब तक धर्म के ठेकेदार इसे सुलझाना नहीं चाहेंगे। यदि सभी धर्म एक–दूसरे को स्वीकारें तब यह समस्याएँ कुछ हाथ में आ सकती हैं।

- बेरोजगारी दूर करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा, लघु उद्योगों को प्रोत्साहन, मशीनीकरण पर नियंत्रण, कम्प्यूटरीकरण पर नियंत्रण होना चाहिए। रोजगार के नए अवसरों की तलाश, जनसंख्या पर रोक आदि उपायों को शीघ्रता से लागू किया जाना चाहिए।

- भ्रष्टाचार खत्म करने के लिए प्रशासन को स्वयं शुद्ध रहकर नियमों का कठोरता से पालन करना चाहिए। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए। जब भी कोई दृढ़ चरित्रवान युवा नेतृत्व आर या पार की भावना से समाज को प्रेरणा देगा, तभी यह मैली गंगा शुद्ध हो सकेगी। ✿

समस्याएं हैं तो समाधान भी हैं

◈ 'kkUru frokjh 8वीं बी
न्यू एरा पब्लिक अकादमी
इंदौर, मध्यप्रदेश

आज मानव विकास के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है। इसी विकास के साथ-साथ कई समस्याएं भी पैदा हुई हैं, जैसे-पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अशिक्षा आदि इस प्रकार की समस्याओं को रोका जा सकता है क्योंकि ये मानवीकृत समस्याएं हैं।

समस्या शब्द का अर्थ किसी व्यक्ति, वस्तु या प्रकृति के द्वारा अन्य व्यक्तियों के कार्य में बाधा उत्पन्न करना है अर्थात् समस्या में व्यक्ति असहजता महसूस करता है और उसे अपने ऊपर संकट आया हुआ लगने लगता है।

समस्याएं मुख्यतः दो प्रकार से आती हैं : प्राकृतिक समस्याएं, मानवीकृत समस्याएं। प्राकृतिक समस्याएं मानव जीवन पर दोहरा प्रभाव डालती हैं जिनके कुछ अच्छे और कुछ बुरे परिणाम सामने आते हैं। समस्या चाहे प्राकृतिक हो या मानवीकृत हो, वह लाभ की अपेक्षा हानि अधिक करती है। इसलिए समस्याओं को यथा सम्भव रोकने के प्रयत्न किये जाते हैं।

प्रस्तावना में यह बतलाया गया कि समस्याएं मुख्यतः दो आधार से उत्पन्न होती हैं जिनके विभिन्न रूप होते हैं, जैसे : प्राकृतिक समस्याओं में वे समस्याएं शामिल की जाती हैं जिनका स्त्रोत प्रकृति में निहित होता है। जैसे की बाढ़, सूखा आँधी–तूफान, भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट तथा भू–स्खलन आदि। इस प्रकार की समस्याओं को रोका नहीं जा सकता परंतु इससे बचाव के उपाय किए जा सकते हैं।

आज मानव विकास के पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है। इसी विकास के साथ–साथ कई समस्याएं भी पैदा हुई हैं, जैसे–पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, अशिक्षा आदि। इस प्रकार की समस्याओं को रोका जा सकता है क्योंकि ये मानवीकृत समस्याएं हैं।

ऊपर वर्णित समस्याएं अलग–अलग स्त्रोतों से उत्पन्न होती हैं, जैसे मौसम के कारण वर्षा, बाढ़ तथा सूखा। पृथ्वी में हलचल के कारण भूकम्प तथा ज्वालामुखी और भू–स्खलन पर वर्षा तथा पृथ्वी की आंतरिक हलचल दोनों का प्रभाव पड़ता है। इसी तरह अन्य समस्याएं जैसे–आँधी–तूफान का स्त्रोत वायु है और दूसरी तरफ मानवीकृत समस्याओं के स्त्रोत मानव द्वारा तैयार किये जाते हैं, जैसे–पर्यावरण प्रदूषण के लिए मानव पूर्णरूपेण उत्तरदायी है।

मानव द्वारा अपना स्वार्थ साधने के लिए कई प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया गया जिसके लिए उसने प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन किया जिससे पर्यावरण का संतुलन बिगड़ गया। जैसे रेफ्रीजरेटर में सी. एफ.सी. गैस के उपयोग के कारण ओजोन, परत क्षीण हुई जिससे पराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर पहुंचीं तथा त्वचा कैंसर जैसे भयानक रोग होने लगे। इसी तरह कूलर, टेलीविजन, कल–कारखानों से निकलने वाला धुआँ, परमाणु ऊर्जा तथा अस्त्र–शस्त्र और विभिन्न प्रकार के वाहनों से वायु–प्रदूषण हो रहा है जिसके परिणाम हुए कहीं वर्षा होती नहीं तो कहीं दो से होती है। अधिक गर्मी के कारण पर्वतों की बर्फ पिघल रही है तथा समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है।

एक रिपोर्ट के अनुसार अगले पचास से सौ वर्षों के भीतर समुद्र के तट पर बसे लगभग पचास शहर डूब जायेंगे जिनमें भारत का मुम्बई और अंडमान निकोबार भी शामिल है। इसी तरह कुछ अन्य कारण जैसे–वनों की कटाई तथा अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक खाद्य का प्रयोग जल प्रदूषण करता है। यह सारे स्त्रोत प्राकृतिक समस्याएं पैदा करते हैं। मानवीकृत समस्याएं, जैसे–विकास के नाम पर नये–नये यंत्रों की खोज के कारण नई–नई परेशानियाँ आती हैं। मोबाइल के कारण इन्सान बड़ी

आसानी से झूठ बोल जाता है। अशिक्षित व्यक्ति शिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा निम्न कोटि का महसूस करता है।

वर्तमान युग में दो समस्याएं ज्वलन्त समस्याएं हैं, ये हैं भ्रष्टाचार व आतंकवाद। भ्रष्टाचार ऐसी समस्या है जो मनुष्य को बर्बाद करने के बाद अपना रूप दिखाती है। आतंकवाद दुनिया के हर देश में फैला हुआ है जो जन–धन हानि में भरोसा करता है। प्राकृतिक समस्याएँ मनुष्य को हानि के रूप में महामारी तथा फसलों को नुकसान, निवासी को नष्ट करना आदि स्वास्थ्य संबंधित प्रभाव डालती हैं और मानवीकृत समस्याएं मानव समाज को कई रूपों में प्रभावित करती हैं, जैसे–आतंकवाद में लोगों का मारा जाना। भ्रष्टाचार में नेताओं तथा सरकारी कर्मचारी द्वारा धोखाधड़ी करना आदि।

प्राकृतिक समस्याओं को रोका नहीं जा सकता है बचाव के उपाय किये जा सकते हैं बाढ़ को रोकने के लिए बाँध बनाना, भूकम्प रोधी राडारों के प्रयोग से भूकम्प की चेतावनी पहले दे देना आदि। निमनलिखित इन उपायों से जन–धन की हानि को कम किया जा सकता हैः

- व्यक्तियों के मन से खौफ़ हटाना।
- आतंकवाद से मुकाबला करने का प्रशिक्षण देना।
- देश–प्रेम की भावना का विकास करना।

vf'k{kk dk jkdu d mik; %

- बच्चों का शिक्षा के प्रति रुझान बढ़ाना।
- पालकों को शिक्षा के महत्व को समझाना।
- जन जाग्रती उत्पन्न करना।
- शिक्षा में इस तरह परिवर्तन करना कि बच्चे शिक्षा की ओर आकर्षित हों।

Ò"Vkpkj dk jkdu d mik;%

- भ्रष्टाचारी नेताओं के चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगाना।
- भ्रष्ट अधिकारियों को नौकरी से निकालने के साथ कठोर दंड की व्यवस्था करना।
- नागरिकों में उत्तम चरित्र की भावना का विकास करना।
- शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना।

अतः, वर्तमान में जिस गति से दुनिया में विकास हो रहा है और जिन साधनों को उपयोग हो रहा है, उससे समस्या आना निश्चित है। परन्तु समस्याओं के समाधान के लिए उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिए कुछ स्थितियों के निर्माण की आवश्यकता है। व्यक्तियों में आत्म समान तथा राष्ट्र प्रेम की भावना को जाग्रत करके आतंकवाद तथा भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याओं का निराकरण किया जा सकता है। ✿

अंधविश्वास से डगमगाता समाज

◈ ugk frokjh 11वीं ए
वंदना इंटरनेशनल स्कूल
द्वारका, दिल्ली

वास्तव में बेरोज़गारी की समस्या एक दानव की तरह हमारे देश के नवयुवकों को खा रही है। एक नौजवान जब पढ़ाई करता है, अपने क्षेत्र में विशेष ज्ञान प्राप्त करता है, फिर नौकरी के लिए दर-दर भटकता फिरता है और उसके हाथ केवल निराशा ही लगती है, तब उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है।

Okरतीय समाज की जब बात की जाती है तो यह सामने आता है कि यहाँ ऐसे अनेक अंधविश्वास दिखाई देते हैं, जिनके कारण भारतीयों को व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। अंधविश्वासों से चिपके हुए भारतीय अब भी दुःख–क्लेश को भोग रहे हैं।

इन अंधविश्वासों में धर्म की रूढ़िबद्धता, जादू–टोने में विश्वास, देवी–देवताओं के प्रति अबौद्धिक श्रद्धा तथा अन्य सामजिक कुरीतियाँ हैं। इन सबके कारण इस वैज्ञानिक युग में भी भारत उतनी प्रगति नहीं कर रहा जितनी करनी चाहिए।

भारतीय हिंदू समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास छुआछूत का विश्वास है। कुछ जातियों को अस्पृश्य मानकर उनका बहिष्कार करना, उनके साथ भोजन करना, साथ रहना, उठना–बैठना निषेध समझना अत्यंत ही घृणित कार्य है। इससे हमारा संपूर्ण समाज खोखला हो गया। देवी–देवताओं का नाम लेकर चढ़ाई जाने वाली बलि भी कई जगहों पर देखी जा सकती है। बिल्ली का काटना, छींकना, पीछे से आवाज़ देना, चलते हुए

अंधेरा हो जाना आदि ऐसे अपशगुन माने गए हैं, जिनके कारण लोग अपने महत्वपूर्ण काम तक रोक देते हैं।

हमारे समाज का सबसे बड़ा अंधविश्वास समग्र रूप से परंपराओं के प्रति अंधभक्ति है। हम आज भी उन बातों से जुड़े हुए हैं, जो इस युग में अत्यावश्यक हो गई हैं। परंपराओं की अंध–आसक्ति ने हमारे विकास को रोक दिया है। आज आवश्यकता है हमारे भीतर जागृति की। आवश्यकता है धर्म के वास्तविक रूप को समझकर उसका आचरण कर प्रगति की ओर बढ़ने की।

आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता, अराजकता और स्वार्थपरता का बोलबाला हो गया है। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरूप धुँधलासा हो गया है। इसका एक कारण समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार भी है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यही है कि इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है।

मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीकों को अपना रहा है। कमरतोड़ महँगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है। हमें हमारे समाज में फन फैला रहे इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएँ भी सुलभ करानी होंगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

वास्तव में बेरोज़गारी की समस्या एक दानव की तरह हमारे देश के नवयुवकों को खा रही है। एक नौजवान जब पढ़ाई करता है, अपने क्षेत्र

में विशेष ज्ञान प्राप्त करता है फिर नौकरी के लिए दर–दर भटकता फिरता है और उसके हाथ केवल निराशा ही लगती है, तब उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगता है। ऐसे ही कई बेरोज़गार नवयुवक गलत रास्ते अपनाने लगते हैं, बुरी आदतों का शिकार बनते हैं और समाज के लिए समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। विचार किया जाए तो मुख्य रूप से गाँवों से बड़ी संख्या में लोगों का शहरों में आना, दूषित शिक्षा प्रणाली, बढ़ती जनसंख्या–जैसे कारण इस समस्या के मूल में दिखाई देते हैं।

अतः बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए हमें इन कारणों से निपटना होगा। कृषि का समुचित विकास आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके उसे व्यवसाय से जोड़ा जाए, जनसंख्या नियंत्रण के और सजग प्रयास हों, साथ ही यह भी आवश्यक है कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक व्यापक रोज़गार नीति अपनाई जाए और सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में उत्पादक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रोज़गार के नए अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ। सरकार द्वारा इस संबंध में अनेक उपाय किए जा रहे हैं, किंतु और अधिक सजग प्रयासों की आवश्यकता है।

भारत भूमि अहिंसा की पुजारी है। शांति से जीवनयापन करना ही यहाँ के लोगों का लक्ष्य रहा है। 'जीओ और जीने दो' का नारा ही उसका धर्म रहा है। लेकिन खेद का विषय यह है कि अहिंसक और शांतिप्रिय देश भारत में पिछले कई दशकों से सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवाद का बोलबाला है। आतंकवाद की शुरूआत बंगाल में नक्सलवादियों द्वारा आरंभ की गईं इसको आगे बढ़ाने का काम पंजाब में खालिस्तान बनाने की माँग से हुआ। आज स्थिति यह है कि इसका स्वरूप इतना विकृत होता जा रहा है कि धीरे–धीरे समूचा भारत (कश्मीर, असम, बिहार, उत्तर–प्रदेश के तराई क्षेत्र, त्रिपुरा, आंध्र–प्रदेश) ही इसका शिकार हो रहा है।

जन–जन में आज भय समा गया है। देश की स्थिति यह है कि देश के लोग ही इसे खोखला करने में लीन हैं। बेरोज़गारी से बचने के लिए धार्मिक–युद्ध का मुखौटा ओढ़कर आतंकवाद में कदम रखने वाले युवा देश में अशांति और अस्थिरता का माहौल फैलाकर अपनी विजय–पताका को ऊँचा करने में लगे हैं। सरकार अपनी ओर से इस आतंकवाद के भूत

को भगाने का पूरा प्रयास कर रही है; कानून बदल रही है; आम लोगों के मन को जागृत करने का प्रयास कर रही है, लेकिन परिणाम कुछ भी नहीं मिल रहे हैं। मुंबई, अहमदाबाद और दिल्ली में हुए 'सीरियल ब्लास्ट' इस बात की गवाही देते हैं कि हमारे देश का कानून ही नहीं, सुरक्षा व्यवस्था भी बहुत कमज़ोर है। हज़ारों की संख्या में बेगुनाह लोगों का बहता खून इस बात की गवाही है कि देश आज आतंकवाद के साये में पल रहा है।

आवश्यक है कि इसके विरुद्ध कठोर कदम उठाने की। कहते हैं–'लातों के भूत बातों से नहीं मानते।' अतः आतंकवाद–रूपी साँप के फन को कुचलने का हमें पूर्ण प्रयास करना होगा। इस अभियान में देश के प्रत्येक सदस्य का सहयोग आवश्यक है अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब पूरा भारत त्राहि–त्राहि कर रहा होगा। ✿

समस्याएं भगाएं, अणुव्रत अपनाएं

◈ d- vukfedk >k 10वीं
शासकीय कन्या पूर्व उच्चतर माध्यमिक शाला, खैरागढ़, राजनांदगांव, छत्तीसगढ़

वर्तमान में राष्ट्रभक्ति का अभाव देखा जा रहा है। सभी आज अपने काम में व्यस्त हैं। तेरा-मेरा की भावना पनप रही है। संकीर्ण विचारधारा के चलते राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँच रहा है। आज राष्ट्र चिन्हों का सम्मान व राष्ट्र ध्वज का अपमान जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं।

Okरत एक विशाल राष्ट्र है। यहाँ अनेकता में एकता होते हुए भी विविध समस्याएं जन्म ले रही हैं, जैसे–जाति, वर्ण, भाषा, प्रांत आदि को लेकर कई समस्याएं सामने आती हैं। आज प्रत्येक मानव शिक्षित होते हुए भी हिंसात्मक तरीका अपनाता है जिसके कई दुष्परिणाम सामने आते हैं। राष्ट्र को नई धारा से जोड़ने के लिए कितने ही महापुरुषों, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों, अर्थशास्त्रियों ने अपने वाक्य और प्रवचन दिये जिनसे लोगों की संकीर्ण मानसिकता को दूर किया जा सके। आज का मानव अपनी नैतिकता को भूल कर दुष्कर्मों में लिप्त होता जा रहा है जिससे मानव जाति पतन की ओर अग्रसर होती जा रही है।

इन्हीं युगीन समस्याओं के निराकरण का सबसे सरल उपाय अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। उसी तरह अणुव्रत भी जाति, वर्ग, मजहब, लिंग, रंग और भाषा को नहीं मानता, वह सिर्फ अणुव्रती कहलाता है। वह किसी भी जाति, धर्म, लिंग का हो सकता है। अणुव्रती का कार्य है वह आपसी प्रेम व भाईचारे से कुरीतियों को दूर कर एकता स्थापित कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना जागृत करे।

v.kqor D;k g\% अणुव्रत आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा जन निर्माण व चरित्र निर्माण के लिए चलाया गया आंदोलन है। अणुव्रत, इस नाम का चयन बहुत सोच–विचार के बाद किया गया। अणुव्रत नाम से त्याग की भावना उजागर होती है। सिर्फ मानवीय मूल्यों में आस्था ही अणुव्रती की न्यूनतम योग्यता है। अणुव्रत का एकमात्र उद्देश्य है, जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयत और नैतिक मूल्यों के लिए प्रेरित करना।

v.kqor dh vko';drk\% अणुव्रत से चरित्र निर्माण होता है। सत्य, असत्य की पहचान होती है। विचारों में परिपक्वता आती है। अणुव्रती ही जीवन के आदर्श पर चलकर सत्य अहिंसा के मार्ग को अपना कर आत्म–अनुशासन में रहकर विश्व शांति के लिए प्रयास करता है।

;qxhu leL;k,\% वर्तमान युग की कई भयावह समस्याएं हैं, जैसे :

- भ्रष्टाचार : आज की वर्तमान समस्या भ्रष्टाचार बहुत बड़ी समस्या है। भ्रष्टाचार के कारण कालाबाजारी से जनता का शोषण बढ़ता जा रहा है। आज भ्रष्टाचार मैं हर वर्ग का व्यक्ति लिप्त है जिसका कारण है सत्य, ईमानदारी की अवहेलना। सत्य की राह में चलने वाले व्यक्ति भ्रष्ट नहीं हो सकते।

- अनुशासनहीनता : अनुशासनहीनता से तात्पर्य अनुशासन का पालन न करना, नियमों का पालन न करना। आज के नर–नारी पूरी तरह से अनुशासनहीन जीवन शैली अपनाकर घर परिवार, समाज, राष्ट्र को क्षति पहुँचा रहे हैं। अनुशासनहीनता का सबसे बड़ा कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण है। आज हर कोई पैसे के पीछे भाग रहा है और भौतिक सुविधाओं के पीछे नैतिकता, अपनापन, नियमबद्धता ये सारी चीजें धूमिल होती जा रही हैं।

- दहेज प्रताड़ना : दहेज प्रताड़ना एक प्रकार की समस्या है। अधिकांश महिलाएँ दहेज के लिए प्रताड़ित की जाती हैं और जीवनभर कष्टों को सहती हैं। कहते हैं 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ

नारियों की पूजा होती है, सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है, किंतु वर्तमान में नारियों की दशा बड़ी दयनीय है।

- बेरोजगारी : आज के युग की बेरोजगारी भी एक समस्या है। आज विश्व में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। इसका मूल कारण शिक्षा का व्यवसायीकरण व योग्यता का सही आकंलन नहीं होना है। देश में बढ़ती आधुनिकता व मंहगाई ने बेरोजगारी को जन्म दिया है।

- घरेलू हिंसा : घरेलू हिंसा भी एक भयानक समस्या है। आज अधिकांश घरों में घरेलू हिंसा होती है। महिलाएँ आज घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। वर्तमान में अधिकांश घरों में सास, ननद के द्वारा महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं। यह भी आपसी मतभेद, विचारों की असमानता की उपज है।

uDlyokn o vkradokn % नक्सलवाद व आतंकवाद भी वर्तमान की बड़ी समस्या है। आज इंसान, इंसान को नहीं समझता। सभी आतंक का सहारा लेकर देश की एकता को नुकसान पहुँचाते हैं।

vf/kdkjk&drO;k dk n#i;kx % आज के इस युग में सभी अपने अधिकारों को ठीक से नहीं समझते हैं। संविधान द्वारा सभी नागरिकों को बहुत से अधिकार प्रदान किये गये हैं, जैसे–स्वतंत्रता का अधिकार, समानता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, अभिव्यक्ति का अधिकार। लेकिन आज भी अधिकांश व्यक्ति अपने अधिकारों को समझ नहीं पाए। अधिकारों के साथ कर्तव्य भी जुड़े होते हैं, ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। अधिकारों को समझने वाला व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भी समझ जाता है किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कर्तव्यों की अवहेना की जा रही है।

jk"VªhfDr dk vHkko % वर्तमान में राष्ट्रभक्ति का अभाव देखा जा रहा है। तेरा–मेरा की भावना पनप रही है। संकीर्ण विचारधारा के चलते राष्ट्रीय एकता को नुकसान पहुँच रहा है। आज राष्ट्र चिन्हों का सम्मान व राष्ट्र ध्वज का अपमान जैसी समस्याएँ सामने आ रही हैं।

;|xhu leL;kvk dk lek/kku% जीवन विज्ञान की शिक्षा देकर, सामाजिक क्षेत्र में रूचि जागृत कर, आध्यात्मिक वातावरण पैदा कर, विश्व बंधुत्व की भावना जागृत कर, इंद्रिय संयम अर्थ संयम और विचार संयम का सतत् अभ्यास करके, विवेक के साथ–साथ परम्पराओं को समान महत्व देकर, अणुव्रत आचार–संहिता का पालन करके, अणुव्रत के त्रिसूत्री कार्यक्रम का पालन करके स्वयं को पहचानना जैसे सम्यक् दर्शन, सम्यक् आचरण, सम्यक् संकल्प, व्यक्तित्व का समग्र विकास करके, प्रेक्षाध्यान के द्वारा, अनुशासित रहकर, मानवतावाद का प्रसार करके। ✿

समस्याएं अनेक पर इरादे हों नेक

◈ vu| pkoyk 11वीं
एस. डी. गर्ल्स सी. सै. स्कूल
जी ब्लॉक, गंगानगर, राजस्थान

आरक्षण का लाभ उन्हीं लोगों को मिलना चाहिए जो पिछड़े हुए हैं। कोई उच्च जाति का परिवार यदि गरीबी की रेखा के नीचे है व शोषण से ग्रस्त है अथवा उसकी स्थिति पिछड़े वर्ग के समान है तो उसे आरक्षण की सुविधा न देना अनुचित है।

oर्तमान समय में हमारे देश में अनेक प्रकार की समस्याएं विद्यमान हैं। साम्प्रदायिकता, अलगाववाद के साथ ही अब आरक्षण की समस्या भी बढ़ने लगी है। कुछ लोग आरक्षण के पक्षधर हैं तो कुछ इसका विरोध कर रहे हैं। इस कारण हमारे देश में सर्वत्र अशांति और सामाजिक विभाजन की भावना पनपने लगी है। गत वर्षों में इस समस्या के कारण सारे देश में आन्दोलन, अग्निकांड, आत्मदाह, तोड़फोड़ आदि का वातावरण रहा। इस आरक्षण आंदोलन का सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा क्षेत्र पर पड़ा, विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं कॉलेजों में शिक्षा–सत्र गड़बड़ाये, क्योंकि आरक्षण का प्रभाव शिक्षित युवा वर्ग के भविष्य पर पड़ने से वह अत्यधिक उद्विग्न दिखाई दे रहा है।

cjkt xkjh ,o vkj{k.k% भारत को स्वतंत्रता मिलने पर हमारे संविधान में यह प्रावधान रखा गया कि जो लोग गरीबी, पिछड़ेपन एवं अशिक्षा से ग्रस्त हैं, उन्हें शिक्षा प्राप्त करने और रोजगार उपलब्ध कराने में प्राथमिकता दी जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को पिछड़ा मानकर उन्हें आरक्षण का लाभ दिया गया। इसके लिए प्रतिशत निर्धारित किया गया।

आजादी के साथ ही हमारे देश में बेराजगारी की समस्या भी उपस्थित हो गईं जनसंख्या एवं आजादी की असीमित वृद्धि से यह समस्या और भी विकराल हुईं फलस्वरूप देश का युवक बेरोजगारी से ग्रस्त है। वह अच्छे से अच्छे अंकों से योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है, फिर भी उसे रोजगार या नौकरी नहीं मिलती है। दूसरी ओर उससे कम योग्यता वाला पिछड़ी जाति का युवक आरक्षण के नाम पर मनचाही नौकरी पा लेता है। आरक्षण के इस संवैधानिक पक्ष को अधिकतर युवा अनुचित मानते हैं। वैसे बेरोजगारी की समस्या सभी के सामने है परंतु जिन्हें आरक्षण का लाभ नहीं दिया गया, वे इससे अत्यधिक परेशान है। यही कारण है कि युवा वर्ग में आक्रोश व्याप्त है।

lek/kku vFkok mik;% आरक्षण का लाभ उन्हीं लोगों को मिलना चाहिए जो पिछड़े हुए हैं। कोई उच्च जाति का परिवार यदि गरीबी की रेखा के नीचे है, वह शोषण से ग्रस्त है अथवा उसकी स्थिति पिछड़े वर्ग के समान है तो उसे आरक्षण की सुविधा न देना अनुचित है। देश की आजादी का लाभ उसे भी मिलना चाहिए। राजनीतिक लाभ के कारण आरक्षण का प्रतिशत मनमाने ढंग से नहीं बढ़ाया जाना चाहिए। आरक्षण की सुविधा शिक्षा प्राप्त करके योग्य बनने में ही मिलनी चाहिए। आरक्षण की सुविधा मिलनी चाहिए, केवल जाति के आधार पर नहीं। कुछ ऐसे क्षेत्र या इलाके हैं, जहाँ अभी भी गरीबी विद्यमान है, उन क्षेत्रों में वहाँ के सभी लोगों तथा सभी जातियों को समान लाभ दिया जाना चाहिए। इस प्रकार उचित अनुपात से आरक्षण की सुविधा रखने पर युवा वर्ग का आक्रोश भी कम होगा तथा आरक्षण के परिणाम भी सामाजिक हित में रहेंगे।

Ò"Vkpkj dh leL;k% स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही हमारे देश में अनेक समस्याएं उत्पन्न होने लगीं। उस समय नये स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण की समस्या प्रमुख थी, परंतु साथ ही साम्प्रदायिकता, जातिवाद, भाषावाद, प्रान्तवाद और भ्रष्टाचार की समस्याएं भी उत्तरोत्तर बढ़ती गई हैं। इनमें भी भ्रष्टाचार की समस्या तो सुरसा की भाँति समाज के हर वर्ग, हर क्षेत्र और हर स्तर पर इस तरह बढ़ रही है कि उसका निवारण करना अत्यन्त कठिन हो गया है। आज भ्रष्टाचार हमारे देश का

शिष्टाचार–सा बन गया है। इसके सामने राष्ट्रीय तथा चरित्र की बात गौण हो गई है।

वर्तमान में हमारे देश में भ्रष्टाचार जैसी राक्षसी प्रवृत्ति के प्रसार के कई कारण हैं जिनमें कुछ इस प्रकार हैं :

- आज प्रत्येक व्यक्ति पाश्चात्य ढंग से जीवन यापन करना चाहता है। वह भौतिक सुख–सुविधाओं के लिए लालायित रहता है। इसलिए वह अनेक अनुचित तरीके अपनाकर रातोंरात लखपति बनना चाहता है।
- हमारे देश में भ्रष्ट राजनीति का जोर है, राजनेता अपना घर भरने के लिए भ्रष्ट तरीके अपनाते हैं, उनकी देखादेखी शासन तंत्र में भ्रष्टाचार पनपता है।
- सरकारी नौकरी करने वाला व्यक्ति हर तरीके से अपनी पदोन्नति चाहता, ऐसे ऑफिस में तबादला चाहता है कि जहाँ 'ऊपरी' आमदनी हो। इसलिए वह अफसरों को मुंहमांगी रिश्वत देता है। अब स्थानातंरण करवाने एवं रुकवाने के लिए रिश्वत देना एक साधारण बात मानी जाती है।
- भाई–भतीजावाद के कारण योग्य लोगों को नौकरी में उचित अवसर नहीं मिलता है, बेरोजगारी बढ़ रही है, मंहगाई रात–दिन बढ़ रही है, इस कारण भ्रष्टाचार की गति स्वतः बढ़ रही है।
- व्यापारी वर्ग भी सम्पत्ति–कर, आयकर, वाणिज्य कर आदि से बचने के लिए काला धन्धा करते हैं। अधिक मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति से भी भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।
- देश में उत्पादन की अपेक्षा जनसंख्या का तीव्र गति से विस्तार हो रहा है, इससे भी जन साधारण में आपाधापी मची हुई है।

fujkdj.k d mik;% भ्रष्टाचार का निवारण करने के लिए यद्यपि सरकार ने पृथक से भ्रष्टाचार उन्मूलन विभाग बना रखा है और इसे व्यापक अधिकार दे रखे हैं। समय–समय पर अनेक कानून बनाये जा

रहे हैं और इसे अपराध मानकर कठोर दण्ड व्यवस्था का भी विधान है, तथापि देश में भ्रष्टाचार बढ़ ही रहा है। इसके निराकरण के लिए सर्वप्रथम जन जागरण की आवश्यकता है।

राजनीति में आदर्श आचरण और नैतिक मूल्यों को प्राथमिकता दी जाए। राजनेताओं को स्वयं भ्रष्टाचार से दूर रहना चाहिए। उनके लिए आचार संहिता होनी चाहिए। भाई–भतीजावाद को रोका जाना चाहिए, व्यापारी वर्ग पर शासन का उचित नियंत्रण होना चाहिए। नवयुवकों को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार के अवसर मिलने चाहिए, शिक्षा में चरित्र–विकास को प्राथमिक लक्ष्य बनाना चाहिए। इस तरह के उपाय करने पर हमारे देश से भ्रष्टाचार का निवारण किया जा सकता है। ✿

बढ़ती आबादी के दुष्परिणाम

◈ ugk fljfl;k 8वीं
राष्ट्रशक्ति विद्यालय, हस्तसाल
दिल्ली

कलाकारों, साहित्यकारों, चिंतकों, माता-पिताओं और गुरुजनों को आगे बढ़कर एक सांस्कृतिक क्रांति करनी होगी। बच्चों को सादगी, ईमानदारी, धर्म, नैतिकता और सदाचार का पाठ पढ़ाना होगा। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन-आंदोलन खड़ा करना होगा, तब कहीं धीरे-धीरे भ्रष्टाचार की जगह सदाचार पनप पाएगा।

tlसा की आप सब जानते हैं कि हमारे देश में दिन पर दिन बहुत सी युगीन समस्याएँ जैसे–भ्रष्ट्राचार, आतंकवाद, प्रदूषण, जनसंख्या वृद्धि आदि बढ़ती ही जा रही हैं। ये समस्याएँ बहुत गंभीर हैं।

vkrdokn% समाज को अपने कुकृत्यों से अत्यन्त भयभीत करना आतंकवाद है। समाज को आतंकित करने वाले आतंकवादी कहलाते हैं। आज सारा देश आतंकवादी गतिविधियों से भयभीत है। आतंकवादियों को विदेशों से हथियार, बम आदि उपलब्ध होते हैं। वे कभी–कभी अचानक किसी बाजार में आते हैं और दनादन गोलियों की बौछार कर गायब हो जाते हैं जिससे सैकड़ों निर्दोष लोग हताहत हो जाते हैं।

छठे व सातवें दशक में बंगाल, उड़ीसा, बिहार, मध्य प्रदेश में नक्सलवादी लोग आतंक फैलाते थे। फिर उसके बाद मिजोरम, नागालैंड, अरुणाचल, मणिपुर, पूर्वांचलों में आतंकवादी गतिविधियां फैलने लगी थीं। उनको सरकार समय–समय पर दबाती रही। उसमें सरकार को सफलता भी मिली। इस समय पंजाब, कश्मीर व असम आतंकवाद की गिरफ्त में फँसे हैं। सरकार की ढुलमुल नीति आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है। आतंकवाद

के प्रति हमें सदैव जागरूक रहना चाहिए। तब ही हम अपने देश से इस आतंकवाद नाम के गंदे कीड़े को मार सकते हैं।

Ò"Vkpkj % रिश्वत, कामचोरी, मिलावट, कालाबाजारी, मुनाफाखोरी, भाई–भतीजावाद, जमाखोरी, अनुचित कमिशन लेना, चोरों–अपराधियों को सहयोग देना आदि सब भ्रष्टाचार के रूप हैं। दुर्भाग्य से आज भारत में भ्रष्टाचार का बोलबाला है। चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री कार्यालय तक भ्रष्टाचार की दलदल में लथपथ हैं। लज्जा की बात यह है कि स्वयं सरकारी मंत्रियों ने अरबों–करोड़ों के घोटाले किए हैं। भ्रष्टाचार फेलने का सबसे बड़ा कारण है प्रबल भोगवाद। हर कोई संसार भर की संपत्ति को अपने पेट, मुँह और घर में भर लेना चाहता है। दूसरा बड़ा कारण है पैसे को सलाम। अन्य कुछ कारण हैं–भूख, गरीबी, बेराज़गारी आदि। भ्रष्टाचार को मिटाना सरल नहीं है।

कठिन प्रश्न यह है कि भ्रष्टाचार के इस कुचक्र को कैसे तोड़ा जाएगा? वह अभिमन्यु कहाँ है जो इस कौरवों के घेरे को तोड़ दे? स्वेट मार्डन ने कहा था–''आज विश्व को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो क्षुद्र स्वार्थों के लिए अपनी आत्मा का सौदा नहीं करते, जो सत्य और न्याय के लिए बड़े–बड़े बलिदान देने में भी पीछे नहीं रहते।" सौभाग्य का संकेत है कि भारत की न्याय–व्यवस्था ने कुछ क्रांतिकारी कदम उठाए हैं। बड़े–बड़े अजगरों को जेल की सीखचों में बंद किया है।

कलाकारों, साहित्यकारों, चिंतकों, माता–पिताओं और गुरुजनों को आगे बढ़कर एक सांस्कृतिक क्रांति करनी होगी। बच्चों को सादगी, ईमानदारी, धर्म, नैतिकता और सदाचार का पाठ पढ़ाना होगा। भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन–आंदोलन खड़ा करना होगा तब कहीं धीरे–धीरे भ्रष्टाचार की जगह सदाचार पनप पाएगा।

çn"k.k % प्रदूषण का जन्म अंधाधुंध वैज्ञानिक प्रगति के कारण हुआ है। जब से मनुष्य ने प्रकृति के साथ मनचाही छेड़छाड़ की है, तब से प्रकृति मनुष्य पर कुपित है। मनुष्य ने अपने भवन सुंदर बनाने के लिए वन काटे, पहाड़ तोड़े, समतल मैदान बनाए, वृक्ष काटे। हरियाली की बजाय बजरी

और तारकोल के निर्माण किए, दिन–रात कारखाने चलाने के लिए विद्युत–गृह और ताप घर बनाए, परमाणु–भट्टियाँ बनाईं, प्लास्टिक जैसी घातक कृत्रिम वस्तुएं बनाईं, परमाणु हथियारों, बमों, कीटनाशकों का निर्माण किया। विलास की वस्तुओं के लिए प्रदूषण फैलाने वाले कारखानों का निर्माण किया।

प्रदूषण से मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है इस समस्या के प्रति सचेत होना। अन्य उपाय हैं–आसपास पेड़ लगाना। हरियाली को अधिकाधिक स्थान देना। अनावश्यक शोर को कम करना। विलास की वस्तुओं की बजाय सादगीपूर्ण ढ़ंग से जीवनयापन करना। वनों की कटाई पर रोक लगाना। लकड़ी के नए विकल्प खोजना। फैक्टरियों के दूषित जल और धुंए के निष्कासन का उचित उपाय खोजना। घातक बीमारियां पैदा करने वाले उद्योगों को बंद करना। परमाणु विस्फोटों पर रोक लगाना। इन उपायों को स्वयं पर लागू करना तथा समाज को बाध्य करना ही प्रदूषण का एकमात्र उपाय है।

c<rh tul[;k% वर्तमान में विश्व के सामने जो सबसे गंभीर समस्याएं हैं, उनमें से एक है बढ़ती जनसंख्या। निरंतर जनसंख्या–वृद्धि से प्रकृति पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। प्राकृतिक संसाधन घटते जा रहे हैं। पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। वैज्ञानिक चिंतित हैं कि भविष्य में इतनी जनसंख्या के लिए मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे होगी?

तेजी से बढ़ती जनसंख्या के अनेक कारण हैं। पहला कारण है अनपढ़ता। आज भी बहुसंख्यक आबादी निरक्षर है। लोग नहीं जान पाते हैं कि जनसंख्या बढ़ने के कारण समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। आज भी बच्चों को भगवान की देन मानने वालों की कमी नहीं है। बढ़ती जनसंख्या के कारण बेकारी बढ़ रही है। हर तीसरे आदमी के लिए रोजगार की अनुपलब्धता गंभीर समस्या। परिणामस्वरूप लूट, हत्या, अपहरण जैसी वारदातें बढ़ रही हैं। भ्रष्टाचार का बोलबाला चारों तरफ है।

जनसंख्या नियंत्रण के लिए सरकार को चाहिए कि परिवार नियोजन कार्यक्रम को गति दे। समस्त जनसंख्या को संचार माध्यमों के दायरे में

लाकर ही ऐसा संभव है। साक्षरता मिशन की सफलता सुनिश्चत करनी होगी तभी लोगों को परिवार नियोजन की नीतियाँ समझ आएंगी। सीमित परिवार की सुख–सुविधाओं के बारे में जब लोगों को पता होगा तो लोग जनसंख्या–नियंत्रण में भागीदार होंगे। इनके अतिरिक्त सरकार को चाहिए कि इस दिशा में कठोरता से नियम लागू करे अन्यथा आने वाली पीढ़ी को भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है।

fQjkSrh vkj vigj.k% आज भारत में अपहरण और फिरौती की घटनाएं आम हो गई हैं। अपनी माँग पूरी कराने के लिए किसी का अपहरण कर लेना और बाद में धन या कोई मुंहमागी माँग मनवाना रोज–रोज की बातें हो गई हैं। अधिकांश ऐसी वारदातें धन ऐंठने के लिए की जाती हैं। यद्यपि हर काल में ऐसी वारदातें थोड़ी–बहुत होती रही हैं किंतु आजकल तो ऐसी घटनाओं की बाढ़ सी आ गई है।

अपहरण और फिरौती बढ़ने का दूसरा कारण है दूरदर्शन और फिल्में। ये दोनों यंत्र मानों अपराधियों के प्रशिक्षण केंद्र हैं। अधिकतर अपराधी युवक होते हैं। वे अपहरण के तरीके फिल्मों या सीरियलों से सीखते हैं। अपहरण और फिरौतियों को रोकने के उपाय बताना सरल है किंतु लागू करना कठिन है। इसलिए जब तक कोई पवित्र राजनेता आकर अपराधियों को कड़ा दंड नहीं देगा, तब तक यह भयलीला चलती रहेगी। ✿

नैतिक शक्तियों में जगाएं पुनः विश्वास

◈ rUoh 11वीं
राष्ट्रशक्ति विद्यालय
हस्तसाल, दिल्ली

धार्मिक मतभेद और प्रान्तीयता का प्रभाव सीधा राष्ट्रीय एकता पर पड़ता है। आजकल लोग राष्ट्रीय एकता तो क्या, घरेलू एकता में भी नहीं रह सकते। इसका छोटा और सरल सा उदाहरण है संयुक्त परिवारों की कमी। जब लोगों में अपने घरवालों की बात को सहन करने की शक्ति नहीं रही तो राष्ट्र के स्तर पर सबके स्वतंत्र बने रहने के लिए एकता को पहली शर्त माना जाता है।

;ग बदलते हैं, लोग बदलते हैं पर कुछ चीज़े ऐसी हैं जो न ही बदली हैं और न ही शायद बदलेंगी। उनमें से समस्याएँ भी एक उदाहरण है। ऐसी बहुत समस्याएँ हैं जो हमारे परदादा से लेकर हम तक सबने झेली। यह एक पीढ़ी की नहीं, युगों–युगों की समस्याएँ हैं, जैसे : गरीबी, अशिक्षा से लेकर नैतिक मूल्यों का अभाव। पर किसी ने किसी को तो इसका समाधान करना होगा, तो क्यों न करें।

जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ था, तब लोगों के मन–मस्तिष्क तरह–तरह के आशावादों और विश्वासों से भर उठे थे। लोगों ने यह मानने की गलती कर ली थी कि अब किसी जादू की छड़ी के ज़ोर से हमारी सारी मुसीबतें समाप्त हो जाएंगी, उनका समाधान हो जाएगा। स्वतंत्रता–संघर्ष में तप कर निकले नेता जब तक रहे, ये आशा और विश्वास एक सीमा तक बने रहे लेकिन जैसे ही राजनीतिज्ञों की अगली खेप, नये धनपति बन गये लोगों की पीढ़ी ने जीवन, समाज और प्रशासन में कदम रखा, शोषण और भ्रष्टाचार का अन्जाना दौर शुरू हो गया। नये–नये उद्योग धंधों की स्थापना, पश्चिमी नकल का फायदा नेताओं को तो हुआ पर इसने पूरे देश की जड़ों को

हिलाकर रख दिया। देश के सामने ऐसी समस्याएँ लाकर रख दीं जिनका समाधान आज भी नहीं ढूँढा जा सका है।

हमारे विचार में आज हमारी सभ्यता–संस्कृति की नैतिकता, नीति आदि, घर–परिवार के विघटन–टूटन, पारस्परिक अविश्वास आदि से संबंध रखने वाली जितनी भी समस्याएँ हैं, उनको जन्म देने वाली दो प्रमुख समस्याएं हैं– आर्थिक दबाव और पश्चिमी सभ्यता संस्कृति का प्रभाव। पश्चिमी भाषा, सभ्यता, संस्कृति, उसकी हिंसक और कामुक, दूसरे शब्दों में मात्र उपभोक्तावादी दृष्टि ने आज स्वतंत्र भारत के सामने लगभग तीन–साढ़े तीन दशकों के बाद से अपनी पहचान के संकट की समस्या का एक भयानक रूप धारण कर लिया है।

हमारे लिए अच्छा और उपयोगी, अपनाने योग्य और आनंदायक वही है जो विदेशी है या फिर अपना होते हुए विदेश से होकर हम तक पहुँचा है। विदेशी टेगों वाली चीज़ हम हज़ारों में खरीदने को तैयार हैं लेकिन 'मेड इन इंडिया' वाली चीज़ों के लिए सौ रुपए भी ज़्यादा प्रतीत होते हैं। इसे सोच कहिए या विदेशी चकाचौंध की तरफ आकर्षण पर यह कहीं न कहीं भारत की पहचान के लिए खतरा है।

वैसे तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि हमारा देश धर्म–निरपेक्ष देश हैं। यहाँ सभी धर्मों, सम्प्रदायों को अपने–अपने विश्वासों के अनुसार पूजा–उपासना करने, रहने, जीने, खाने–पीने का अधिकार है। यह कहाँ तक सत्य है। आज भी कहीं न कहीं धर्म को लेकर झगड़े होते ही रहते हैं। धार्मिक मतभेद एक प्रमुख समस्या बन चुका है। जमींदार से लेकर मज़दूर तक सभी आपस में लड़ते रहते हैं। इसका सीधा असर राष्ट्रीय शक्ति, साधनों और राष्ट्रीय एकता पर होता है। सहनशीलता, सद्भाव, प्रेम और भाईचारे जैसे भाव तो खत्म हो चुके हैं। धार्मिक मतभेद भारत की बहुत पुरानी समस्या है।

प्रान्तीयता की समस्या भी एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है या यह कहा जा सकता हैं कि यह समस्या शुरू से ही भारत को अंदर से खोखला कर रही है। आदमी जिस प्रांत का निवासी है, उसके भले और

लाभ के बारे में ही सोचता है। आज के युग में तो मात्र अपने तक सीमित होकर कोई राष्ट्र और देश जीवित नहीं रह सकता तो प्रान्त कैसे रह सकता है? राष्ट्रीय सन्दर्भों और हितों से उखड़ कर ही प्रान्तीयता समस्या बना करती है। कभी सीमा–शुल्क को लेकर प्रान्त उलझ जाते हैं, तो कभी बिजली को लेकर तो कभी भाषा को लेकर। अपनी सोच को बदलकर ही हम इस समस्या का समाधान कर सकते हैं।

धार्मिक मतभेद और प्रान्तीयता का प्रभाव सीधा राष्ट्रीय एकता पर पड़ता हैं। आजकल लोग राष्ट्रीय एकता तो क्या, घरेलू एकता में भी नहीं रह सकते। इसका छोटा और सरल सा उदाहरण हैं संयुक्त परिवारों की कमी। जब लोगों में अपने घर वालों की बात को सहन करने की शक्ति नहीं रही तो राष्ट्र के स्तर पर सबके स्वतंत्र बने रहने के लिए एकता को पहली शर्त माना जाता है। शायद इसी एकता की कमी के कारण भारत आज भी कई समस्याओं से जूझ रहा है। इसी कारण स्वतंत्रता प्राप्ति के समय महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय एकता पर बल दिया।

ऊपर लिखित समस्याओं का समाधान करने के लिए सबसे ज़रूरी है राष्ट्र एकता को बढ़ावा देना। मनुष्य अकेला नहीं रह सकता। वह अन्यों के साथ मिलकर रहना चाहता है। व्यक्ति, समाज और राष्ट्र सभी के विकास के लिए एकता का होना बहुत जरूरी हैं और शायद यही इन समस्याओं का समाधान हो सकता है।

इसी प्रकार पता नहीं ऐसी कितनी समस्याएं हैं जो देश को खोखला कर रही हैं। आज भी दहेज की समस्या से कई लड़कियां मर रही हैं, कई बाप बोझ के कारण आत्महत्या कर रहे हैं। बेकारी की समस्या जिसका सीधा संबंध जनसंख्या बढ़ोत्तरी से है। आज भारत की जनसंख्या दूसरे स्थान पर है। न तो खाना है, न जगह यहाँ तक तो पानी भी नहीं है। इस प्रकार दहेज की समस्या, काला, बाजार, रिश्वत और भ्रष्टाचार की समस्या आदि और कई समस्याओं का उल्लेख भी राष्ट्रीय समस्याओं में किया जा सकता है।

अब यह बहुत बड़ा प्रश्न है कि आखिर इन समस्याओं का समाधान क्या

है? हमारे विचार में इस सबका एक ही उत्तर तथा समाधान हो सकता है और इसमें संदेह नहीं कि आचार्य तुलसी द्वारा दिखाये गए अणुव्रत सिद्धांतों के मार्ग पर चलकर कुछ हासिल किया जा सकता है। नैतिकता एवं नैतिक शक्तियों पर विश्वास जगाया जाये। दृढ़ संकल्प बनाकर खोये विश्वासों को लौटाया जाने की जरूरत है। शासन–सत्ता और व्यवहार के स्तर पर दृढ़–संकल्प बनाकर और दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देकर उन समस्त बुराइयों, कुण्ठाओं की जड़ पर प्रहार किया जाये। ✿

प्रदूषण मानव अस्तित्व पर नंगी तलवार

अगर आप चाह कर भी स्वयं को 'सोशल नेटवर्किंग साइट्स', 'वीडियो गेम' और 'चेटिंग' जैसी गतिविधियों में लिप्त होने से दूर नहीं रख पा रहे हैं तो आप भी 'इंटरनेट फीवर' की गिरफ्त में आ चुके हैं। अमेरिका के सिएटल में पिछले दिनों लोगों की इंटरनेट की 'लत' छुड़ाने के लिए तकनीकी पुनर्वास केंद्र की शुरुआत की गई है। इस पुनर्वास केंद्र में इंटरनेट की लत से पीड़ित लोगों को इसका नशा छोड़ने में मदद करने के लिए थैरेपी का प्रयोग किया जा रहा है।

◈ **vt yh dekjh** 11वीं
रा.व.मा.पा. डुमैहर, कण्डाघाट
हिमाचल प्रदेश

gमारा पूरा विश्व आज अनेक समस्याओं से ग्रसित है। इन समस्याओं ने अशांति फैला रखी है। मनुष्य का सांस लेना भी मुश्किल हो गया। लेकिन इन समस्याओं के लिए यदि कोई जिम्मेदार है तो वह मानव स्वयं है। इन मुसीबतों को उसने स्वयं आमंत्रित किया है और इनसे बाहर निकलने का हल भी उसे स्वयं ही निकालना होगा। ये समस्याएं कई तरह की हैं। आइये इन पर एक नजर डालते हैं।

i;kZoj.k çnw"k.k% पर्यावरण प्रदूषण हमारे युग की सबसे बड़ी समस्या है। इस समस्या का उत्तरदायी मनुष्य है। वैज्ञानिक प्रगति के कारण आज सृष्टि का कोई पदार्थ, कोई कोना प्रदूषण के प्रहार से नहीं बच पाया है। प्रदूषण मानव के अस्तित्व पर एक नंगी तलवार की भांति लटक रहा है। जल के परंपरागत स्त्रोत जैसे– कुएँ, तालाब, नदी तथा वर्षा का जल इनको प्रदूषण ने दूषित कर दिया है। वायु, जल, पदार्थ सभी प्रदूषण से नष्ट हो गये हैं। आज शुद्ध वायु का मिलना कठिन हो गया है। पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है जिससे हिमखण्ड पिघल रहे हैं, जल स्तर बढ़ रहा है। यह चिंता का विषय है।

lek/kku % अधिक से अधिक पेड़ लगाकर, जल स्त्रोतों का सीमित प्रयोग करके अपनी भौतिक जरूरतें कम करके व लोगों को जागरूक कर पर्यावरण को प्रदूषण से बचाया जा सकता है।

cjkstxkjh % बेरोजगारी का मूल कारण जनसंख्या में वृद्धि है। देश के युवा लोग बेरोजगारी के कारण गुमराह हो रहे हैं और कानूनी कार्यों में रुचि लेने लगे हैं। विश्व में बेरोजगारी की समस्या भयंकर रूप धारण कर चुकी है। यह समस्या प्रत्यक्षतः जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम है। इस बेरोजगारी के कारण शिक्षा, आर्थिक विकास तथा अन्य बहुत सारे प्रश्न ज्यों के त्यों हमारे सामने खड़े हैं। बेरोजगारी के कारण ही आज हमारे देश के लाखों करोड़ों परिवार गरीबी के स्तर से भी नीचे जीने को मजबूर हैं। जनसंख्या के बढ़ने से परिवार का जीवन स्तर गिरता है और जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है।

lek/kku % सरकार को चाहिये कि वह युवकों को कम ब्याज ऋण उपलब्ध कराये ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हो सकें। इसके अतिरिक्त अधिक रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कोशिश करे।

xjhch ,oa vkradokn % आज हमारे देश में गरीबों की समस्या भयंकर रूप धारण कर चुकी है। आज भी हमारे देश में 25 से 30 प्रतिशत लोग गरीबी के रेखा से नीचे जीने को मजबूर हैं। इसका प्रमुख कारण तो जनसंख्या वृद्धि कही जा सकती है। लेकिन हमारे राष्ट्र नेताओं ने भी समय–समय पर गरीबी उन्मूलन के नारे तो लगाये लेकिन उसके लिए ठोस कदम नहीं उठाये। आज भी अमीर लोग अधिक अमीर होते जा रहे हैं और बेचारे गरीब लोग गरीबी के स्तर से भी नीचे पहुँच गये हैं। न उनके पास शिक्षा है और न उचित रोजगार। दूसरी तरफ आतंकवाद भी एक समस्या है। पाकिस्तान जैसे आतंकवादी देश हमारे देश के लिए खतरा बने हुए हैं। वे हमारे देश के बेरोजगार युवकों को धर्म और जाति के नाम पर आतंकवादी गतिविधियों में सम्मिलित करते रहते हैं।

lek/kku % लोगों को शिक्षित कर व रोजगार के साधन उपलब्ध करवाने व धन के असमान वितरण को रोककर गरीबी दूर की जा सकती है।

सरकार को चाहिए की वह ऐसी नीतियां अपनाए जिससे गरीब का जीवन संवर सके व उनकी बुनियादें जरूरतें रोटी, कपड़ा और आवश्यकताएं पूरी हो सकें।

आतंकवाद जैसी भयंकर समस्या के निदान के लिए सर्वप्रथम युवकों बेरोजगारी दूरे करनी होगी क्योंकि पैसे की चाह में ये इन आंतकी वारदातों को अंजाम देते हैं। कई जेहाद के नाम पर इन भोलेभाले बच्चों व नवयुवकों को गुमराह कर गलत दिशा दिखलाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं। युवकों को ऐसी परिस्थितियों से अपने को दूर रखना होगा।

u'kk % नशे ने आज पूरे विश्व में पैर पसार दिये हैं। बड़े–बूढ़ों की तो बात ही छोड़िये। छात्रों और नवयुवकों को अपना शिकार बना दिया है। शराब, तम्बाकू, सिगरेट, अफीम के सेवन ने इन्हें खोखला बना दिया है। जब नींव ही खोखली होगी तो राष्ट्र मजबूत कैसे होगा।

lek/kku % लोगों को सर्वप्रथम जागरूक करना होगा। इसके शरीर, मन व परिवार पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से लोगों को अवगत कराना होगा ताकि वह इसका सेवन न करें।

ufrd eY;ksa dk guu % आज भौतिकवाद की आंधी के कारण मनुष्य संवेदनाशून्य हो गया है। प्रेम, सद्भाव, करुणा, अपनापन जैसे गुणों का ह्रास हो गया है। इनके स्थान पर मनुष्य घृणा और बदले की भावना से प्रेरित होकर अहिंसा के स्थान पर हिंसा का सहारा ले रहा है जिसके कारण विश्व की जड़ें कमजोर हो रही हैं।

lek/kku % आज हमें जरूरत है कि हम बच्चों के मन में नैतिक मूल्यों का विकास करें। उन्हें अध्यात्मवाद से जोड़ें। अणुव्रत विद्यार्थियों में नैतिकता व चरित्र निर्माण का सुअवसर प्रदान करता है।

bVjusV dk u'kk % अगर आप चाह कर भी स्वयं को 'सोशल नेटवर्किंग साइट्स', 'वीडियो गेम' और 'चेटिंग' जैसी गतिविधियों में लिप्त होने से दूर नहीं रख पा रहे हैं तो आप भी 'इंटरनेट फीवर' की गिरफ्त में आ

चुके हैं। अमेरिका के सिएटल में पिछले दिनों लोगों की इंटरनेट की 'लत' छुड़ाने के लिए तकनीकी पुनर्वास केंद्र की शुरुआत की गई है। इस पुनर्वास केंद्र में इंटरनेट की लत से पीड़ित लोगों को इसका नशा छोड़ने में मदद करने के लिए थैरेपी का प्रयोग किया जा रहा है।

lek/kku % माता–पिता को जागरूक होकर अपने बच्चों की इस नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाना चाहिए। उनका ध्यान दूसरी ओर बंटाने की कोशिश करनी चाहिए। अगर फिर भी बात न बने तो मनोवैज्ञानिकों का सहारा लें।

fu"d"kZ % हम जानते हैं कि विश्व इन समस्याओं के मकड़जाल में उलझा पड़ा है। इसे सुलझाने के लिए हमें कई कोशिशें करनी होंगी। विद्यार्थियों–नवयुवकों को जागरूक करना होगा। कई संस्थायें बनानी होंगी, अणुव्रत के सिद्धांतों को अपनाना होगा। सरकार के साथ आम लोगों को भी मिलजुल कर प्रयत्न करने होंगे, तभी विश्व सही मायनों में स्वर्ग का दर्जा पा सकेगा। ✿

नागरिकों में नैतिक निर्माण जरूरी

> बेरोजगारी एक ऐसा राक्षस है जो युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास विहीन बना रहा है। जनंसख्या वृद्धि ने बेरोजगारी को जन्म दिया। सब समस्याओं में से सबसे ज्वलंत बेकारी की समस्या है। लाखों की संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगारी का भार झेल रहे हैं। योग्यता के अनुसार काम न मिलने पर उन्हें छोटे-मोटे कामों से संतोष करना पड़ता है।

◈ **jfo cxkfu;k** 11वीं
भारतीय ज्ञानपीठ
हायर सैकेंडरी स्कूल
उज्जैन, मध्यप्रदेश

0र्तमान समय में देश–विदेश विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है। विभिन्न क्षेत्रों में हमें समस्याओं का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति अधिकतम सुख की चाह में प्रकृति व सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता है जिससे उसको विभिन्न प्रकार की समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं। समस्या है तो उसका समाधान भी है लेकिन आवश्यकता है प्रत्येक व्यक्ति को उसकी तह तक जाकर उसे मिटाने की। इस हेतु बुद्धिप्रधान समाज को ज्यादा सक्रियता निभानी पड़ सकती है।

vkradokn% मानव जाति के विरुद्ध कुछ व्यक्तियों या गिरोहों की हिंसा को आतंकवाद कहते हैं। यह लोकतंत्र के विरुद्ध अपराध है। आतंकवाद आज विश्वव्यापी समस्या बन गया है। आतंकवादी विश्व भर में आतंकी गतिविधियां बनाकर सबको भयभीत और असुरक्षित करना चाहते हैं। हिंसक गतिविधियों द्वारा देश की अखंडता और एकता को नष्ट करना चाहते हैं। कुछ विदेशी ताकतें, कट्टरपंथी ताकतें और अलगाववादी प्रवृत्तियां आतंकवाद को प्रोत्साहन दे रही हैं। ये विश्व में शांति भंग कर सबको भयभीत करना चाहती हैं।

आतंकवाद की समस्या को मिटाने के लिए सरकार को ठोस कदम उठाने चाहिए। सरकार के साथ समाज के आम लोगों को भी आतंकवाद के विरोध में अपनी सक्रियता निभानी पड़ सकती है। वर्तमान में कई आतंकवादी संगठन सक्रिय हैं जिन्हें कुछ देश सहयोग देते हैं। ऐसे देशों के खिलाफ 'संयुक्त राष्ट्र संघ' में प्रश्न उठाना चाहिए।

Ò"Vkpkj % भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बन गया है। आज हमारा देश ही नहीं अपितु समस्त दुनिया में जो भ्रष्टाचार का खेल चल रहा है, वह एक चिंता का विषय है। नीचे से लेकर ऊपर तक बड़े से बड़े विभाग भ्रष्टाचारियों के गढ़ बन गये हैं। छोटे–छोटे कार्यों के लिए भी घूस देनी पड़ती है तभी कार्य पूरा होता है। बड़े मंत्रियों को भी इस भ्रष्टाचार नामक बीमारी ने बुरी तरह से ग्रस्त कर रखा है।

भ्रष्टाचार के निवारण हेतु जन सामान्य को भी जाग्रत होना पड़ेगा। देश के हर नागरिक को अपने चरित्र को उन्नत करके राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व एवं कर्तव्य का भली प्रकार निर्वाह करना है। लोगों को कदम–कदम पर तर्क होना पड़ेगा। रिश्वत देने वाले व लेने वालों के प्रति विरोधात्मक कदम उठाने चाहिए। भ्रष्ट व्यक्ति को हवालात में भेजकर कठोर कारावास देना चाहिए। भ्रष्टाचार के खिलाफ जन आंदोलन करना चाहिए।

cjkstxkjh % बेरोजगारी एक ऐसा राक्षस है जो युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास विहीन बना रहा है। जनसंख्या वृद्धि ने बेरोजगारी को जन्म दिया। सब समस्याओं में से सबसे ज्वलंत बेकारी की समस्या है। लाखों की संख्या में शिक्षित युवा बेरोजगारी का भार झेल रहे हैं। योग्यता के अनुसार काम न मिलने पर उन्हें छोटे–मोटे कामों से संतोष करना पड़ता है। बेकारी समाप्त होने के स्थान पर दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती चली जा रही है। बेरोजगार व्यक्ति के लिए जीने का कोई विकल्प शेष नहीं बचता।

बेरोजगारी निवारण हेतु सरकार को भारी मात्रा में रोजगार के अवसर खोलने चाहिए। नये–नये पदों का सृजन करना चाहिए व रिक्त पदों की द्रुतगति से नियुक्तियाँ करनी चाहिए। बेरोजगारी के निवारण हेतु आज की शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करना होगा। शिक्षा को व्यवसाय से

जोड़कर रोजगार–परक बनाना होगा। शिक्षितों को नौकरी की अपेक्षा स्वयं का व्यवसाय चलाने के लिए प्रोत्साहन देना होगा। किसानों की उपज की क्षमता बढ़ाने के लिए स्पर्धा को बढ़ावा देना होगा। कृषि से संबंधित उपकरणों को क्रय करने की सुविधा भी जुटानी होगी। अधिक से अधिक रोजगार उन्मुख कार्य किए जाने चाहिए।

i;koj.k çn"k.k % मनुष्य के स्वार्थ, उसकी नासमझी और प्रगति की अंधी दौड़ के कारण पर्यावरण दूषित होता जा रहा है। पर्यावरण ह्रास को रोकना जीवन की गुणात्मकता ही नहीं, जीवन को बनाएं रखना भी जरूरी है क्योंकि प्रदूषण मानव जीवन के लिए बड़ा खतरा है। बिना सोचे समझे पेड़ों की कटाई से वायुमंडल में ऑक्सीजन की कमी आई है जिससे अनेकानेक बीमारियों का जन्म हुआ है। सरकार व जन सामान्य में प्रदूषण की रोकथाम के लिए चेतना जाग्रत करना भी परमावश्यक है। जहरीली गैसों को वायुमंडल में जाने से रोकना चाहिए। मृदा प्रदूषण को रोकने के लिए कूड़ा–करकट को यथा संभव नष्ट करें व प्लास्टिक का प्रयोग निषेध करें।

egxkÃ % महंगाई वर्तमान की एक विकराल समस्या है। उत्पादन की क्षमता में कमी होने से चारों तरफ महंगाई का सामना करना पड़ रहा है। जनसंख्या वृद्धि ने इसको जन्म दिया है। यह तेज गति से बढ़ती जा रही हैं। महंगाई की समस्या के समाधान हेतु अधिक से अधिक उत्पादन क्षमता बढ़ानी होगी। कम से कम आयात करवाना होगा। अतिआवश्यक वस्तुओं का निर्माण अपने देश में करना होगा। फिजूल वस्तुओं के उपयोग में कटौती करनी होगी।

v/kfo'okl % वर्तमान ग्रामीण अँचल आज भी कई प्रकार के अंधविश्वासों पर भरोसा करते हैं जिससे समाज को कई हानियों का सामना करना पड़ता है। लोग जादू–टोटके, झाड़–फूंक और अन्य अंधविश्वास के चक्कर में आकर अपना धन और समय बर्बाद करते हैं। अंधविश्वास को अशिक्षा ही जन्म देती है। लोग जिन रूढ़ीवादी बातों पर विश्वास करते हैं, उनको ऐसी बातों के बारे में समझायेंगे तथा ऐसी अंधविश्वासी बातों से हटाने का प्रयास करेंगे।

vf'k{kk% ग्रामीण अंचलों में आज भी अशिक्षा के परिणामस्वरूप बिना आधार के लोग कुछ भी बातों को अंधा बनकर अपनाते रहते हैं। जिसके कारण कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जैसे–गांवों के लोग लड़की को पढ़ाना उचित नहीं समझते हैं, लड़के के जन्म को अति आवश्यक मानते हैं और लड़की के जन्म को ही न मानते हैं। अशिक्षा के निवारण हेतु अति आवश्यक है कि गांव के लोगों में शिक्षा का प्रसार करें। अशिक्षा को मिटाने के लिए सरकार द्वारा चलाये गये अभियान में भाग लें और उस अभियान को सफल बनाएं।

tula[;k o`f)% जनसंख्या वृद्धि भी वर्तमान में पूरे विश्व के लिए एक गंभीर समस्या के रूप में उभर कर सामने आयी है। जनसंख्या वृद्धि के परिणामस्वरूप समाज में कई प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो गईं खाद्यान्न, निवास तथा रोजगार को लेकर भी इसका दुष्परिणाम देखने को मिला है। जनसंख्या के निवारण हेतु हमें लोगों को अधिक से अधिक संख्या में जाग्रत करना पड़ेगा। परिवार नियोजन की शिक्षा देना समाज में अति आवश्यक हो गया है।

ngst çFkk% दहेज प्रथा वर्तमान समाज में एक ऐसा राक्षस है जो सभी के गले में फाँस के समान चुभ रहा है। आज कन्या की योग्यता का मूल्यांकन मात्र दहेज रह गया है। कन्या की शिक्षा, गुण व योग्यताएँ गौण हैं। निर्धन माँ–बाप की पुत्रियां आज कुंवारी तथा निराश हैं। निर्धन माता–पिता के लिए तो कन्या का जन्म मृत्यु के आमंत्रण सदृश हैं।

उपरोक्त बिंदुओं के समाधान से ही हम एक शांत और सुखी विश्व की कल्पना कर सकते हैं। इन समस्त बिंदुओं के समाधान के लिए बड़े–बड़े लेख लिखे गए हैं। लेखनी मात्र से समस्या का निदान नहीं हो सकता है। हमें कथनी व करनी में अंतर खत्म करना होगा। राष्ट्र के प्रति प्रेम, विश्व–बंधुत्व की भावना का विकास तभी संभव है जब नागरिकों में नैतिक चरित्र का निर्माण हो। यदि यह सब होता है तो निश्चित ही हम इन "युगीन समस्याओं का समाधान" आसानी से कर सकते हैं। ✿

मादक पदार्थों पर लगे पूर्ण प्रतिबंध

◈ **i|tk 'kek** 12वीं
कमल पब्लिक स्कूल
डी. ब्लॉक, विकासपुरी, दिल्ली

नशीली दवाओं के दुर्व्यसन का महारोग आज विश्वव्यापी बन गया है। आज संसार में जितने लोग इनका सेवन कर रहे हैं, उतने लोगों ने पहले कभी भी इनका सेवन नहीं किया। सबसे चिंता की बात यह है कि आज नवयुवकों, स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले कच्ची आयु के बालकों में इन दुर्व्यसनों ने अपने पैर जमा लिए हैं।

çत्येक प्रगतिशील देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। युगीन समस्याओं का अर्थ है वर्तमान युग की समस्याएँ। वर्तमान समय में हमें काफी गंभीर समस्याओं से जूझना पड़ रहा है, जैसे दहेज प्रथा, मादक पदार्थों का सेवन, आतंकवाद, निरक्षरता, भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, मुनाफाखोरी और कालाबाजारी आदि। यह ऐसी समस्याएं हैं जिनका निवारण होना अत्यंत आवश्यक है। इनके निवारण के द्वारा हमारे समाज में नैतिक मूल्य स्थापित हो सकते हैं। कुछ समस्याएं व उनसे निपटने के उपाय भी नीचे दर्शाए गए हैं।

eknd inkFkk dk lou% नशीली दवाओं के दुर्व्यसन का महारोग आज विश्वव्यापी बन गया है। आज संसार में जितने लोग इनका सेवन करे रहे हैं, उतने लोगों ने पहले कभी भी इनका सेवन नहीं किया। सबसे चिंता की बात यह है कि आज नवयुवकों, स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ने वाले कच्ची आयु के बालकों में इन दुर्व्यसनों ने अपने पैर जमा लिए हैं।

पाश्चात्य क्षेत्रों की ही भांति भारत में भी यह महारोग तीव्र गति से फैल रहा है और स्थिति दिन पर दिन बदतर होती जा रही है। सार्वजनिक

रूप में मादक पदार्थों पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाकर इसके दुरूपयोग को रोका जा सकता है। अणुव्रत आचार संहिता का यह सिद्धांत 'मैं मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करूँगा', हमें इस जानलेवा समस्या को दूर करने की प्रेरणा देता है।

ngst leL;k% विवाह में कन्या पक्ष की ओर से वर पक्ष में जो उपहार तथा पुरस्कार स्वरूप वस्तु या धन दिया जाता है वह दहेज कहलाता है। राजा–महाराजाओं एवं उच्च कुलों में पनपने वाली यह प्रथा आज जोक की भाँति भारतीय समाज को आक्रांत कर रही है। आज यह प्रथा घृणित रूप लिए हुए है। हमें इस कोढ़ रूपी प्रथा से छुटकारा पाने के लिए स्त्री शिक्षा पर बल देना चाहिए, साथ ही साथ अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिए। अणुव्रत आचार संहिता का यह सिद्धांत है कि मैं दहेज से युक्त विवाह नहीं करूँगा, हमें इस कोढ़ को दूर करने की प्रेरणा देता है।

Ò"Vkpkj % किसी भी देश या समाज की उन्नति का आधार–स्तंभ वहाँ के निवासियों की सच्चरित्रता, परिश्रमशीलता तथा उनके नैतिक मूल्य होते हैं। हमारे देश ने ही विश्व को मानवता, नैतिकता और सदाचार का पाठ पढ़ाया था। पर आज पूरे देश में चारों ओर स्वार्थ, लोभ और बेईमानी का बोलबोला है। भाई–भतीजावाद, मिलावट, अनुचित प्रयोग भ्रष्टाचार के प्रमुख कारण हैं। इसके कारण देश खोखला होता जा रहा है। अणुव्रत का यह सिद्धांत है कि मैं तोड़फोड़ नहीं करूँगा, धार्मिक सद्भावना आदि किसी भी अणुव्रती को प्रेरणा देने में सक्षम है।

tkfr&ikfr % आज विश्व में अनेक धर्म हैं। सभी धर्म हमें प्रेम, शांति और भाईचारे का पाठ पढ़ाते हैं। कोई भी धर्म हो जैसे हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि ये सभी अपनी–अपनी मान्यताओं और आस्थाओं एवं विश्वासों पर आधारित हैं। सद्भावना, समानता और उदारता की भावना को विकसित करना ही उनका मुख्य उद्देश्य है। 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' यह पंक्ति अपने आप में गूढ़ अर्थ समेटे हुए है।

कोई भी धर्म मारकाट या अहिंसा करने की शिक्षा नहीं देता। अर्थात् हमें जाति–पाति के भेदों में विश्वास नहीं रखना चाहिए, मिलजुल कर रहना

चाहिए क्योंकि यदि हम अपने देश में ही जाति–पाति को लेकर लड़ते–झगड़ते रहेंगे तो विदेशी ताकतें इसका फायदा उठाती रहेंगी। धार्मिक सद्भावना के सिद्धांत को अगर एक अणुव्रती अपना ले तो देश में जाति–पाति की समस्या ही खत्म हो जाए। अणुव्रत का सिद्धांत हमें कुछ ऐसा सिखाता है जिससे हम इन गंभीर समस्याओं को हल कर छुटकारा पाने में कामयाब हो सकते हैं।

lek/kku dh jkLrs %

- सरकार खर्च नियंत्रित करे, खर्च पर नजर रखी जाए।
- भारी घाटे का बजट न बनाया जाए।
- सरकारी परियोजनाओं पर होने वाले खर्च पर कड़ी निगरानी रखी जाए।
- सरकारी प्रशासन में चाहे औद्योगिक लाइसेंस विभाग हो, आयकर विभाग हो या कम्पनी कानून विभाग हो, वरिष्ठ अधिकारियों के स्वविवेक अधिकार समाप्त या न्यूनतम कर दिए जाए। इन्हीं से पक्षपात, भ्रष्टाचार और कालाधान पैदा होता है।
- कर व्यवस्था यथार्थवादी हो, करों की दरें भारी न हों, ऐसा होने पर लोग कर–अपवंचन नहीं करना चाहेंगे।
- कर–अपवंचन के लिए सजा कठोर हो।
- विधान मंडलों, सरकारी विभागों, संस्थाओं, न्याय व्यवस्था जैसी सभी संस्थाओं में काम अच्छा हो, समय पर हो और प्रशासनतंत्र खुला हो। ऐसा होने पर भ्रष्टाचार व पक्षपात की गुंजाइश कम हो जाएगी।

अतः यह कहा सकता है कि अणुव्रत मानवता की महान् देन है। इसके द्वारा व्यक्ति आत्म–विश्लेषण करके समाज की हर समस्याओं का समाधान कर सकता है। इस महान् क्रांतिकारी और शांतिपूर्ण परिवर्तन के द्वारा कई युगों तक आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का नाम सर्वोपरि रहेगा। उनको पथ–प्रदर्शक मानकर ही मानव–जीवन सुखमय और खुशहाल रहेगा। अणुव्रत सिद्धांत के द्वारा नवीन एवं सभ्य समाज की स्थापना हो सकती है। मानव कल्याण के लिए अणुव्रत एक वरदान रूपी सिद्धांत है। ✿

देश की बेकारी की समस्या से निपटने के लिए शिक्षा-पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन करना होगा। हमारी शिक्षा व्यवसाय लक्ष्यीय होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा नए लोगों में कार्य शक्ति का विकास करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगी तथा इनमें उद्यम की भावना का भी जागरण होगा।

जब से मनुष्य बना, तब से समस्याएं

◈ **fç;ìdk** 9वीं,
बिट्स इंटरनेशनल स्कूल, भिवानी
हरियाणा

thवन है तो समस्याएं भी हैं। समस्याएं है तो समाधान भी कहीं निकलेंगे। देखना यह है कि समस्यएं कौन पैदा करता है। इनका जिम्मेदार कौन है। कैसे इन्हें दूर किया जा सकता है? इन प्रश्नों का हल खोजने के लिए पहले हमें समस्याएं जाननी होंगी। उसके बाद इनके प्रभाव व निराकरण के उपाय भी ढूढंने होंगे। ऐसी ही कुछ समस्याएं निम्न वर्णित हैं और उनके उपाय भी सुझाएं गए है ताकि मनुष्य के साथ–साथ राष्ट्र भी उन्नति कर सके:

tul[;k e of) % जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना अनिवार्य है। यह सच है कि इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं। जनसंचार माध्यमों द्वारा परिवार नियोजन के संबंध में व्यापक प्रचार कार्य किया गया है और किया जा रहा है। अनेक समाज सेवी संस्थाएं भी इस दिशा में कार्य करत रही हैं। विवाह की आयु निश्चित की गई हैं। परिवार में एकमात्र संतान लड़की होने पर सरकार की ओर से अनेक सुविधाएं दी जा रही हैं, फिर भी आशानुरुप सफलता नहीं मिल पाई है। यह केवल सरकार का ही नहीं नागरिकों का भी कर्तव्य है कि वे सजग प्रयास करें।

cjkstxkjh dh leL;k o mik;% बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए हमें अनेक कारणों से निपटना होगा। कृषि का समुचित विकास आवश्यक है। शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन करके उसे व्यवसाय से जोड़ा जाए, जनसंख्या नियंत्रण के लिए सजग प्रयास हों साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए एक व्यापक रोजगार नीति अपनाई जाए ओर सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में उत्पादक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर रोजगार में नए अवसर उपलब्ध करवाए जाएँ। सरकार द्वारा इस संबंध में अनेक उपाय किए जा रहे हैं किंतु और अधिक सजग प्रयासों की आवश्यकता है।

i;koj.k dh leL;k o mik;% पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रदूषण की समस्या को सुलझाया जा सकता है। वनरोपण तथा वृक्ष लगाने से यह समस्या कम हो सकती है। जनसंख्या वृद्धि पर हमें अंकुश लगाना होगा। अणु। परमाणु परीक्षणों पर रोक लगानी चाहिए। रासायनिक पदार्थों का उपयोग कम करना होगा। शेर करने वाले वाहनों पर नियंत्रण रखना होगा। यह प्रयास केवल एक व्यक्ति को नहीं बल्कि हम सबको मिलकर करना है। ताकि युगों–युगों तक मानव का अस्तित्व बना रह सके। यदि हम वे सब कर पाने में अक्षम रहे तो आने वाले वर्षों में हमारी जीवन दुर्लभ हो जाएगा।

cdkjh dh leL;k o mik;% देश की बेकारी दूर करने के लिए कृषि का समुचित विकास आवश्यक है। इसके लिए किसानों को प्रशिक्षण, उन्नत बीज, उत्तम खाद तथा कृषि यंत्रों का प्रबंध और सिंचाई की सुविधाओं को विस्तार आवश्यक है। हर्ष का विषय है कि हमारी सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है तथा हमने कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है, बेकारी के निवारण के लिए देश का औद्योगिक विकास भी आवश्यक हैं। हमारे देश में कृषि और औद्योगिक उत्पादन के लिए असीम सभावनाएं हैं। श्री एम. एल. डार्लिंग ने हमारे देश के संबंध में कहा है– "भारत के विषय में सबसे रोचक तथ्य यह है कि उसकी मिट्टी धनी है किंतु उसके निवासी निर्धन हैं।"

देश की बेकारी की समस्या से निपटने के लिए शिक्षा–पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन करना होगा। हमारी शिक्षा व्यवसाय–लक्ष्यीय होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा नए लोगों में कार्य शक्ति का विकास करके उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगी तथा इनमें उद्यम की भावना का भी जागरण होगा। बेकारी की समस्या से जूझने के लिए बढ़ती हुई जनसंख्या पर भी रोक लगानी परमावश्यक है अन्यथा सारी योजनाएँ विफल हो जाएंगी। आवश्यक है कि सरकार समूचे राष्ट्र के लिए एक व्यापक तथा अच्छी तरह से सोची समझी रोजगार नीति अपनाए तथा सारी अर्थव्यवस्था को रोजगारोन्मुखी बनाया जाए। इसके लिए देश में सरकारी तथा निजी क्षेत्रों में उत्पादक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया जाए।

egxkÃ dh leL;k o mik;% बढ़ती महँगाई पर अंकुश रखने के लिए सक्रिय राष्ट्रीय नीति की आवश्यकता है। यदि निम्न और मध्यम वर्ग के लोगों को उचित दाम पर आवश्यक वस्तुएं नहीं मिलेंगी तो असंतोष बढ़ेगा। और हमारी स्वतंत्रता के लिए पुनः खतरा उत्पन्न हो जाएगा।

çkÑfrd vkink,a o mik;% मौसम की चेतावनी देकर बचाव कार्य तथा प्राथमिक उपचार के बारे में विशेष प्रशिक्षण देकर लाखों लोगों की जान बचाई जा सकती है। आपादारोधी इमारतों का निर्माण करना तथा विद्यमान इमारतों की मरम्मत तथा नवीनीकरण अत्यंत आवश्यक है। केंद्रीय स्तर पर जहाँ वस्तुओं और वित्तीय संसाधनों की पूर्ति की जाती है, वहाँ आपदाओं से निबटने का मुख्य दायित्व राज्य सरकार का है। जिला प्रशासन सभी गतिविधियों का केंद्र बिंदु होता है।

इसके अतिरिक्त अनेक छोटे–बड़े संगठन भी निरंतर सहायता एवं बचाव कार्यों में लगे रहते है। अपने मोहल्लो के लोगों के साथ मिलकर पहले से ही सुरक्षा योजनाएं बना ली जानी चाहिए और समय–समय पर उनका अभ्यास करना चाहिए। लोगों को जागरुक करने के लिए अनेक अभियान चलाए जाने चाहिए। समाज में इन आपदाओं से संबंधित सावधानी बरतने तथा उचित जानकारी पहुंचाने के लिए सबसे अच्छा उपाय हैं–विद्यालयों में बच्चों को जागरूक करना।

हम प्राकृतिक आपदाओं को रोक तो नहीं सकते किंतु समुचित व्यवस्था और संगठित उपायों से इनके हाानिकारक प्रभाव को कम अवश्य कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त संकट के समय हमें साहस व धैर्य से इनका सामना करना चाहिए।

ufrd eY;ksa dh leL;k o mik; % हमारा कर्तव्य है कि पतन का मुख्य कारण है तथा नैतिक उन्नति ही देश की उन्नति की आधारशिला। हमारा कर्तव्य है कि हम एकजुट होकर, कृत संकल्प होकर, निष्ठा से, ईमानदारी से नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का बीड़ा उठाएं और देश की अखंडता तथा एकता की रक्षा करके उसे सिरमौर बनने का प्रयत्न करें।

vkradokn dh leL;k o mik; % इस समस्या से मुक्ति पाने के लिए जरुरत है कि पूर्व नियोजित और समुचित नीति की जिससे इस दानव को प्रबलत और निर्ममता के साथ कुचला जा सके। यह नीति आपसी सहयोग और शांतिप्रिय देशों की सरकारों के सक्रिय समर्थन से ही कारगार हो सकती है। यदि समय रहते इस घातक समस्या से छुटकारा नहीं पाया गया तो यह जहर परस्पर वैर–विद्वेष को जनम दे सकता है। और विश्व का ध्रुवीकरण साम्प्रदायिक आधार पर हो सकता है, जो विश्व शांति के लिए एक बड़ा खतरा हो सकता है।

ngt çFkk dh leL;k o mik; % दहेज की समस्या का समाधान जनजागरण से ही हो सकता है। प्रचार माध्यमों द्वावरा यह जागरुकता उत्पन्न की जानी चाहिए कि दहेज लेना व्यक्ति की गरिमा, मर्यादा और स्वाभिमान के प्रतिकूल है। यह व्यक्ति के पौरुष कलंक है। जो लोग दहेज के बिना विवाह का आदर्श प्रस्तुत करें। उनका सार्वजनिक रुप से अभिनंदन किया जाए। माता–पिता लड़कियों को सुशिक्षित करके पुरुषों पर उनकी आर्थिक निर्भरता को कम करें। इस बुराई का अंत तभी किया जा सकता है जब तक युवक युवतियां यह प्रण करें कि न दहेज लेगें न देगें। दहेज प्रथा की यह बुराई कुछ हद तक कम हुई है लेकिन पूरी तरह नहीं।

lkEçnkf;drk dh leL;k o mik; % साम्प्रदायिकता की इस समस्या

पर रोक लगानी होगी अन्यथा यह समस्या इतना विकराल रूप धारण कर लेगी जिस पर नियंत्रण करना असंभव हो जाएगा। इस समस्या का समाधान तब तक हो सकता जब तक धर्मांध लोग दूसरे धर्मों के प्रति आदर करना व सम्मान की भावना नहीं आती। कवि, लेखक, पत्रकार एवं साहित्यकार भी अपनी रचनाओं के माध्यम से साम्प्रदायिकता के विरुद्ध अपनी लड़ाई लड़ सकते हैं। एवं जनता के हृदय को परिवर्तित कर सकती।

Ò"Vkpkj dh leL;k o mik; % भ्रष्टाचार के इस रोग से मुक्ति पाने के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति शिक्षा के प्रचार–प्रसार व नैतिक मूल्यों के विकास की आवश्यकता है। समाज के नियमों का पालन करने के लिए परिवार तथा विद्यालय में संस्कार दिए जाने चाहिए प्रशासन को स्वयं नियमों की कठोरता से पालन करना चाहिए। हर भ्रष्टाचारी को उचित दंड दिया जाना चाहिए ताकि दूसरों को भी सबक मिले। चारित्रिक और नैतिक दुर्बलता को त्यागकर निष्ठा का दामन थामना चाहिए। ऐसा करके भ्रष्टाचार के रावण को खत्म किया जा सकता है।

Ò.kgR;k dh leL;k o mik; % भ्रूण हत्या करने से लड़की का पाप तो अलग से होता ही साथ में जब आप लकी नहीं बचाएगें तो बहू कहां से लाएंगे। अगर ऐसे ही भ्रूणहत्याएँ चलती रही तो आगे लड़कियों की बहुत कमी आएगी। आधुनिक समय में व्यक्ति गर्भ के अंदर बच्चे का लिंग परीक्षण करवाते हैं। कन्या भ्रूण का पता लगाने पर की हत्या डॉक्टर द्वारा करवा देते हैं। जिसके बदले में डॉक्टर को मोटी रकम देनी पड़ती है। इस समस्या को बढ़ावा देने वालों को कानून की कड़ी से कड़ी सजा देनी चाहिए या फिर मृत्युदंड दिया जाना चाहिए और नन्हीं बेकसूर जान को इस हरी–भरी धरती को देखने का मौका मिलना चाहिए।

çfrÒk iyk;u dh leL;k o mik; % यह हमारे देश के लिए बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। आज के युवक विदेशों में जाकर नौकरी करना अच्छा समझते हैं। जिसके कारण हमारा देश पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाता। इसके लिए यह अति आवश्यक है कि इस प्रतिभा पलायन को रोका जाना चाहिए। उन्हें यही पर योग्यतानुसार सुविधाएँ व वेतन दी जानी चाहिए। ✿

सजग प्रहरी बनना होगा जनता को

◈ fuf/k lkuh 11वीं
एम. एम. पब्लिक स्कूल
पीतमपुरा, दिल्ली

जब विविध संप्रदाय अपने प्रति अंधभक्ति रखकर दूसरे संप्रदायों के प्रति घृणा, द्वेष और हिंसा से भर उठते हैं तो सांप्रदायिकता की भावना का जन्म होता है। दूसरे शब्दों में संप्रदाय का असहिष्णु हो उठना ही सांप्रदायिकता है। सांप्रदायिकता की समस्या संपूर्ण विश्व में फैली हुई है। अमेरिका, इंग्लैंड में रोमन कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटो के मध्य आपसी झगड़े चलते रहते हैं।

सृष्टि के आरंभ से ही मनुष्य अनेकानेक संकटों को झेलता रहा है। सृष्टि में होने वाले अचानक परिवर्तनों का मनुष्य के पास कोई हल नहीं होता। समस्याओं और मनुष्य में परस्पर वही संबंध हैं जो समुद्र और एक बूंद में, धरती और एक धूलकण में, आकाश और एक नक्षत्र में, उद्यान और उसके फूल में होता है।

भ्रष्टाचार, प्राकृतिक विपदाएँ, प्रदूषण, बेकारी की समस्या, बाल मजदूरी, धन अर्जन की अंधी दौड़, सांप्रदायिकता, आरक्षण, विश्व अशांति आदि ऐसी समस्याओं की सूची इतनी लंबी है जितनी 'ग्रेट वॉल ऑफ चाइना' नामक दीवार। जिन ज्वलंत समस्याओं के कारण भारतवर्ष का चेहरा अभी तक उदास है, उनमें से एक समस्या है बेकारी।

cdkjh % बेकारी का अर्थ है किसी व्यक्ति की योग्यता के अनुसार उसे आजीविका न मिलना। भारतवर्ष में यह बेराजगारी विविध रूपों में प्रकट है। इसका पहला कारण है औद्योगीकरण। इसका दूसरा कारण जनसंख्या वृद्धि। बेरोजगारी और अशांति का चोली–दामन का साथ है। खाली दिमाग शैतान का घर। बेकारी की समस्या का उपाय किसी के पास

नहीं है क्योंकि इसकी जड़ें बहुत गहरी हैं। कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं–श्रम के प्रति गौरव, कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन, जनसंख्या–वृद्धि पर नियंत्रण, रोजगार के अवसर आदि।

xjhch % गरीबी मानव के विकास में सबसे पहली और बड़ी बाधा है। गरीबी के कारण मानव पशुत्व तक सीमित रह जाता है। उसके कदम उन्नति की पहली सीढ़ी पर ही अटके रह जाते हैं। जीवन के सभी सुख गरीब आदमी के लिए अनुपलब्ध रहते हैं। अपना जीवन उसे अभिशाप लगने लगता है। आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए गरीब को संघर्ष का रास्ता अपनाना पड़ेगा, तभी सरकार के कान पर जूँ रगेंगी और गरीबों के लिए प्रगति का मार्ग खोलेगी।

Ò"Vkpkj % भ्रष्टाचार का शाब्दिक अर्थ है गिरा हुआ व्यवहार। स्वार्थ और लोभ के कारण किया गया अमानवीय व्यवहार भ्रष्टाचार कहलाता है। प्रधानमंत्री से लेकर चपरासी तक इसका फैलाव है। किसी विशेष वर्ग के प्रति पक्षपात और अन्याय के प्रति जो उपेक्षा रखता है वही भ्रष्टाचारी है। भारत में आज सर्वत्र भ्रष्टाचार का बोलबाला है। भ्रष्टाचार के दानव से लड़ने के लिए सरकार व जनसामान्य दोनों को कमर कस कर खड़ा होना पड़ेगा।

सबसे पहले राजनेताओं को अपने स्वार्थ त्याग कर स्वार्थी व्यवहार छोड़ना पड़ेगा क्योंकि सबसे अधिक उन्हें ही भ्रष्ट माना जाता है। जनता को इसका खुलकर विरोध करना चाहिए। भ्रष्टाचारियों को दंड देने के लिए सरकार को कठोर कानून बनाने चाहिए। स्टिंग आपपेशन को कानूनी मान्यता दी जाए।

lkçnkf;drk % जब विविध संप्रदाय अपने प्रति अंधभक्ति रखकर दूसरे संप्रदायों के प्रति घृणा, द्वेष और हिंसा से भर उठते हैं तो सांप्रदायिकता की भावना का जन्म होता है। दूसरे शब्दों में संप्रदाय का असहिष्णु हो उठना ही सांप्रदायिकता है। सांप्रदायिकता की समस्या संपूर्ण विश्व में फैली हुई हैं। अमेरिका, इग्लैंड में रोमन कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटो के मध्य आपसी झगड़े चलते रहते हैं।

भारत धर्मनिरपेक्ष राज्य है, अतः यहाँ विभिन्न संप्रदाय हैं। इस कारण यहाँ सांप्रदायिकता की समस्या अधिक संवेदनशील है। भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा है हिंदू–मुस्लिम वैमनस्य का। ये दोनों धर्म चकमक पत्थर की भांति हैं। जब भी यह टकराते हैं तो भीषण नरंसहार का दृश्य उपस्थित होता है। सांप्रदायिकता का सबसे बड़ा कारण है कुटिल राजनीति। कोई भी धर्म दूसरे से लड़ने की बात नहीं कहता परंतु जब राजनीतिज्ञ धर्म को हथियार बनाकर सत्ता और वोट की राजनीति खेलते हैं तो यह समस्या उग्र हो उठती हो।

सांप्रदायिकता फैलने का दूसरा कारण है विदेशी षड्यंत्र। सांप्रदायिकता का तीसरा कारण है धर्मों का निजी उन्माद। प्रत्येक धर्म अपनी वृद्धि और दूसरे की हानि में अपना सुख देख रहा है। इसलिए वातावरण नित्य जहरीला होता जा रहा है। सांप्रदायिकता का समाधान तभी हो सकता है जब आम जनता कुटिल राजनेताओं, मठाधीशों–मुल्लों–पादरियों की चालों को समझ कर उनके बहकावे में न आए। यदि देश के नागरिक सचेत हो जाएँ तो विदेशी षड्यंत्र हमारा बाल बाँका नहीं कर सकते। शिक्षा का प्रसार होने से संभवतः समस्या का निदान हो जाए किंतु यह शिक्षा मदरसों की धार्मिक शिक्षा न होकर राष्ट्रीयता की होनी चाहिए।

उपर्युक्त सभी समस्याएँ मानवजनित हैं। इनका हल भी मानव के हाथों में ही दें। यदि वह दृढ़ संकल्प करे कि वह ईमानदारी से इन समस्याओं के समाधान को स्वीकार करे तथा उनका पालन करे तो धरती पर उसका जीवन अधिक सरल हो जाएगा। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक आसान उपाय है कि हम अहिंसा के मार्ग को अपनाने का अणुव्रत लें क्योंकि अणुव्रती कभी भी आतंक और हिंसा का सहारा नहीं लेता, वह अहिंसा के मार्ग पर चलने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति मन, कर्म और वचन से अहिंसा को अपनाता है और जीवन पर्यंत न हिंसा करता है न दूसरों को करने देता हे। ऐसे लोग ही विश्व में शांति लाने के लिए अहिंसा का मार्ग अपनाते हैं। इस मार्ग पर चलकर स्वतः खत्म होने लगेंगी समस्याएं। ✿

हमें अणुव्रत की शिक्षा उन पथभ्रमित लोगों तक पहुँचानी होगी जिन्हें समाज में आतंकी के रूप में पहचान मिली होगी। अब मैं उन्हें आतंकी नहीं कहूँगा, क्योंकि वे तो सिर्फ राह से भटक गए हैं कि मुश्किलों से टकराकर ही हमें मंजिलें मिलती हैं।

पथ भ्रमित लोगों तक पहुंचाना होगा अणुव्रत

◈ nhidkr 'kekl 11वीं ए
लवली पब्लिक सी. सै. स्कूल
लक्ष्मीनगर, दिल्ली

,क सुबह मेरी आँख खुली और मैंने पत्रिका उठाई बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा था 'एक और आतंकी हमला।' तारीख मुझे याद नहीं और वैसे भी क्या फर्क पड़ता है तारीख से? यह सब तो आए दिन होता ही रहता है और हम एक दिन शोक और शुक्र मनाकर अपने जीवन को आगे बढ़ाने में लग जाते हैं।

मैं समझता हूँ कि यह समस्या यहीं समाप्त नहीं होती। आज के युग की सबसे गंभीर समस्या है आतंकवाद जिसे जड़ से खत्म करना इंसानियत के लिए अति अनिवार्य हो गया है। मेरे शब्दों पर ध्यान दीजिएगा– मैं आतंकवाद के अंत की बात कर रहा हूँ। परंतु, सवाल उठता है कैसे? उत्तर सभी के पास है 'युद्ध' और सर्वनाश परंतु क्या यह उत्तर सही है? जरा सोचिए कि युद्ध करने से, कोहराम मचाने से लोगों के सर काटने से विश्व शांति प्राप्त हो सकती है? आखिर यह सब है क्या? मेरी माने तो यह सब भी आतंकवाद ही है।

जब सरकार लड़ाई छेड़ती है तो वह भी आतंकवाद ही है। सामान्य आतंकवाद से इस आतंकवाद में सिर्फ एक शब्द का ही अंतर है। सरकार

के द्वारा मचाए कोहराम को हम 'सियासी आतंकवाद' कह सकते हैं। यहाँ हम एक शरीर को तो खत्म कर देते हैं परंतु चार और लोगों में हीन भावना का बीज बो देते हैं। अब आप लोग खुद ही समझदार हैं, बताइए कि यह कैसा सौदा हुआ कि एक आतंकी को पस्त करने के लिए चार और को जन्म दे दिया जाए?

अब जरा मेरी कही बात से इसे जोड़ते हैं, क्या हम युद्ध करके आतंकवाद को समाप्त कर रहे हैं? जी नहीं, कतई नहीं। हम सिर्फ उन आतंकियों को समाप्त करने की कोशिश कर रहे हैं और यह बात तो साबित हो चुकी है कि आतंकियों को समाप्त करने की कोशिश हमें भी एक आतंकी ही बना देती है, वही बना देती है जिन्हें हम समाप्त करने की नाकाम कोशिश करते रहते हैं। इसलिए मैं समझता हूँ कि जो प्रश्न मैंने पहले उठाया था उसका उत्तर युद्ध नहीं है। उसका उत्तर एक ऐसा विचार है जो मात्र छोटे से अंतराल के लिए ही बीमारी को गायब न करे बल्कि बीमारी को जड़ से ही खत्म कर सके।

आतंकवाद का कारण है क्रोध, हिंसा, द्वेष, अपनी भावनाओं पर काबू न कर पाना आदि। जब हम इन सभी लक्षणों को मिला दें तो आतंकवाद नाम की बीमारी जन्म लेती है और आज के युग में इसकी एक ही दवा नजर आती है अणुव्रत। अणुव्रत एक जीवन है वह अपने आप में ही एक बह्मण्ड है, अणुव्रत शांति है अणुव्रत खुशी है। इसी तरह अणुव्रत वह सब है जो मनुष्य की अच्छाई के लिए है।

मेरा मानना है कि अणुव्रत शब्द की भव्यता उसको बाँधने में नहीं है। और मैं ऐसी गुस्ताखी कतई नहीं करना चाहूँगा। परंतु यह जरूर कहना चाहूँगा कि अणुव्रत एक शरीर में इंसानियत फूँक देता है, वह एक व्यक्ति को मनुष्य बना देता है, एक ऐसा मनुष्य जो कभी गलत राह पर जा ही नहीं सकता। अणुव्रत एक शस्त्र है, अपने आप से लड़ने के लिए अपने क्रोध, अपने अहंकार और अपनी बुराइयों से लड़ने के लिए।

हमें अणुव्रत की शिक्षा उन पथ भ्रमित लोगों तक पहुँचानी होगी जिन्हें समाज में आतंकी के रूप में पहचान मिली होगी। अब मैं उन्हें आतंकी

नहीं कहूँगा क्योंकि वे तो सिर्फ राह से भटक गए हैं कि मुश्किलों से टकराकर ही हमें मंजिलें मिलती हैं।

जिन्हें अब भी मेरी बात अर्थहीन लगती है, और जो अब भी यह समझते हैं कि ताकत के जोर पर उन गुमराह लोगों को खत्म करके ही आतंकवाद का अंत संभव है, तो वे जान लें कि इससे बड़ा अधर्म कुछ हो ही नहीं सकता। जब भी कोई शस्त्र विद्या प्राप्त करता है तो वह यह भी कसम लेता है कि वह कभी पहले आक्रमण नहीं करेगा, अपनी विद्या का प्रयोग सिर्फ बचाव के लिए करेगा और कभी इस विद्या से किसी को कत्ल एवं हानि नहीं करेगा। इस बात को किसी भी तरह समझें यह आपकी सोच पर निर्भर करता है, परंतु याद रखें आतंकवाद को समाप्त कर विश्व शांति तो सिर्फ अणुव्रत से ही हासिल की जा सकती है। ✿

डिग्री परीक्षा तक अणुव्रत पढ़ाया जाए

◈ fç;k ioj 10वीं बी
गीता आदर्श विद्यालय, सोलन
हिमाचल प्रदेश

अणुव्रत के कारण बच्चों में पहले से ही संस्कार पड़ जाते हैं और व बुरे मार्गों पर नहीं जाते। वे स्वयं भी अहिंसक बनते हैं और अपने देश को भी सुरक्षित रखने के प्रयास करते हैं। अणुव्रत स्वार्थ और पदार्थ के अतिवाद से बचकर एक समन्वित भूमिका प्रस्तुत करता है।

Vणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है, जीवन शुद्धि का आंदोलन है, संकल्प शक्ति के विकास का आंदोलन है, आत्मदर्शन का आंदोलन है। सम्यक् दर्शन, सम्यक् सकल्प व सम्यक् आचारण अणुव्रत का दर्शन है। कथनी एवं करनी में समानता ही उसका उद्देश्य है।

आज हमारे देश में अनेक समस्याएं पाँव जमा रही हैं। हमारा समाज प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से दो गुटों में विभाजित हो गया है। पहले आतंकवाद का स्वरूप बहुत सीमित था। किसी राजा के विरुद्ध विद्रोह करने, राज्य पर हमला करने तथा किसी गाँव पर हमला करके लूट–पाट करने तक ही आतंकवादियों की कारवाई सीमित रहती थी पर अब तो आतंकवाद ने भीषण स्वरूप धारण कर लिया है। आतंकवाद हमलों में अणुबम तक का उपयोग होने लगा है।

आतंकवाद के कई कारण हो सकते हैं, जैसे– गरीबी एवं बेकारी, धर्मांधता, उदारतावादी दृष्टिकोण का अभाव, समाज के लिए घातक और अपराधपूर्ण व्यवहार। इसके अलावा कुछ सामाजिक तथा राजनैतिक कारण भी हो सकते हैं। आतंकवाद अब सारे विश्व की समस्या बन चुका है।

इस समस्या का समाधान कैसे हो? इस समस्या के समाधान के लिए बहुत से उपाय हैं– जैसे आतंकवादियों को फांसी देना, उनके प्रशिक्षण केंद्र को नष्ट करना आदि। फांसी की सजा देने से एक ही आतंकवादी का खात्मा होगा, एक केन्द्र पर बम डालने से एक ही केंद्र का नाश होगा, इसलिए इस समस्या को जड़ से मिटाने के लिए हमें अणुव्रत का सहारा लेना होगा।

'अणु' यानि 'सूक्ष्म' और 'व्रत' यानि 'संकल्प'। यद्यपि यह शब्द जैन साहित्य से आया है और संहिता से जुड़ा हुआ है। नैतिकता के मामले में जैन–अजैन का विभाजन कोई अर्थ नहीं रखता। अब तक अणुबम के रूप में अणु का नाम काफी विश्रुत हो चुका है। अणुबम संहार करता है। वह संहार का प्रतीक है परंतु अणुव्रत उद्धारक है जिसके कारण समाज में सुधारणाएं आती हैं।

अणुव्रत में मूल्यशिक्षा, संस्कार, आदर, प्रेम, नैतिकता, सत्य, अहिंसा, मानसिक शांति, कम जरूरतें, प्रार्थना आदि बातें सिखाई जाती हैं। अहिंसा वास्तविक सच्चाई है। भगवान महावीर ने कहा– "अहिंसा सब जीवों का कल्याण करने वाली है। जैसे भूखे के लिए भोजन, प्यासे के लिए जल और पक्षी के लिए आकाश का सहारा है, वैसे ही अहिंसा सबके लिए सहारा है।"

अणुव्रत का कहना है हम समाधानी नहीं रहते। अणुव्रत के कारण समाज में बहुत बदलाव आ सकता है। छोटे–छोटे संकल्प करके ही तो बड़ा सुधार आएगा। अणुव्रत ने नैतिकता के लिए आवाज़ उठाई यह किसी भी धर्म संप्रदाय तक सीमित नहीं है क्योंकि अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक आंदोलन है, अतः इस मंच पर प्रायः सभी धर्मों के लोग एकत्र होते रहे हैं। गहरे में देखा जाए तो सर्वधर्म सद्भाव की दृष्टि से अणुव्रत ने एक अनुकूल वातावरण बनाने में काफी मदद की है।

व्यक्ति कैसा बनता है, जैसा वातावरण होता है, परिस्थिति के सांचे में ढलकर ही वह अपने आपको स्थापित करता है। दूरदर्शन आदि देखने के कारण बच्चों में वैसी ही प्रवृत्ति का निर्माण होता है। वे दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले हिंसात्मक पात्रों की तरह बनने की बातें करते हैं।

बच्चों की शिक्षा में अन्य विषयों की तरह अणुव्रत भी होना चाहिए जिससे वह बचपन से ही अच्छा आचरण और अच्छी बातें सीख सकें। डिग्री परीक्षा तक भी अणुव्रत का शिक्षण होना चाहिए, तभी बच्चों के जीवन में अणुव्रत का महत्व होगा।

अणुव्रत के कारण बच्चों में पहले से ही संस्कार पड़ जाते हैं और व बुरे मार्गों पर नहीं जाते। वे स्वयं भी अहिंसक बनते हैं और अपने देश को भी सुरक्षित रखने के प्रयास करते हैं। अणुव्रत स्वार्थ और पदार्थ के अतिवाद से बचकर एक समन्वित भूमिका प्रस्तुत करता है। वह व्यक्ति और समष्टि के बीच एक संतुलन बनाने का प्रयास है। यहीं वह धर्म और नैतिकता से जुड़ जाता है।

आतंकवाद को दूर करने के लिए सरकार की नीति असफल रही है क्योंकि जब देश चलाने वाले ही इसको बढ़ावा देते हैं तो इसका निवारण कैसे संभव है? व्यक्ति प्रेम, शांति, दया, करुणा से जितना प्रभावित होता है, उतना क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष से नहीं। प्रेम, दया, करुणा, शांति अहिंसा का ही प्रतीक हैं। अहिंसक नीति के द्वारा ही देश से आतंकवाद को जड़ से उखाड़ कर फेंका जा सकता है।

प्राचीनकाल से ही भारत में अहिंसा को अपनाया गया है। महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी, इन दोनों ने ही विश्व में भ्रमण किया और समस्त विश्व को अहिंसा व शांति का उपदेश दिया। प्रायः सभी संतों ने अहिंसा को ही परम धर्म माना है। चाहे तुलसी, सूर, कबीर, मीरा, सूफी संत या गुरुनानक देव हों, सभी ने मानवता के साथ अहिंसा को अविभाज्य बना दिया है।

वर्तमान में जैनाचार्य अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा अहिंसा यात्रा पर निरंतर चलना ही आतंकवाद के समाधान का श्रेष्ठ तरीका है। हम लोगों में अहिंसा का प्रचार–प्रसार करें ताकि देश को आतंकवाद के भय से मुक्त कर सकें। अहिंसा स्वयं में एक तकनीकी प्रक्रिया है।

गोली का इलाज यदि गोली से होता तो आज विश्व का इतिहास कुछ और तरह का होता। आतंकवाद को खत्म करने के लिए जरूरत है आपसी समझ, भाईचारे व अहिंसा के शांतिप्रिय मार्ग की। हमें इन छोटे–छोटे संकल्पों को अपने नित्य जीवन में लाना चाहिए जिससे आतंकवाद का ही नहीं, अन्य बहुत सी समस्याओं का समाधान होगा। ✿

छात्रों में किया जाए नैतिकता का संचार

◈ **vuiek ;kno** 8वीं
नवयुग स्कूल, विनय मार्ग
चाणक्यपुरी, दिल्ली

दहेज प्रथा ने मानवता को बड़ा आघात लगाया है। सरकार को माता-पिता द्वारा मनमानीपूर्वक दहेज लेने पर प्रतिबंध लगाना चाहिए। जो लोग खूब दहेज माँगें, उन्हें दण्ड देकर इस दिशा में सुधार करना चाहिए। दहेज प्रथा को भारतीय समाज के माथे पर कलंक के रूप में नहीं रहने देना चाहिए।

gमारे देश में अनेक समस्याएं हैं जैसे– दहेज प्रथा, नारी शिक्षा, नशा, धूम्रपान इत्यादि। विस्तारपूर्वक चर्चा इस प्रकार है :

ukjh f'k{kk % शिक्षा प्राप्त करना मानव का जन्म सिद्ध अधिकार है। शिक्षा के बिना व्यक्ति अधूरा है। पेट तो पशु भी और मानव भी भरते हैं। शिक्षित और अशिक्षित व्यक्ति के जीवन में बहुत अंतर होता है। "बिना पढ़े नर पशु कहलावै" यह बात सच है। माता–पिता को चाहिए की वे लड़कियों का भविष्य सँवारें न कि उनके सपने को तोड़ दें। विवाह के बाद मानों तो उसकी स्वतंत्रता ससुराल में बंद हो जाती है। पुरुषवर्ग बचपन से ही स्वतंत्र होता है। कहीं भी उठ सकता है। आ–जा सकता है। बालक पर नारी के संस्कारों का प्रभाव अधिक पड़ता है। नारी एक घर को नहीं बल्कि दो–दो घरों को शिक्षित करती है, इसलिए नारी का शिक्षित होना ज्यादा जरूरी है।

ngt çFkk % आज दहेज प्रथा को देश भर में बुरा माना जाता है। इसके कारण कई दुर्घटनाएं हो जाती हैं। कितने ही घर बर्बाद हो जाते हैं। आत्महत्याएं भी होती देखी गई हैं। बहुओं द्वारा अपने आप को आग

लगाने की खबरें भी समाचार पत्रों में पढ़ी जाती हैं। पति एवं सास–ससुर भी बहुओं को जला देते हैं। इसलिए दहेज प्रथा को पूरे देश में बुरा माना जाता है।

विवाह के साथ पुत्री को दिए जाने वाले सामान को दहेज कहते हैं। दहेज में पुत्री को सोफा, टी.वी., पलंग, बर्तन, वस्त्र इत्यादि दिए जाते हैं। समाज के लोभी कन्या के पिता की दशा पर कभी ध्यान नहीं दते। वे तो मुहमाँगा दहेज माँगना ही अपना अधिकार समझते हैं। इस प्रकार कभी–कभी कन्या के पिता को मकान, खेत एवं सपत्ति बेचनी पड़ जाती है। दहेज–प्रथा के कारण ही कन्या का जन्म घर में उदासी भर देता है। जैसे–जैसे कन्या बड़ी होती है, माता–पिता की नींद हराम हो जाती है। कहा भी है– "ऐसे बपइया कैसे नींद परत है, जेहि घर कन्या कुँवारी।"

jk"Vh; ,drk% हमारा देश विश्व के मानचित्र पर एक विशाल देश के रूप में चित्रित है। प्राकृतिक रचना के आधार पर तो भारत के कई अलग–अलग रूप और भाग हैं। हमें अपने देश के साथ गद्दारी नहीं करनी चाहिए बल्कि अपने देश के प्रति ईमानदार होना चाहिए। अपने देश के अमन–चैन सुख के लिए कुछ करना चाहिए। सभी भाषाओं को संविधान में मान्यता मिली है। उत्तर भारत का निवासी दक्षिणी भारत के निवासी की भाषा को न समझने के बावजूद उसके प्रति कोई नफरत की भावना नहीं रखता है। तुलसी, सूरदास, कबीर, मीरा, नानक, रैदास, तुकाराम, विद्यापति, रवीन्द्रनाथ टैगोर, ललदेव, तिरुवल्लुवर आदि की रचनाएँ एक–दूसरे की भाषा से नहीं मिलती हैं, फिर भी इनकी भावात्मक–एकता राष्ट्र के सांस्कृतिक–मानस को ही पल्लवित करने में लगी हुई है।

fo|ky; vkSj uSfrd f'k{kk% पहले के समय में बच्चों को स्कूल जाने में बहुत परेशानी होती थी। स्कूल होते ही नहीं थे और होते भी थे। समाज की मर्यादाओं के पालन के लिए आवश्यक है व्यक्ति को सदाचार की शिक्षा समाज के माध्यम से ही मिलती है। सत्य बोलना, अहिंसा का पालन करना, दूसरों की भलाई करना, विनम्रता से बोलना सदाचार के प्रमुख लक्षण हैं। विद्यालय में नैतिक शिक्षा का पाठ अवश्य पढ़ाना चाहिए–सदा सच बोलना, परोपकारी बनों, वफादारी सीखो, साहसी

बनने की बातें सिखाई जाती हैं। रावण महान् विद्वान था, किन्तु आचरण अच्छा न होने के कारण अपना ही नहीं सम्पूर्ण रावण दल को ही नष्ट करा दिया। अतः आचरणहीन व्यक्ति बेकार है।

lek/kku % देश को स्वतंत्र कराने में महिलायें पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलीं और सत्याग्रह में भाग लिया। अकेला पुरुष कुछ नहीं कर सकता। आज नारी पूर्ण रूप से जागृत है और शिक्षा के प्रति सजग है। हमारी सरकार गाँव–गाँव और शहर–शहर में महिला वर्ग के लिए अलग शिक्षा संस्थानों को मान्यता प्रदान कर रही है, जिससे महिलायें शिक्षा प्राप्त कर सकें। आज तो मुक्त कण्ठ से कहा जा रहा है– "पढ़ी–लिखी लड़की, रोशनी घर की।"

दहेज प्रथा ने मानवता को बड़ा आघात लगाया है। सरकार को माता–पिता द्वारा मनमानीपूर्वक दहेज लेने पर प्रतिबंध लगाना जाना चाहिए। जो लोग खूब दहेज माँगें, उन्हें दण्ड देकर इस दिशा में सुधार करना चाहिए। दहेज प्रथा को भारतीय समाज के माथे पर कलंक के रूप में नहीं रहने देना चाहिए।

छात्रों के लिए नैतिकता सफलता का आधार है। छात्र ही आगे चलकर देश का नागरिक होता है। सम्पूर्ण विश्व में भ्रष्टाचार, वर्ग संघर्ष, अलगाव, आतंकवाद बढ़ रहा है। मनुष्य अविश्वासी होता जा रहा है। समाज एवं देश के लिए नैतिक मूल्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। हमारा कर्तव्य है कि हम इसमें सहयोग करें। नैतिकता के अभाव में किसी भी प्रकार का विकास संभव नहीं। अतः नैतिकता का दूसरा नाम है अणुव्रत अभियान। इस अभियान में अपने आपको लगाएं तो समस्याओं से भी छुटकारा पाएंगे। ✿

युवा ही हमारे कल के नेता हैं परंतु आज के युवा पश्चिमी हवाओं से इतनी बुरी तरह प्रभावित हो चुके हैं कि धीरे-धीरे वह अपनी सभ्यता, संस्कृति व संस्कार भूलते जा रहे हैं जिससे हमारे राष्ट्र का बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है।

कानून ही नहीं समस्याओं का समाधान

◈ **e/k xlrk** 12वीं बी
सरस्वती शिशु मंदिर, सैक्टर–ए
साईंनाथ कॉलोनी, इंदौर, मध्यप्रदेश

bश्वर की कृतियों में सबसे श्रेष्ठ रचना मनुष्य है। मनुष्य पृथ्वी पर उपस्थित एकमात्र ऐसा प्राणी है जिसमें विचार करने की क्षमता या सोचने की शक्ति होती है। मनुष्य–जीवन ही श्रेष्ठ कर्म करने के लिए प्राप्त होता है। ऐसे कर्म जिसमें सभी जीवों का हित हो। जो आने वाली पीढ़ी के लिए आदर्श सिद्ध हों। आज जो आदर्श मनुष्य अपनी पीढ़ियों के सामने रख रहा हैं। वह निंदनीय है, जब मनुष्य के स्वार्थ सिद्धान्तों से बड़े होते हैं तभी मनुष्य स्वार्थ पूर्ति के लिए सिद्धान्तों को तोड़ देता है। आज का मनुष्य कम समय में अधिक पाने की चाहत रखता है। मनुष्य में भीतर से सन्तोष की भावना विलुप्त हो गई है। जो अमीर है वह और अमीर होना चाहता है।

;xhu leL;k,¡% वर्तमान समय अनेक समस्याओं से ग्रस्त है, जैसे–व्यसनों का सेवन, भ्रष्टाचार, पर्यावरण प्रदूषण, आतंकवाद, बेरोजगारी आदि। मनुष्य ने अपनी समस्याओं को स्वयं उत्पन्न किया है जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण समस्याएं निम्नलिखित हैं :

- नशीले पदार्थों का सेवन : ऐसे पदार्थ जिसके सेवन से मनुष्य अपनी चेतना खो दे, मादक तत्व कहलाते हैं। नशीले पदार्थों को अधिकांशतः शराब के रूप में ही पहचाना जाता है परंतु आज के अत्याधुनिक युग में इससे भी बड़े नशे आ चुके हैं। इसका नशा एक बार हो जाने पर वह आदतन हो जाता है। ऐसे नशे करने वाला व्यक्ति अपराध तो करेगा। जब वह होश में ही नहीं रहेगा? तो उसे कैसे पता चलने वाला है क्या सही है? और क्या गलत है? आज का व्यक्ति नशा करना शान की बात समझता है परंतु वह व्यक्ति मूर्ख है वह अपने ही हाथों अपना जीवन नष्ट कर रहा हैं।

- संस्कारों की उपेक्षा : युवा ही हमारे भावी कल के नेता हैं परंतु आज के युवा पश्चिमी हवाओं से इतनी बुरी तरह प्रभावित हो चुके हैं कि धीरे–धीरे वे अपनी सभ्यता, संस्कृति व संस्कार भूलते जा रहे हैं जिससे हमारे राष्ट्र का बहुत बड़ा नुकसान हो रहा है। हमारे देश में युवाओं की संख्या 40 प्रतिशत है। कोई वर्ग सबसे ज्यादा प्रतिशत में है तो वह युवा है। जब युवा ही हमारी सभ्यता को जीवित नहीं रखेंगे तो सभ्यता का विनाश सम्भव है। आज अंग्रेजी भाषा का इतना बोलबाला है कि क्या कहें? मैकाले की शिक्षा पद्धति आज भी अपनायी जा रही है जबकि आजादी के 64 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं।

- पर्यावरण प्रदूषण : आसपास के वातावरण में अवांछनीय पदार्थ का मिलना जिससे शुद्धता में कमी हो, पर्यावरण प्रदूषण कहते हैं। अन्धाधुंध वनों की कटाई से पर्यावरण प्रदूषण तो हो ही रहा है साथ ही वन प्रजाति का भी विनाश हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण से ओजोन परत को ज्यादा नुकसान हो रहा है। आज हम वाहनों का अंधाधुंध प्रयोग कर प्रदूषण को और बढ़ा रहे हैं। प्रकृति ईश्वर द्वारा प्रदत्त ऐसी सम्पत्ति है जिसके बिना हम अपूर्ण हैं।

- भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार हमारे देश की ज्वलंत समस्या है जिससे राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति परेशान है। भ्रष्टाचार एक ऐसी दीमक है जो हमारे देश को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रहा है। छोटे से लेकर बड़ा सभी व्यक्ति इस भ्रष्टाचार रूपी दलदल में फँसा है। कुछ तो ऐसे व्यक्ति

हैं जो इस दलदल से बाहर ही नहीं निकलना चाहते। यह सब स्वार्थ पूर्ति का नतीजा है। भ्रष्टाचार न केवल राजनीति अपितु व्यवसाय, फिल्म जगत, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में बहुत ऊपर तक फैल गया है।

v.kqor }kjk lek/kku %

- व्यसन मुक्ति : अणुव्रत–प्रेरित समाज–व्यवस्था में आहार शुद्धि तथा व्यसन–मुक्ति को स्थान मिलना एक सहज बात है। इस दृष्टि से हजारों लोगों को व्यसन मुक्त बनाकर स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा दी जा रही है।

- संस्कार निर्माण : अणुव्रत का मानना है कि इस दृष्टि से दो स्तरों पर कार्य करना होगा। एक ओर जहाँ अछूत समझी जाने वाली जातियों के संस्कारों को शुद्ध कर उनको हीन भावना से मुक्त करना होगा वहीं दूसरी ओर अपने आपको उच्च समझने वाले लोगों के मन से घृणा के संस्कारों को दूर करना होगा। इस दृष्टि से अणुव्रत के अन्तर्गत संस्कार निर्माण का एक पूरा कार्यक्रम चल रहा हैं।

Hk"Vkpkj l efDr % भ्रष्टाचार को रोकने के लिए अनेक उपाय किए जा रहे हैं जिनमें वर्तमान समय में लोकपाल विधेयक प्रमुख है। इससे न केवल भ्रष्टाचार कम होगा बल्कि अपराधों पर भी रोक लगेगी। भ्रष्टाचार के विरूद्ध कार्य करने के रूप अलग–अलग हो सकते है : जैसे काली पट्टी बाँधकर डॉक्टरों का समर्थन, आठ से नौ बजे बिजली बंद रख कर गृहस्थ परिवारों का समर्थन, बड़ी–बड़ी रैलियां निकालकर युवाओं के प्रदर्शन इन सभी प्रदर्शनों का उद्देश्य एक ही भ्रष्टाचार को मिटाना। इससे एक स्वस्थ भारत का निर्माण हो सकेगा।

पृथ्वी पर प्रकृति से मिलने वाली चीजों का बहुत बड़ा भंडार है। यह भंडार इतना विशाल है कि इससे धरती पर रहने वाले सभी लोगों की जरूरतें पूरी हो सकती है पर इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं। इच्छाओं का यह विस्तार विलास को जन्म देता है। उसी से समस्याएं खड़ी होती हैं।

कानून बना देने मात्र से कोई समस्या हल नहीं हो जाती। इसके लिए

तीव्र प्रयत्न करने आवश्यक हैं। अस्पृश्यता–निवारण की दृष्टि से भारतीय संस्कार निर्माण समिति के रूप में अणुव्रत का एक सघन कार्यक्रम चल रहा है। समिति के पास अपनी एक प्रदर्शनी है, जिसके माध्यम से अछूत माने जाने वाले हजारों–हजारों लोगों में खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में व्यसन–मुक्ति तथा अन्धविश्वासों को मिटाने का गहरा कार्य हुआ है, हो रहा है। ✿

स्वयं को सुधारो, मुसीबतों को मारो

अणुव्रत आंदोलन वर्तमान परिवेश में अनैतिकता के अंधकार में भटके मानव के लिए प्रकाशवान दीपक का कार्य करता है और समाज को सही राह दिखलाता है। अतः अणुव्रत आंदोलन को और भी तेज़ करने की आवश्यकता है। अणुव्रत आंदोलन जीवन की एक नवीन शैली है जो मानव को हिंसा, घृणा और विद्वेष आदि अनेक बुराइयों से छुटकारा दिलाती है।

◈ **gf"krk [k=h** 9वीं
जैन भारती मृगावती विद्यालय
जी. टी. करनाल रोड, दिल्ली

Ökरत आरंभ से ही धर्मप्रधान देश रहा है। यहाँ के ऋषियों–मुनियों ने हमेशा मानव कल्याण की बात कही है। हमारे वेदों का भी मूल स्वर है– "यदि अपने भाई मनुष्य तुम व्यक्त ईश्वर की उपासना नहीं कर सकते तो उस ईश्वर की कल्पना कैसे कर सकोगे जो अव्यक्त है?" हमारी संस्कृति में सत्य, अहिंसा, दया, क्षमा, संयम, त्याग, सादगी और सेवा जैसे विचारों को प्राथमिकता दी गई है।

भारतवासियों ने शांति, सद्भावना, प्रेम, सहानुभूति, परस्पर सहयोग, विश्व बंधुत्व की भावना, धर्म निरपेक्षता एवं सह–अस्तित्व को माना है । राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय चुनौतियों पर विचार–विमर्श भी हो रहे हैं। हमने बाहर के वैज्ञानिक अनुसंधानों को अपनाया है क्योंकि हमारा हमेशा व्यापक दृष्टिकोण रहा है। हमने हर चुनौती का मुंहतोड़ जवाब भी दिया है। विश्व में आज हमारा राष्ट्र धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के कारण ही सर्वोपरि है।

अणु+व्रत = अणु का मतलब है छोटा और व्रत अर्थात् नियम। हम यदि छोटे नियमों का पालन सतर्कता से करते हैं तब कई बड़ी–बड़ी समस्याओं

से बच सकते हैं। जैसे प्रातः जल्दी उठेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, लड़ाई नहीं करेंगे, बच्चों को समय देंगे आदि। ऐसे छोटे–छोटे नियमों का पालन करके हम अपने परिवार को सुखी कर सकते हैं और हम भी शांति से अपना कार्य कर सकते हैं। कार्य करने के लिए शांत मस्तिष्क का होना आवश्यक है।

शांति व स्थिर बुद्धि वाला व्यक्ति ही सबसे अधिक कार्य कर सकता है। हर व्यक्ति प्रसन्न रहना चाहता है, बेचैनी व तनाव को दूर करना चाहता है लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाता क्योंकि वह छोटे–छोटे नियमों पर ध्यान नहीं देता और बातें बड़ी–बड़ी करता है ताकि लोग उसे बड़ा आदमी समझें। झूठ और अहंकार से भरा मानव कैसे सुखी रह सकता है?

भावना का हमारे जीवन में बहुत प्रभाव पड़ता है, भावना से ही विचार बनते हैं। आज हमारे सामने चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ हैं क्योंकि भौतिकवादी युग में आतंकवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जमाखोरी, मुनाफाखोरी जैसी बुराइयाँ पनप रही हैं। आज का युग विज्ञान का युग है। अनेक क्षेत्रों में विज्ञान ने बहुत प्रगति की है। विज्ञान ने मानव को अनेक प्रकार की भौतिक सुख–सुविधाएँ प्रदान की हैं किन्तु आज यह देखने में आ रहा है कि भाईचारे तथा मानवीय संवेदना में निरंतर कमी हो रही है।

मानव के नैतिक मूल्यों में लगातार आतंक और अविश्वास का वातावरण व्याप्त है। हमने अपने महापुरुषों के जीवन आदर्शों को भुला दिया है। आज हमें आत्म–निरीक्षण करने की आवश्यकता है। भौतिकवादी युग की चकाचौंध से समाज को बचाने के लिए आज नैतिक मूल्यों को अपनाने की महत्ती आवश्यकता है।

अणुव्रत आंदोलन वर्तमान परिवेश में अनैतिकता के अंधकार में भटके मानव के लिए प्रकाशवान दीपक का कार्य करता है और समाज को सही राह दिखलाता है। अतः अणुव्रत आंदोलन को और भी तेज़ करने की आवश्यकता है। अणुव्रत आंदोलन जीवन की एक नवीन शैली है जो मानव को हिंसा, घृणा और विद्वेष आदि अनेक बुराइयों से छुटकारा दिलाती है। आज अधिकांश मानव सुखी नहीं है, अतएव उनकी जीवनशैली

में बदलाव लाने के लिए अणुव्रत आंदोलन की प्रासंगिता 'अणुव्रत एक ऐसा दर्शन है, जो नया इंसान पैदा करने की पृष्ठभूमि का निर्माण कर रहा है। इंसान को पैदा करने का अर्थ है उसे जन्म देना नहीं, नया जीवन–दर्शन देना है।'

vfgalk vkj v.kqor % अहिंसा अमोघ मंत्र है, दिशा सूचक यंत्र है। अहिंसा वह मैदान है जहाँ आनंद की कारें खुशी से घूम सकती हैं। परंतु आजकल देश–विदेश में हिंसा बढ़ती जा रही है। विश्व के धरातल पर अणुबम का राक्षस मानों सभ्यता और संस्कृति तथा मानव जाति को निगलने को उतावला हो रहा है। हिंसा और अहिंसा दो विरोधी धाराएँ हैं। पूर्व और पश्चिम के रास्ते की तरह ये कभी नहीं मिली। जीवन में दोनों धाराएँ चलती हैं किन्तु एक वृत्ति में दोनों का अस्तित्व नहीं रह सकता।

आत्मा का स्वभाव अहिंसा है। हिंसा विभाव है। स्वभाव का विकास होने पर विभाव निकल भागता है। अणुव्रत अहिंसक एवं स्वस्थ समाज निर्माण का मूल मंत्र है। अहिंसक समाज में सत्ता और अर्थ का मूल्य सर्वोपरि नहीं होता। वहाँ मूल्य है मानवता का, जिसे विकसित करने में अणुव्रत आंदोलन अपना पूरा जोर लगा देता है।

vkradokn vkj v.kqor % अणुव्रत आंदोलन एक अहिंसक, स्वस्थ समाज की संरचना और मानव चरित्र निर्माण की दिशा में निःसंदेह बहुत ही सफल कार्यक्रम है। आज के आतंकवाद की विकट समस्या का समाधान भी इसी से निकाला जा सकता है। अणुव्रत से जुड़े हुए जीवन विज्ञान, अहिंसा एवं प्रेक्षाध्यान जैसे नए आचारों द्वारा प्रयोग करके और उसमें हृदय–परिवर्तन, विचार परिवर्तन और मानसिक एवं भावात्मक संतुलन जैसी बातों पर ज़ोर देकर आतंकवादियों को सही रास्ते पर लाया जा सकता है।

jktuhfr vkj v.kqor % राजनीति शब्द का तात्पर्य है राज अर्थात् शासन कार्य की नीति। जब तक शासन कार्य का संचालन नियमपूर्वक होता था, तब तक राजनीति लोगों के जेहन का श्रृंगार थी, किन्तु जब

से शासनकार्य का संचालन अनीतिपूर्वक होने लगा है तब से लोग राजनीति को हिकारत की दृष्टि से देखने लगे। आज के समय में राजनीति का अर्थ है– येण केन प्रकारेण जनता को शासन की चंगुल में रखना। कितनी हानि क्यों न हो परंतु सत्ता पद या कुर्सी नहीं जानी चाहिए।

राजनीति के तीन महत्वपूर्ण घटक हैं–व्यक्ति, राज्य एवं सरकार। जिस देश के ये तीनों घटक स्वस्थ होंगे, शिवरूप होंगे, वह देश दुग्धगंगा प्रवाहित करने वाला होगा परंतु जहाँ ये तीनों घटक अस्वस्थ होंगे वहाँ भुखमरी, कंगाली होगी और उसकी तकदीर में विध्वंश और विनाश होगा। जिस देश का व्यक्ति स्वस्थ, संतुष्ट एवं सानंद होता है, वह देश अवश्य तरक्की करता है।

आचार्य तुलसी को अणुव्रत के माध्यम से उद्घोष था– "सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।" जहाँ राजनीति में व्यक्ति को नियमों एवं कानूनों की परिधि में जकड़ दिया जाता है और उसका उल्लंघन करने वाले को देश की व्यवस्था के अनुसार दंड दिया जाता है, वहीं अणुव्रत के सभी नियम हैं। उसकी आचार संहिता, उसके पालन करने की सबसे अपेक्षा की जाती है कि वह संयमी, सहिष्णु, कर्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी बने। ऐसा करने के लिए उसे स्वयं अपनी प्रवृत्तियों पर अंकुश रखना होगा। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों को जीतना होगा। ऐसा न करने से किसी देश के द्वारा कानून द्वारा उसे दंड नहीं मिलेगा, अपितु स्वयं पश्चाताप, प्रायश्चित, के द्वारा अपनी कमियों को दूर करना होगा। स्वयं के सुधरने से कई समस्याएं स्वयंमेव हल हो जाएंगी। ✿

भ्रष्टाचार एक भस्मासुर है। वह जीवन के हर पहलू को छू रहा है। वह ऐड़ी से चोटी तक फैला हुआ है। उसके स्पर्श से ही सारा वातावरण दूषित हो रहा है, आदर्शों के महल धूल में मिल रहे हैं। वह भस्मासुर की तरह हमारे जीवन के श्रेष्ठ मूल्य और आदर्शों को भस्म कर रहा है।

जनसंख्या वृध्दि ने देश को बनाया पंगु

◈ jRuk j- f'kn 9वीं ए
ध. ना. चौधरी बहुउद्देश्यीय विद्यालय
महाराष्ट्र

bस संसार में उजाला है तो अंधेरा भी है। फूलों के साथ काटें भी रहते हैं। इसी तरह यहाँ अमीरी है तो गरीबी भी है। निरक्षरता, गरीबी, महंगाई, भ्रष्टाचार, बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण, मादक द्रव्यों का सेवन, ऐसी समस्याएं बढ़ती ही जा रही हैं। हमारा जीवन तो समस्याओं की धर्मशाला ही है। आए दिन नित नई समस्या आती ही है और हमें थोड़ा बहुत परेशान करके चली जाती है।

हमारे भारत में तो बहुत से लोग निरक्षर है। निरक्षर का अर्थ है अक्षरज्ञान का न होना। अक्षरज्ञान के बिना व्यक्ति पढ़–लिख नहीं सकता। आज की दुनिया में तो ज्ञान–विज्ञान का बोलबाला है। साहित्य, कला, विज्ञान, इतिहास, धर्म आदि की बहुत सी पुस्तकें मिलती हैं परंतु अशिक्षित व्यक्ति के लिए तो 'काला अक्षर भैंस बराबर' है। अशिक्षित होने के कारण वे पुस्तकों का ज्ञान नहीं ले पाते।

भारत में तो साक्षरता की तुलना में निरक्षरता कई गुना ज्यादा है। इस देश में लाखों गाँव अशिक्षा के अंधकार में डूबे हुए हैं। अनपढ़ होने के कारण माता–पिता अपने बच्चों को खेती, दूध का बाँटना आदि काम करने के लिए

भेजते हैं और उनसे थोड़ा ही पैसा मिलता है। देश के अधिकांश नागरिक जब निरक्षरता से पीड़ित हों, तब देश की उन्नति की कल्पना कैसे की जा सकती है? निरक्षरता के होते हुए देशवासियों में राष्ट्रीयता का प्रबल भाव जागृत नहीं हो सकता। संकुचित विचारों के कारण देश में एकता नहीं बन सकती, इसलिए निरक्षर लोगों को साक्षर बनाना यह अपना काम है।

सरकार ने भी बहुत ही संस्थाएं निरक्षरों के लिए उपलब्ध की हैं। गाँव के, शहर के बच्चे नागरिक साक्षर हो जाएं तो वह दूसरों को साक्षर बनाकर अपना गाँव, शहर साक्षर बनाएँगे। गरीबी सचमुच ही दुर्भाग्य का सबसे दर्दनाक पहलू है। गरीबी के कारण लोगों को टूटे–फूटे घरों में रहना पड़ता है। गरीबी तो प्रगति की दुश्मन ही है। गरीब माता–पिता चाहकर भी अपने बच्चों को ऊँची शिक्षा नहीं दिला पाते हैं। बच्चे कुछ बड़े हुए तो उन्हें कहीं मेहनत–मजदूरी के काम में लग जाना पड़ता है। बाल–मजदूरी पर रोक लगाने पर भी दुनिया में करोड़ों बच्चे खतरनाक उद्योगों में काम पर लगे हुए हैं। बचपन की मौज–मस्ती से उनका परिचय ही नहीं होता।

इस गरीबी को हटाने के लिए लोग चोरी, डकैती, लूटपाट, हत्या, अपहरण, तस्करी आदि कृत्य करके पेट भरते हैं। सचमुच, गरीबी एक भीषण अभिशाप है। भारत विविधताओं में एकता प्रकट करने वाला अनोखा देश है परंतु बढ़ती महंगाई, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि इन समस्याओं के कारण भारत की एकता दूर होती जा रही है। एकता ही राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति होती है। यह एकता राष्ट्र का प्राण है। एक होकर ही हम देश की योजनाओं को पूरा कर सकते हैं। देश की एकता ही कृषि, उद्योग तथा विज्ञान के क्षेत्र में हमारी प्रगति के द्वार खोल सकती है। हमारी एकता की शक्ति देखकर शत्रु हम पर आक्रमण करने का साहस नहीं करते।

एकता न होने पर भारत एक राष्ट्र होने के गौरव से वंचित हो जाएगा। इस एकता को कायम रखने के लिए हमें छोटे–मोटे झगड़े भूलने पडेंगे। हमें क्षेत्रवाद की भावना छोड़नी होगी। एकता एक राष्ट्र की रीढ़ है, भारत माता की शान है। महंगाई का अर्थ है–जीवनावश्यक वस्तुओं के मूल्य में लगातार वृद्धि। विभिन्न कारणों से बाजार में चीजों के दाम बढ़ते ही जा रहे हैं। महंगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उत्पादन में खर्च बढ़ने पर

उत्पादित वस्तुओं की मूल्य में वृद्धि हो जाती है। पेट्रोल, केरोसीन, डीजल आदि ईंधनों के मूल्य वृद्धि से भी महंगाई बढ़ती है। काला–बाजारी, तस्करी आदि के कारण भी मूल्यों में वृद्धि हो जाती है।

जरूरी वस्तुओं के दाम बढ़ने से सामान्य जनता का जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। मध्यम वर्ग की समस्याएं भयानक रूप ले लेती हैं। महंगाई पर नियंत्रण पाने के प्रयत्न कारगर नहीं हो पाते फिर भी यदि सरकार, व्यापारी और जनता समझदारी से काम ले तो यह समस्या हम दूर कर सकते हैं। वस्तुओं के उत्पादन और पूर्ति पर नजर रखें, लोग सादगी तथा संयम का जीवन अपनाएं तो मूल्य वृद्धि रोकी जा सकती है।

भ्रष्टाचार एक भस्मासुर है। वह जीवन के हर पहलू को छू रहा है। वह ऐड़ी से चोटी तक फैला हुआ है। उसके स्पर्श से ही सारा वातावरण दूषित हो रहा है, आदर्शों के महल धूल में मिल रहे हैं। वह भस्मासुर की तरह हमारे जीवन के श्रेष्ठ मूल्य और आदर्शों को भस्म कर रहा है।

बाजार में भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है। सर्वत्र नकली चीजों की भरमार है। खाने–पीने की चीजों में मिलावट है। सरकारी दफ्तरों में तो हर स्तर पर धड़ल्ले से रिश्वत ली जाती है। रेलवे का टिकट कार्यालय में नहीं मिलता पर एजंटों द्वारा कालाबाजार में जरूर मिलेगा। चुनावों में भी भ्रष्टाचार है। चुनावों में फर्जी मतदान आम बात हो गई है। इस प्रकार आजकल भ्रष्टाचार सर्वव्यापी बन गया है।

जनसंख्या वृद्धि ने देश के विकास को पंगु बना दिया है। विज्ञान के विकास के जो लाभ मिले वे आबादी की बाढ़ में बह गए। शहरों में मकानों की अपेक्षा झोपड़ियां अधिक हो गई हैं। सड़कों पर चलने के लिए जगह नहीं मिलती। रेलगाड़ियों और बसों में लोग खिड़कियों पर लटक कर यात्रा करते हैं और दुर्घटनाओं के शिकार होते हैं। जनसंख्या नियंत्रण करना आज के समय की सबसे बड़ी मांग है। औद्योगिक क्रांति और बढ़ती हुई आबादी बहुत बड़ी समस्याएं हैं। यदि मानव जाति सुख–शांति से जीना चाहती है, तो उसे उपरोक्त समस्याओं के विषधरों को पिटारी में बंद करना ही होगा। ✿

बिन पानी सब सून

◈ **fo'oth** 8वीं ई
टीनू पब्लिक स्कूल
संगम विहार, दिल्ली

अधिक जनसंख्या का कुप्रभाव देश के प्रत्येक नागरिक पर पड़ता है। सारे देश के नागरिकों के लिए उचित खाद्य व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं। देश में बेरोजगारी व भुखमरी बढ़ती है। जनसामान्य को हर जगह पर भीड़ का सामना करना पड़ता है। देश गरीब हो जाता है।

vkज के इस आधुनिक युग में भी हम कई समस्याओं को झेल रहे हैं। हमारे जीवन में अलग–अलग प्रकार की समस्याएँ हैं जिनमें से ये चार मुख्य समस्याएँ हैं– प्रदूषण की समस्या, आतंकवाद की समस्या, जनसंख्या की समस्या, बेकारी की समस्या।

çn"k.k dh leL;k% प्रदूषण शब्द प्र उपसर्ग और दूषण शब्द से बना है जिसका अर्थ दूषित या गंदा होने से है। दूषित वायु, ध्वनि, जल, प्रदूषित करते तन और मन। कैसे रहेगा फिर सर्वत्र स्वच्छ वातावरण? प्रदूषण आज के समय की सबसे बड़ी समस्या है। प्रदूषण का अर्थ है वातावरण, जल, वायु का दूषित होना। प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार से हमें प्रभावित करता है।

ok;q çn"k.k% आजकल वृक्षों के अधिक कटाव से शुद्ध वायु का अभाव है। कल–कारखानों की चिमनियों और यातायात के अत्यधिक वृद्धि से वायु प्रदूषण बढ़ रहा है।

lek/kku% वायु प्रदूषण को रोकने के लिए वनों की कटाई को रोकना

होगा। उनकी जगह पर नए पेड़–पौधे लगाने होंगे। एक नारा भी है : 'वनों से वायु, वायु से आयु।'

ty çn"k.k % नदियों के जल में शहरों व फैक्टरियों का कूड़ा, नगरों का गंदा पानी बहता रहता है। कल–कारखानों से निकले रासायनिक पदार्थ जल प्रदूषित करते हैं।

lek/kku % जल प्रदूषण को समाप्त करने के लिए हमें कूड़ा–कचरा और गंदा पानी नदियों में नहीं डालना होगा।

/ofu çn"k.k % मोटर वाहन, रेडियो, उद्घोषक ध्वनि प्रदूषण के कारण हैं। ध्वनि की अधिकता बहरेपन को जन्म देती है।

lek/kku % ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए तेज हॉर्न और लाउडस्पीकरों पर रोक लगाई जाए। लोगों को शिक्षित किया जाए कि वे घरों में रेडियो, टी. वी. आदि अधिक तेज आवाज में न चलाएँ।

Òfe çn"k.k % अधिक उपज के लालच में धरती में रासायनिक खाद का खुलकर उपयोग किया जा रहा है, जिससे धरती की स्वाभाविक उपजाऊ शक्ति समाप्त हो गई है।

lek/kku % रासायनिक परीक्षणों पर रोक लगाकर तथा खेतों में रासायनिक प्रयोगों को रोकर हम भूमि, प्रदूषण को समाप्त कर सकते हैं।

vkradokn % आतंक का अर्थ है 'भय'। समाज में अपने कर्मों से भय फैलाना, समाज के लोगों को भयभीत करना ही आतंकवाद है। आज विश्व का शायद ही कोई देश जहाँ वहाँ के किसी आतंकवादी संगठन ने आतंक न फैला रखा हो।

भारत में आतंकवाद की आई बाढ़ यूरोप की देन है। भारत में बंगाल, बिहार, उड़ीसा में आर्थिक विषमताओं के कारण ऐसे ही आतंकवादी संगठनों नक्सलवादियों का उदय हुआ। पंजाब में राजनीति और धर्म से प्रेरित होकर कतिपय आतंकवादी संगठनों ने लहू की खुलकर होली खेली।

lek/kku% आवश्यकता इस बात की है कि सूचना विश्व एकजुट होकर इस मानवता विरोधी आतंकवाद का मुकाबला करे। काफी हद तक सरकार की नीतियाँ भी आतंकवाद के लिए जिम्मेदार हैं।

tul[;k dh leL;k% हमारे विश्व की सबसे महत्वपूर्ण समस्या यहाँ की बढ़ती हुई जनसंख्या है। देश में जनसंख्या कम नहीं है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश है। भारत में जनसंख्या के कारण अनेक उलझनें बढ़ रही हैं। आजादी के बाद करोड़ों लोग पाकिस्तान, बांग्लोदश, तिब्बत, नेपाल, लंका आदि देशों से आकर यहाँ के स्थायी निवासी बनते जा रहे हैं। एक व्यक्ति बाहर से आता है, भ्रष्ट तरीके से राशनकार्ड बनवाता है, फिर वह वहाँ का निवासी बन जाता है।

अधिक जनंसख्या का कुप्रभाव देश के प्रत्येक नागरिक पर पड़ता है। सारे देश के नागरिकों के लिए उचित खाद्य व्यवस्था, चिकित्सा व्यवस्था व अन्य सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पाती। देश में बेरोजगारी व भुखमरी बढ़ती है। जनसामान्य को हर जगह पर भीड़ का सामना करना पड़ता है। देश गरीब हो जाता है।

पीने के पानी की समस्या : सब लोग पेड़ काटकर अपना घर बना रहे हैं। पेड़ों के काटने से बारिश कम हो रही है। सब लोग पानी पीने के लिए और सभी कामों के लिए जमीन के नीचे का पानी उपयोग करते हैं। बारिश न होने की वजह से जमीन के नीचे के पानी का स्तर घट रहा है। इससे लोगों को बहुत परेशानी होती है। लोग पानी की तलाश में इधर–उधर घूमते रहते हैं। पूरे देश में पानी की कमी होने लगती है। आने वाला समय पेयजल के लिहाज से कठिन लगने लगा है।

cdkjh% आज हर व्यक्ति अपने उज्ज्वल भविष्य के प्रति बहुत चिंतित है। बहुसंख्यक पढ़े–लिखे शिक्षित एवं अशिक्षित युवक आजीविका की तलाश में इधर–उधर भटक रहे हैं। सरकारी आँकड़ों के अनुसार लगभग एक करोड़ बेरोजगार नौकरी की खोज में हैं।

लाखों की संख्या में मजदूर, अशिक्षित व्यक्ति दो समय की रोजी–रोटी

कमाने में असमर्थ है। समय की पुकार है कि इस समस्या का समाधान ढूँढा जाए। बड़ी संख्या में गाँव से शहरों से पलायन हो रहा है। युवकों को स्व–रोजगार के लिए, लघु–कुटीर उद्योगों के लिए प्रोत्साहित करके तथा सरल शर्तों पर ऋण देकर समस्या को हल किया जा सकता है।

lek/kku % इस समस्या के उन्मूलन के लिए सरकार का कर्तव्य है कि रोजगारपरक योजनाएँ बनाकर उन्हें उचित ढंग से कार्यान्वित किया जाए ताकि बेरोजगारी का अभिशाप दूर हो सके। ✿

एन.जी.ओ. भी बने पैसा कमाने के माध्यम

◈ jkfgr 'kekZ
गवर्नमेंट सी. सै. स्कूल
डुमैहर, सोलन, हिमाचल प्रदेश

और तो और समाज सेवा का दावा करने वाले एन. जी. ओ. भी पैसा बनाने के माध्यम बन गये हैं। कुछ को छोड़कर अधिकांश गैर सरकारी संगठन विभिन्न दानदाता एजेंसियों से पैसा लेकर कागजों पर समाजसेवा करते रहते हैं और उन पर नजर रखने वाले अधिकारी और कर्मचारी भी रिश्वत लेकर चुप हो जाते हैं।

;गीन समस्याओं का अर्थ है युगों से चली आ रही समस्या। हमारे देश में बहुत सी युगीन समस्याएं हैं जैसे: नैतिक मूल्यों की कमी, पृथ्वी तापमान में वृद्धि, जनसंख्या विस्फोट, भ्रष्टाचार, नशाखोरी आदि।

ufrd eY;ksa dh deh% ईश्वर द्वारा रची गई सृष्टि की एक सर्वोत्तम कृति है मानव। मानव एक बौद्धिक सामाजिक प्राणी है जो अपने बुद्धि बल से सागर की गहराई से लेकर चाँद–सितारों से भी आगे अपने परिचय का परचम लहरा चुका है। साधारण से असाधारण बनाने वाले गुण सदाचार, शिष्टाचार, उचित–अनुचित का विवेकपूर्ण निर्णय, भावनाओं का सम्मान, आदर्शों व विचारों के साथ–साथ अपनी सांस्कृतिक परंपरा को आगे बढ़ाना व संवारना मानव जाति का कर्तव्य है और यही हमारे नैतिक मूल्य भी हैं।

सबसे बड़ी समस्या है मानव का नैतिक पतन। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हर एक स्थान पर मानव जाति का यह दोष अपना अधिकार जमा चुका है। पर्यावरण के असंतुलित होने, परिवार, समाज व देश में हो रही सारी समस्याओं की जड़ में पहला और आखिरी एक मात्र कारण मानव का नैतिक मूल्यों से गिरना ही है।

समाज व इतिहास से हमें यह सीख लेनी चाहिए की तमाम सुविधाओं और योग्यताओं के बावजूद अंततः जीत–हार के मूल कारण में मानव ही है चाहे वह रामायण के विभीषण हो अथवा इतिहास का कोई अन्य पात्र। आज मानव ही मानव का प्रतिद्वंद्वी बन बैठा है। हमें याद रखना चाहिए कि सुख तब भी था और दुःख अब भी है और इसी चक्र के बीच जीवन संतुलन बनाकर आगे बढ़ना ही मानव का पुरूषार्थ है।

हमें स्वयं पर मरने की प्रवृत्ति को त्याग कर दूसरों के लिए जीना सीखना होगा और आगे आने वाली पीढ़ी को एक दिशा प्रदान करनी होगी ताकि वह अपनी मिट्टी और संस्कृति की सोंधी सुगंध से धरा–आकाश को भी सुवासित कर सके। अपने स्वाभिमान को गर्वित कर हमें संवेदनाओं व भावनाओं को व्यक्त करना होगा जो मात्र शब्दों में ही सीमित न रहकर कार्यों से भी साकार हों। कवि उदय प्रताप सिंह कहते है :

"बाग पंखुड़ी की देह का भविष्य कौन कहे;
फूल बन जाना जिसे विधि के विधान में,
किन्तु वन्दनीय पुष्प हैं वही जो छोड़ जायें;
बीज वसुधा में और सुगंध आसमान में"।

iFoh d rkieku e of) % प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण और जंगल नष्ट होने से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ रहा है और पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। इसी कारण मौसम तंत्र भी बदलता जा रहा है। यदि समय रहते पृथ्वी को बचाने के प्रयास नहीं किए गए तो इसके गंभीर दुष्परिणाम सामने आएंगे। आबादी बढ़ने के साथ मनुष्य जंगलों तक पहुंच गया है जिससे जानवरों को ठिकाना ही नहीं रहा। पिछले 300 वर्षों में हुए औद्योगिक विकास के साथ पृथ्वी के पर्यावरण में जबरदस्त असंतुलन हुआ है तथा ग्रीन हाऊस गैसों तथा कार्बनडाई ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्स ऑक्साइड, क्लोरिन फ्लोरा कार्बन के अत्यधिक उत्सर्जन से पृथ्वी के वायुमंडल का संतुलन बिगड़ने लगा है। इसी कारण ग्लोबल वार्मिंग का खतरा सामने आ रहा है।

'ग्लोबल वार्मिंग' दुनिया के लिए कितनी बड़ी समस्या है, यह बात एक

आम आदमी समझ नहीं पाता है। उसे ये शब्द थोड़ा टफ इसलिए लगता है क्योंकि वह इसकी तह तक नहीं जाता है। लिहाजा इसे एक वैज्ञानिक परिभाषा मानकर छोड़ दिया जाता है। ग्रीन हाऊस गैसों का उत्सर्जन अगर इसी प्रकार बढ़ा तो 21 वीं सदी में पृथ्वी का तापमान 3 से 8 डिग्री सै. तक बढ़ सकता है। अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे। हमें ध्यान रखना होगा कि हम प्रकृति को इतना नाराज न कर दें कि वह हमारे अस्तित्व को खत्म करने पर ही आमादा हो जाए। उसे मनाकर रखना पड़ेगा।

tul[;k foLQkV% जनसंख्या के मामले में वर्ष 2011 की जनगणना के अस्थाई आकड़ों के अनुसार देश की जनसंख्या एक अरब बीस करोड़ बारह लाख है। जनगणना के ताज़ा आकड़ों के मुताबिक देश में पुरुषों की संख्या 62.37 करोड़ और महिलाओं की संख्या 58.64 करोड़ है। जनसंख्या नियंत्रण के लिए प्रयास कर रहे देश के लिए अच्छी खबर यह है कि आबादी की वृद्धि दर में कमी देखी गयी है। वर्ष 1991 की जनगणना में आबादी में 23.87 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी, जबकि वर्ष 2001 में 21.54 फीसदी की बढ़ोत्तरी देखी गयी, जबकि वर्ष 2011 की जनसंख्या के अनुसार बीते एक दशक में आबादी 17.64 फीसदी बढ़ी। उत्तर प्रदेश देश का सर्वाधिक आबादी वाला राज्य है। अगर उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के आंकड़ों को मिला दिया जाये तो दोनों राज्यों की कुल आबादी अमेरिका की जनसंख्या से अधिक होगी।

यह सिर्फ आकड़े नहीं हैं बल्कि देश में बढ़ती जनसंख्या की एक तस्वीर है जो इस तरफ इशारा कर रही है कि हम जनसंख्या विस्फोट के कगार पर जा चुके हैं। संसाधनों की कमी लगातार होती जा रही है, देश में विकास की दर भी उतनी नहीं है जो इस आने वाली जनसंख्या के लिए पर्याप्त हो।

Òz"Vkpkj% मेरे विचार से सबसे बड़ी समस्या वह होती है, जिसे लोग समस्या मानना बंद कर देते हैं और जीवन का एक हिस्सा मान लेते हैं। इस प्रकार देखा जाये तो 'भ्रष्टाचार' देश की सबसे बड़ी समस्या है। यह एक ऐसी समस्या है जिसे हमने न चाहते हुए भी शासन–प्रणाली का

और जन–जीवन का एक अनिवार्य अंग मान लिया है। भ्रष्टाचार किस प्रकार देश को घुन की तरह खाये जा रहा है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण तो हमारी राजनीति है। आश्चर्य की बात तो यह है कि लोग इस विषय में ऐसे बात करते हैं कि जैसे यह एक आम बात हो।

सरकारी कर्मचारी हैं जो बिना घूस लिये कोई काम ही नहीं करते। एक गरीब आदमी अपना राशनकार्ड भी बनवाने जाता है, तो इन बाबुओं को घूस खिलाना ही पड़ता है और वह गरीब बेचारा यह सब करता इसलिए है कि यदि वह रिश्वत नहीं देगा तो उससे अधिक पैसा तो दफ्तर के चक्कर काटने में ही खर्च हो जायेगा। और तो और समाजसेवा का दावा करने वाले एन. जी. ओ. भी पैसा बनाने का माध्यम बन गये हैं। कुछ को छोड़कर अधिकांश गैरसरकारी संगठन विभिन्न दानदाता एजेंसियों से पैसा लेकर कागज़ों पर समाजसेवा करते रहते हैं और उन पर नज़र रखने वाले अधिकारी और कर्मचारी भी रिश्वत लेकर चुप हो जाते हैं।

भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये जनता को और अधिक जागरूक बनना होगा और शुरूआत खुद से करनी होगी। बात–बात में सरकार को कोसने से काम नहीं चलेगा। हमें खुद रिश्वत देना बन्द करना होगा चुनाव के समय अधिक सावधानी बरतनी होगी और समझदारी से काम लेना होगा। हमें हर स्तर पर गलत बात का विरोध करना होगा। हमारे पास मतदान का अधिकार और सूचना के अधिकर जैसे कानून के रूप में हथियार पहले से ही हैं। जरूरत है तो उस हिम्मत की जिससे हम भ्रष्टाचार रूपी दानव से लड़ सकें।

u'kk[kkjh% समाज में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति से अनेक घातक परिणाम सामने आ रहे हैं। इससे समाज में अनुशासनहीनता बढ़ रही है, गाँव की न्याय व्यवस्था चरमरा रही है तथा परिवार उजड़ रहे हैं। नशाखोरी के कारण लोगों की मानसिक, शारीरिक तथा आर्थिक हालत बिगड़ रही है। नई पीढ़ी में भी नशाखोरी की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यदि समय रहते इस प्रवाह को नहीं रोका गया तो इसके घातक परिणाम होंगे। साथ ही उपरोक्त समस्याओं के प्रति भी गंभीर होना पड़ेगा। ✿

महँगाई की मार, ऊपर से भ्रष्टाचार

◈ df'k'k ÒkfV;k 10वीं अ
लीलावती विद्या मंदिर
शक्तिनगर, दिल्ली

जिस देश के अन्न-जल को ग्रहण कर हम उन्नति को प्राप्त हुए हैं, क्या उस देश के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है? वास्तव में देश के प्रति हमारा पावन कर्तव्य है कि हम अपने देश के उत्थान के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें, उसकी समस्याओं एवं कठिनाइयों को सुलझाने के लिए प्राणपण से प्रयास करें।

;दि मकान ईंटों से बनता है तो घर दिलों से। राष्ट्र भी एक बड़े घर की भाँति होता है, जिसमें विभिन्न धर्म, मज़हब, जाति आदि के लोग एकता की भावना से रहते हैं। देश महज़ ज़मीन के टुकड़े को कहा जा सकता है, जबकि राष्ट्र उस ज़मीन पर वास करने वाले लोगों की भावनाओं का संगम है। यही भावनाएं विश्व में हमारी पहचान बनाती हैं। 'राष्ट्र से हम हैं, हमसे राष्ट्र नहीं।'

इतिहास गवाह है कि गणित के शून्य से लेकर आयुर्वेद तक भारत ने संसार को विविध पाठ पढ़ाए हैं। इसी कारण संसार भारत जैसे राष्ट्र को एक विशिष्ट शक्ति का प्रतीक मानता है। प्रत्येक देश की उन्नति के साथ–साथ उसकी कुछ समस्याएं भी होती हैं जो उसकी उन्नति में बाधक होती हैं। संसार में प्रगति वही कर सकता है जिसके पास अनंत इच्छाएँ हैं।

इस पथ का उद्देश्य नहीं है श्रांत भवन में टिक रहना।
किंतु पहुँचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं।।

;xhu leL;k,¡% प्रत्येक युग में कोई न कोई समस्या अवश्य विद्यमान है। आज के भारत की समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं, जैसे जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, महागरीबी, बेरोजगारी, सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार, महँगाई आदि। इसके पश्चात् अनेक सामाजिक समस्याएँ भी भारत में विद्यमान हैं, जैसे–दहेज प्रथा, बाल–विवाह, अनुशासनहीनता आदि।

समस्याएं, कारण तथा निवारण : समस्याएं यदि किसी भी कारण से हों परंतु उनका निवारण अवश्य होता है, जैसे :

vkradokn% आज पूरे विश्व में आतंक का साया मँडरा रहा है। इसकी जड़ें बहुत गहरी और विस्तृत हो गई हैं। आज अनेक आतंकवादी संगठनों के संपर्क–सूत्र पूरे विश्व में फैल गए हैं। ओसामा बिन लादेन को अमेरिका द्वारा खत्म करने के बाद भी जिस तरह पाकिस्तानी नागरिकों ने हाल ही में मुँबई हमलों को अंजाम दिया, उससे लगता है कि इसकी जड़ें बहुत गहरी व मजबूत हैं। इसके अनेक कारण हैं। अणुव्रत के अनुसार इसके मुख्य कारण हैं– क्रोध, बुरे कर्म, अनुशासनहीनता, हिंसा।

lek/kku% अणुव्रत आतंकवाद का समाधान है क्योंकि यह इसकी जड़ों को उखाड़ता है। अणुव्रत के अनुसार किसी भी समस्या के लिए उसके कारणों को नहीं देखना चाहिए अपितु उसकी जड़ों को उखाड़ना चाहिए। अणुव्रत एक इस तरह का इंसान खड़ा करता है जो न कभी गलत मार्ग पर गया है और न ही कभी जाएगा।

Òz"Vkpkj% भारत के सामाजिक जीवन में आज भ्रष्टाचार का बोलबाला है। अणुव्रत के अनुसार यहाँ का रिवाज़ है–रिश्वत लो और पकड़े जाने पर रिश्वत देकर छूट जाओ। नियम और कानून की रक्षा करने वाले मंत्री लोग ही सबसे बड़े भ्रष्टाचारी हैं। जब मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री स्वयं भ्रष्टाचार या घोटाले में लिप्त हों तो उस देश का चपरासी तक भ्रष्ट हो जाता है। यही स्थिति भारत की हो चुकी है।

ट्रांसपरैंसी इंटरनेशनल द्वारा किए गए सर्वे में यह पाया गया है कि 45 प्रतिशत से ज़्यादा भारतीय नौकरी लगवाने की होड़ में रिश्वत लेते पकड़े

गए हैं। रिश्वतखोरी में भारत विश्व की 178 देशों में से 87वें रैंक पर था जबकि यह सर्वे हाल ही में 2010 में हुआ था। साल 2011 पानी की तरह बहता हुआ साबित हुआ है जिसमें पब्लिक करप्शन का बहुत बोलबाला हुआ है। भारत का विश्व में लगभग रिश्वतखोरी में उच्च स्थान है।

lek/kku % हमें ईमानदार सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ कदम से कदम मिलाना चाहिए। इसके लिए पुलिस व सरकार को भी जागरूक होना पड़ेगा। तभी देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हो पाएगा।

egxkÃ % वर्तमान की अनेक समस्याओं में से सबसे महत्वपूर्ण समस्या है महँगाईं जब से देश स्वतंत्र हुआ है, तब से वस्तुओं की कीमतें निरंतर बढ़ती जा रही हैं। साल 2006 से 2008 के बीच में महँगाई विश्व में 217 प्रतिशत बढ़ गई थी। सन् 1961 से लेकर 2005 तक के बीच में जनसंख्या वृद्धि तीन से चार गुना हो गई है जबकि अनाज कम उग रहा था। लोगों की जनसंख्या से ज़्यादा तो अनाज की आवश्यकता है।

lek/kku % दैनिक उद्योग की वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि रोकने के ठोस उपाय किए जाने चाहिए। इसके लिए सरकार को लगातार मूल्य नियंत्रण करते रहना चाहिए। कालाबाज़ारी को भी रोका जाना चाहिए। इस दिशा में जनता का भी कर्तव्य है कि वह संयम से काम ले।

çn"k.k % प्रदूषण तब होता है जब जल, वायु, भूमि को दूषित किया जाता है। प्रदूषण तीन तरहों से हमें अलग–अलग तरह हानि पहुँचाता है। वायु प्रदूषण वायु को दूषित करता है, जल प्रदूषण जल को दूषित करता है और भूमि प्रदूषण भूमि व वातावरण को दूषित करता है। कहीं न कहीं हम ही इसके जिम्मेदार हैं। चाहे यह छोटी तादाद में हों या बड़ी तादाद में। प्रदूषण हमारी जीवन–शैली में बहुत बड़ा राक्षस है। प्रदूषण धीरे–धीरे हमारी धरती व हमें खत्म कर रहा है।

lek/kku % हमें खुली हवा में थैलियों, कागजों को जलाना बंद कर देना चाहिए। सरकार को 'एयर क्वालिटी स्ट्रैटेजी' लानी चाहिए। ज़्यादा से ज़्यादा वृक्ष लगाए जाने चाहिए। पर्यावरण की सुरक्षा से ही प्रदूषण की

समस्या को सुलझाया जा सकता है। यह समस्या तभी कम होगी जब वनरोपण किया जाएगा।

अतः जिस देश के अन्न–जल को ग्रहण कर हम उन्नति को प्राप्त हुए हैं, क्या उस देश के प्रति हमारा कोई कर्तव्य नहीं है? वास्तव में देश के प्रति हमारा पावन कर्तव्य है कि हम अपने देश के उत्थान के लिए सतत् प्रयत्नशील रहें, उसकी समस्याओं एवं कठिनाइयों को सुलझाने के लिए प्राणपण से प्रयास करें। ✿

नशा एक अभिशाप

◈ jkgy pkgku 10वीं बी
सरस्वती ज्ञानपीठ उ. मा. विद्यालय
देवास, मध्यप्रदेश

नशे की शुरूआत की ओर देखा जाए तो यह किसी मित्र या साथी द्वारा आग्रह से आरंभ होता है, फिर धीरे-धीरे अबाध गति से बढ़ती हुआ आदत में शामिल होकर व्यसन का रूप धारण कर लेता है। मूर्ख लोग इसे ग्रहण करके हताशा, निराशा, असफलता, तनाव, रोगमुक्ति का जरिया मान एक अंतहीन अंधेरी काली गुफा में घुसते चले जाते हैं।

uशा कैसे और क्यों आरंभ हुआ, कहना कठिन है। यह केवल अनुमान मात्र ही है कि जब मनुष्य पेड़–पौधों पर भोजन के लिए निर्भर था, तभी शायद उसे पेड़–पौधे से मिलने वाले नशे का स्वाद लगा होगा। उस स्वाद के प्रभाव स्वरूप प्राप्त आनंद को पाने के लिए उसने बार–बार इसका सेवन किया होगा।

पुरातत्वविद् ने समय–समय पर उत्खनन द्वारा इस बात को सिद्ध किया है कि पाषाण युग में अफीम का प्रयोग किया जाता था। तुर्की, चीन, भारत एवं मिस्र के इतिहास से ज्ञात होता है कि अब से 3000 वर्ष ईसा पूर्व गांजा, भांग और चरस का सेवन किया जाता था। दक्षिणी अमेरिका के आदिवासी भी सदियों से कोकीन का सेवन करते रहे हैं। मनुष्य की मनोदशा एवं परिस्थितियों के साथ नशे का संबंध मनुष्य से धीरे–धीरे जुड़ता चला गया।

नशे का रूप पूर्वकाल में चाहे जो भी रहा हो पर उन्नीसवीं–बीसवीं सदी तक आते–आते इसके सेवन का रूप परिवर्तित होता चला गया। समाज के एक सीमित वर्ग विशेष तक ही यह सीमित था, जो समय–समय पर

मन को शांति देने का कारण माना जाता था। धीरे–धीरे यह वर्ग अपना रूप विस्तार करता गया और अब मनुष्य केवल आनंद को दोगुना करने को इसे अपनाता है, बल्कि जीवन की सच्चाइयों से मुंह छिपाने के लिए भी इसका सेवन करता है।

आज हर वर्ग, तबके का मनुष्य इसे लेता है। चाहे वह दफ्तर का बॉस हो या चपरासी, पुलिस महकमे का हो या कैदी, रिक्शा चालक हो या भिखारी, सभी इसके सेवन के आदि बनते जा रहे हैं। यही नहीं, स्कूल–कॉलेज के छात्र भी इसे ग्रहण करने से हिचकते नहीं हैं।

नशा लेने के पीछे कोई कारण विशेष नहीं है। दोस्तों के बीच साथ देने के लिए एक बार लिया तो आगे लेने की सारी झिझक समाप्त हो गई व्यवसाय में असफल रहे, जीवन में किन्हीं कारणों से असफल रहे, मनचाहा पूर्ण नहीं हुआ तो इसे लेकर गम भुलाने में युवा–किशोर बुजुर्ग कोई भी पीछे नहीं रहता। एक बार जिसने इसमें कदम रखा वह आकंठ धंसता ही चला जाता है, बचने के सारे उपाय बेकार साबित होते हैं।

नशे की शुरूआत की ओर देखा जाए तो यह किसी मित्र या साथी द्वारा आग्रह से आरंभ होता है, फिर धीरे–धीरे अबाध गति से बढ़ती हुआ आदत में शामिल होकर व्यसन का रूप धारण कर लेता है। मूर्ख लोग इसे ग्रहण करके हताशा, निराशा, असफलता, तनाव, रोगमुक्ति का जरिया मान एक अंतहीन अंधेरी–काली गुफा में घुसते चले जाते हैं। सोचते हैं, इनसे उन्हें कुछ समय के लिए ही सही, शांति तो मिलेगी। जीवन की वास्तविकताओं से पलायन का यह कदम उन्हें पतन के रसातल तक पहुँचा कर ही दम लेता है। जगत में उन मूर्खों की भी कमी नहीं है जो इन नशीले पदार्थों को सृजनात्मकता, कल्पनाशील एवं स्मरण–शक्ति वृद्धि को प्राप्त करने का एकमात्र साधन मानते हैं। जब तक उन्हें होश आता है, तब तक वे बहुत कुछ खो चुके होते हैं।

दूसरों से स्वयं को कमतर आँकने का दुःख भुलाने, शारीरिक अक्षमता को छुपाने, चिंताहीन भावना आदि को दूर करने के लिए लोग नशे को ही उसका निदान मानते हैं। कतिपय विद्यार्थियों तथा युवा अपने

बड़ों को नशा करते देख समय–समय अवसर पाते ही स्वयं भी वैसा करते हैं।

केवल कुछ बार नशे के सेवन मात्र से शरीर शिथिल रहने लगता है। शारीरिक क्षमता, उजागर होने लगती है, मनो मस्तिष्क अपने बस में नहीं रहता है। किसी कार्य में मन नहीं लगता, स्मरण–शक्ति क्षीण हो जाती है। शारीरिक विकार प्रकट होने लगते हैं। इस प्रकार का मनुष्य स्वयं से स्वयं को पहचानने से इंकार करने लगता है।

अब इस प्रकार के ड्रगएडिक्ट व्यक्ति को यदि एक समय भी उसकी खुराक न मिले तो वह आपे से बहार हो पागलों जैसा व्यवहार करता है। मानसिक संतुलन खोने का भय उत्पन्न हो जाता है। सिगरेट, बीड़ी के लगातार सेवन से फेफड़े का कैंसर या टी. बी. हो जाती है। साँस की बीमारी हो जाती है। शरीर का प्रतिरोधक शक्ति नष्ट हो जाती है। पीलिया, एड्स आदि भयानक रोग अपना डेरा जमा लेते हैं। शरीर वशहीन हो जाता है। नौकरी चली जाती है। इस प्रकार उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है।

'काजल की कोठरी में कैसी ही सयानो जाए,
एक लीक काजल की लागी है पैलागी है।'

अफीम, गांजा, कोकीन की बड़ी मात्रा में बिक्री हेतु, अधिक संख्या में लोगों को इसकी लत डालने में 'गैंग विशेष' समाज में क्रियाशील हैं। सरकार, पुलिस तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं के सचेत–सजग रहने पर भी इन पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है। इसका विशेष कारण है इन नशीले–पदार्थों को बेचने में अब छोटे–छोटे मासूम बच्चे तथा महिलाएँ भी सम्मिलित हो गई हैं। सरकार की तरफ से लचर कानून भी इसके बढ़ावे का कारण रहे हैं। नशीले पदार्थों के बाजार को सर्वदा कठोर कानून बनाकर ही ऐसे लालची लोगों को सबक सिखाया जा सकता है। नशीले पदार्थों की लत से ग्रस्त लोगों को कठोर व्यवहार, दवा, अस्पताल या जल में रखकर बदलने का विचार ही मूर्खतापूर्ण है। ऐसे लोगों से घृणा की जाए, वह भी सही नहीं है। आवश्यकता है ऐसे लोगों को सर्वदा

उनकी रूचि के कामों से व्यस्त रखना। इसमें दवा तभी कारगार साबित हो सकती है, जब परिवार और समाज के लोगों का व्यवहार उनके प्रति प्रेमपूर्ण हो। मनौवैज्ञानिक तरीके से उनमें परिवर्तन लाया जा सकता है।

समाज में उनकी महत्ता बनाकर ही उन्हें इस दलदल से निकाला जा सकता है। एक बार इस लत को छोड़ने के बाद यदि उनकी खैर–खबर न ली जाए या जरा सी ढिलाई बरती जाए तो जरा भी देर नहीं लगती है उन्हें इस दलदल में पुनः धँसने में। आने वाली पीढ़ी को यदि नशारहित बनाना है तो आज, अभी और इसी समय से उनकी देखभाल करनी होगी। उनके हर कदम पर अभिभावकों को अपनी पैनी दृष्टि रखनी होगी। सबसे बड़ी बात अणुव्रत के नशामुक्ति अभियान से जुड़ना होगा, अणुव्रत आंदोलन का हिस्सा बनना होगा तभी हमारा समाज सुदृढ़ बनेगा, नहीं तो नशेड़ी समाज को रसातल में जाने में समय नहीं लगेगा। ✿

धन लिप्सा का बोलबाला

◈ lehf{kk ÒkfV;k 5वीं सी
एम. एस. एम. स्कूल
राणाप्रताप बाग, दिल्ली

जमाखोरी से शुरू होती है कालाबाजारी। दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, अंधाधुंध मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति तथा सरकारी अंकुश का अप्रभावी होना भी महँगाई के कारण हैं। ये कालाबाजारी पहले वस्तुओं का नकली अभाव उत्पन्न करते हैं और फिर जब उन वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है तो महँगे दामों पर बेचते हैं।

oसे तो देश में कई तरह की समस्याएं हैं लेकिन कुछ समस्याएं ऐसी हैं जो बहुत खतरनाक है। एक–एक करके उनका वर्णन नीचे दिया जा रहा है।

çn"k.k dh leL;k% प्रदूषण के कारणों की खोज करने पर प्रतीत होता है कि अंधाधुंध वृक्षों की कटाई, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि, उद्योगों का अनियमित फैलाव, चिमनियों से आबादी के मध्य धुआँ उगलना और यातायात के साधनों की अभूतपूर्व वृद्धि आदि ही इसके लिए जिम्मेदार हैं। कारखानों का रासायनिक जल नदियों में डाल दिया जाता है। शहरों का गंदा पानी बिना साफ किए ही नदियों में मिला दिया जाता है। जहाजों द्वारा समुद्र में तेल गिरा दिया जाता है। वाहन धुआँ छोड़ते हैं और वायुमंडल को प्रदूषित करते हैं। प्रदूषण से अनेक बीमारियां पनपती हैं। प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं– जैसे कि जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण।

इसके समाधान के लिए अधिकाधिक मात्रा में वृक्ष लगाए जाएँ और उनका संरक्षण किया जाए, नदियों के जल को शुद्ध बने रहने दिया

जाए। उनमें कूड़ा–कचरा और कारखानों के अवशेष न गिराए जाएँ। तेज ध्वनि वाले उपकरणों व वाहनों पर नियंत्रण किया जाए।

egxkÃ dh leL;k% वर्तमान समय में निम्न–मध्यम वर्ग महँगाई की समस्या से त्रस्त है। यह महँगाई रुकने का नाम ही नहीं ले रही। यह तो सुरसा की तरह बढ़ती ही चली जा रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार का महँगाई पर कोई नियंत्रण रह ही नहीं गया है। रोटी, कपड़ा और मकान प्रत्येक व्यक्ति की मौलिक आवश्यकताएँ हैं। वह इन्हें पाने के लिए दिन–रात प्रयास करते रहते हैं। एक सामान्य व्यक्ति केवल इतना चाहता है कि उसे जीवनोपयागी वस्तुएँ आसानी से और उचित दर पर उपलब्ध होती रहे। सभी राजनीतिक दल महँगाई को चुनावी मुद्दा बनाते हैं, पर सत्ता में आने के पश्चात् या तो उसे भूल जाते हैं और या कुछ कर पाने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं।

महँगाई बढ़ने के कई कारण हैं। उत्पादन में कमी तथा माँग में वृद्धि होना महँगाई का प्रमुख कारण है। माँग और पूर्ति के असंतुलित होते ही महँगाई को अपने पाँव फैलाने का अवसर मिल जाता है। कभी–कभी सूखा, बाढ़, अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप भी इसके कारण बनते हैं। जमाखोरी भी महँगाई का प्रमुख कारण है। जमाखोरी से शुरू होती है कालाबाजारी। दोषपूर्ण वितरण प्रणाली, अंधाधुंध मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति तथा सरकारी अंकुश का अप्रभावी होना भी महँगाई के कारण हैं। ये कालाबाजारी पहले वस्तुओं का नकली अभाव उत्पन्न करते हैं और फिर जब उन वस्तुओं की माँग बढ़ जाती है तो महँगे दामों पर बेचते हैं।

Òˆ"Vkpkj dh leL;k% आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता, अराजकता और स्वार्थपरता का बोलबाला हो गया है। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा नैतिक स्वरूप धुधँला सा हो गया है। इसका एक कारण समाज में फैल रहा है और वह है भ्रष्टाचार।

वर्तमान समाज में भ्रष्टाचार ने अनेक रूपों में अपना साम्राज्य फैला रखा

है। रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी ये सब सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यही है कि इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए लिए मनचाहे तरीकों को अपना रहे हैं।

कमरतोड़ महँगाई भी इसका प्रमुख कारण है। हमें हमारे समाज में फन फैला रहे इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। यहीं नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी हमारी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो।

यह अणुव्रत सिद्धांतों को अपनाकर संभव हो सकता है। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाएँ भी सुलभ करानी होंगी। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है। ✿

जनसंख्या वृद्धि रोकना सबसे आवश्यक कदम है। प्रत्येक नागरिक अपने परिवार को नियोजित करे। केवल एक या दो बच्चे ही पैदा करे। लड़का-लड़की को समान दृष्टि से देखा जाये तभी तो जनसंख्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। परिवार नियोजन के महत्व को अच्छी प्रकार से समझ लेने पर ही देश की प्रगति सम्भव है।

समस्याएं विकराल, जनजीवन बेहाल

◈ **v#.k xlrk** 10वीं सी
सरस्वती विद्या मंदिर सी. सै. स्कूल
कमला नगर, आगरा, उत्तर प्रदेश

संसार में अनेक देश हैं। अनेक भाषाओं, अनेक धर्मों के लोग रहते हैं। उनके खानपान, वेशभूषा और रीति–रिवाज और संस्कृति अलग–अलग हैं। किन्तु सम्पूर्ण विश्व के सभी देशों की समस्याएं एक जैसी ही हैं। वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। विज्ञान के चमत्कारों ने विश्व में क्रांति ला दी है तथा पृथ्वी को स्वर्ग बना दिया है। विज्ञान के बलबूते पर मनुष्य जल–थल और नभ का स्वामी बन बैठा है। आज मानव प्रकृति को नई–नई चुनौतियां दे रहा है। आज इस युग में इतना आगे बढ़ने के बाद भी मनुष्य के जीवन में अनेक समस्याएं हैं। ये समस्याएं मनुष्यों द्वारा ही उत्पन्न की गयी हैं और इनका समाधान भी मनुष्यों पर निर्भर है।

आज मानव जीवन में भ्रष्टाचार, आतंकवाद, बेरोजगारी, महँगाई, जनसंख्या वृद्धि, प्रदूषण, भ्रूण हत्या, अशिक्षा, साम्प्रदायिकता जैसी जटिल समस्याएं विकराल रूप धारण कर चुकी हैं। इन समस्याओं ने मानव जीवन को बहुत प्रभावित किया है। इन समस्याओं के दुष्प्रभाव से मनुष्यों का जीवन दुष्कर व कठिन हो गया है। मानव ही मानव का शत्रु बन गया है। सब अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगे रहते हैं। देश और राष्ट्र का किसी को

ध्यान ही नहीं है। इसी कारण देश विकास में पिछड़ रहा है। कुछ प्रमुख समस्याएं निम्नलिखित हैं :

çn"k.k dh leL;k% प्रदूषण की समस्या का जन्म जनसंख्या की वृद्धि के साथ–साथ हुआ है। विकासशील देशों में औद्योगिक एवं रासायनिक कचरे ने जल, वायु तथा पृथ्वी को भी प्रदूषित किया है। भारत में तो घरेलू कचरे और गन्दे जल को बहाने का प्रश्न ही एक विकराल समस्या बन गया है।

आज महानगरों में वाहनों, कारखानों तथा बढ़ती औद्योगिक इकाइयों के कारण वातावरण प्रदूषित हो रहा है। कारखानों की चिमनियों तथा वाहनों आदि से जहरीली गैसें निकलती हैं जिनसे वायु प्रदूषित हो जाती है। कल–कारखानों से निकलने वाले अवशिष्ट पदार्थ जब नल में बहा दिए जाते हैं तो जल प्रदूषित हो जाता है। महानगरों में मशीनों, कल–कारखानों, वाहनों के शोर से ध्वनि प्रदूषण होता है। परमाणु शक्ति के उत्पादन ने वायु, जल और ध्वनि तीनों प्रकार के प्रदूषणों को जन्म दिया है। भूमि पर पड़े कूड़े–कचरे के कारण भूमि प्रदूषण होता है। महानगरों में झुग्गी–झोंपड़ियों की अधिकता के कारण भी भूमि प्रदूषण होता है। आवास की समस्या को सुलझाने के लिए की जा रही वनों की कटाई भी वायु प्रदूषण का मुख्य कारण है।

lek/kku% यद्यपि प्रदूषण की समस्या विश्वव्यापी है तथापि वृक्षारोपण इसे रोकने का सर्वोत्तम उपाय है। वृक्ष हमें शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाई जानी चाहिए। वाहनों द्वारा प्रदूषण को रोकने के लिए उनके लिए सी.एन.जी. के प्रयोग को अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। औद्योगिक इकाइयों द्वारा होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए ये इकाइयाँ नगरों से दूर स्थापित की जाएँ।

cjkstxkjh% बेरोजगारी एक प्रमुख समस्या है। वस्तुतः यह एक ऐसी बुराई है जिसके कारण केवल उत्पादक मानव–शक्ति ही नष्ट नहीं होती वरन् देश का भावी आर्थिक विकास ही अवरुद्ध हो जाता है। जो श्रमिक अपने कार्य द्वारा देश के आर्थिक विकास में सक्रिय सहयोग दे सकते थे,

वे कार्य के अभाव में बेरोजगार रह जाते हैं। यह स्थिति हमारे विकास में बाधक है। बेरोजगारी के अनेक कारण हैं।

lek/kku%

- जनसंख्या पर नियंत्रण बहुत आवश्यक है। जनता को परिवार नियोजन का महत्व समझाते हुए उसमें छोटे परिवार के प्रति चेतना जागृत करनी चाहिए।
- सरकार द्वारा कुटीर उद्योगों के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।
- शिक्षा को व्यवसाय प्रधान बनाकर शारीरिक श्रम को उचित महत्व दिया जाना चाहिए।
- देश में व्यापक स्तर पर औद्योगिकीकरण किया जाना चाहिए। इसके लिए विशाल उद्योगों की अपेक्षा लघु उद्योगों का अधिक विकास करना चाहिए।
- कृषि के क्षेत्र में अधिकाधिक व्यक्तियों को रोजगार देने के लिए सहकारी खेती को प्रोत्साहन देना चाहिए।
- देश में बेरोजगारी दूर करने के लिए राष्ट्र निर्माण सम्बंधी विविध कार्यों का विस्तार किया जाना चाहिए, जैसे सड़कों का निर्माण, रेल–परिवहन का विकास, पुल निर्माण, बांध निर्माण तथा वृक्षारोपण आदि।

tula[;k o`f)% विश्व की अनेक समस्याओं में जनसंख्या की समस्या सबसे अधिक विकराल है। आज विश्व का हर छठा नागरिक भारतीय है। चीन के बाद भारत की आबादी सर्वाधिक है लोगों के पास भूमि कम है, आय कम है और समस्याएं अधिक बढ़ती जा रही हैं। बेरोजगारों, अशिक्षितों की संख्या बढ़ती जा रही है। जनसंख्या के भयंकर विस्फोट के कारण भूख तथा बेकारी की समस्या भी बढ़ती जा रही है। बढ़ती जनसंख्या का प्रमुख कारण महिलाओं का अशिक्षित होना है।

lek/kku % जनसंख्या वृद्धि रोकना सबसे आवश्यक कदम है। प्रत्येक नागरिक अपने परिवार को नियोजित करे। केवल एक या दो बच्चे ही पैदा करे। लड़का, लड़की को समान दृष्टि से देखा जाये तभी तो जनसंख्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। परिवार नियोजन के महत्व को अच्छी प्रकार से समझ लेने पर ही देश की प्रगति सम्भव है।

vkradokn % जब प्रशासन या समाज के किसी वर्ग को आतंकित करने के लिए हिंसक तरीकों का सहारा लिया जाता है तो इसी को ही आतंकवाद कहते हैं। आज आतंकवाद एक कोढ़ की भाँति पूरे विश्व में व्याप्त हो गया है। अकेले ओसामा बिन लादेन ने अमेरिका जैसे सबसे ताकतवर देश पर आक्रमण करके अपने नापाक इरादे जाहिर कर दिये थे। तालिबान, लश्कर–ए–तयैबा, हमास जैसे अनेक साम्प्रदायिक संगठन समूचे विश्व में आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। कुछ व्यक्ति आतंकवाद के द्वारा आम नागरिकों के मन में खौफ कायम कर रहे हैं।

lek/kku % सन् 1988 में अमृतसर के स्वर्ण मंदिर परिसर से आतंकवादियों को मार गिराने के लिए 'ऑपरेशन ब्लैक थंडर' चलाया गया। जिसके बाद एक प्रकार से पंजाब में आतंकवाद का सफाया ही हो गया था। इसी प्रकार की कठोरतम कार्यवाही द्वारा आतंकवाद को खत्म किया जा सकता है।

Òˆ"Vkpkj % आज जीवन का कोई क्षेत्र सरकारी अथवा गैर–सरकारी, सार्वजनिक या निजी ऐसा नहीं जो भ्रष्टाचार से अछूता रहा हो। किंतु फिर भी हम इसे तीन प्रमुख वर्गों में विभक्त कर रहे हैं। राजनैतिक भ्रष्टाचार, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, व्यावसायिक भ्रष्टाचार आदि।

mik; %

- भ्रष्टाचार को हटाने के लिए वर्तमान चुनाव–पद्धति में परिवर्तन आवश्यक है।
- सरकार कर प्रणाली को इतनी सरल बना दे कि सामान्य तथा अशिक्षित लोग वांछित कर आसानी से अदा कर सकें।

- शासन–व्यव में कटौती करके राजनीतिज्ञ सबके सामने सादगी का आदर्श रखा जाए।
- प्रत्येक नागरिक राष्ट्र को महान् समझकर सदैव उसके गौरव को बनाए रखने के लिए तत्पर रहे।
- प्रत्येक भारतवासी को स्वदेशी वस्तुओं को ही क्रय करना है, ऐसी भावना प्रत्येक नागरिक में आनी चाहिए।
- कानून को इतना कठोर बना दिया जाए कि हर अपराधी को उसके अपराध की सजा मिल सके।
- भ्रष्ट व्यक्ति का समाज से बहिष्कार किया जाए। उसके साथ रोटी–रोजी आदि किसी प्रकार का व्यवहार न किया जाए।

ये सभी समस्याएं हमारे समाज में दीमक की तरह फैल चुकी है। यदि जल्द ही इन समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो ये सम्पूर्ण विश्व को खोखला कर देंगी। सभी देशों की सरकारों को एकजुट होकर इन समस्याओं का सामना करके इनका अन्त करना चाहिए। आतंकवाद और भ्रष्टाचार के खिलाफ कानून और कठोर होना चाहिए। आतंकवादियों और भ्रष्टाचारियों को कठोर सजा देनी चाहिए। जनसंख्या और प्रदूषण जैसी समस्याओं का जनसंचार के द्वारा समाप्त करना चाहिए। नागरिकों को जागरूक करना चाहिए ताकि इन समस्याओं का समाधान हो सकें। ✿

स्त्री की अब भी दुर्दशा

◈ **vi.kk JhokLro** 9वीं डी
बाल भवन पब्लिक स्कूल
दिल्ली

हिन्दू समाज की सबसे प्रथम समस्या स्त्रियों की है। यद्यपि भारतीय संविधान ने स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार दिये हैं परंतु वे केवल नाममात्र के हैं। हमारे पूर्वजों का कथन है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ सभी देवता निवास करते हैं। यहाँ पूजा का तात्पर्य केवल उनकी मान-मर्यादा की रक्षा तथा उनके अधिकारों की रक्षा से है।

समय बदला, देश की स्थिति बदली, हम स्वतंत्र हुये परंतु हमारी सामाजिक विषमतायें आज भी वैसी ही हैं जैसी दो सौ वर्ष पहले थीं। यह दोष कुछ तो अंग्रेजों ने हमारे समाज को दिये थे और कुछ हमारे ही घर के स्वार्थी धर्म के ठेकेदारों ने। एक समय था जब हमारा देश, हमारा समाज विश्व में सर्वश्रेष्ठ समाजों में गिना जाता था। यहां की जनता सुखी और धन–धान्य से सम्पन्न थी।

हिन्दू समाज की सबसे प्रथम समस्या स्त्रियों की है। यद्यपि भारतीय संविधान ने स्त्रियों को पुरुषों के समान ही अधिकार दिये हैं परंतु वे केवल नाममात्र के हैं। हमारे पूर्वजों का कथन है कि जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है, वहाँ सभी देवता निवास करते हैं। यहाँ पूजा का तात्पर्य केवल उनकी मान–मर्यादा की रक्षा तथा उनके अधिकारों की रक्षा से है। वह पति के दुराचार, अन्याय, अत्याचारों मूक पशु की तरह सहन करती है। उसका संसार घर की चारदीवारी तक ही सीमित रहता है। पति 'देवता' की सेवा और बच्चों का पालन–पोषण करने तक ही उसका कर्तव्य है। बाल–विवाह, वभद्ध–विवाह, विवाह–विच्छेद, विवाह–निषेध आदि

ने उसकी और भी दुर्दशा कर दी है। न वह स्वतंत्र वायुमंडल में साँस ले सकती है और न स्वतंत्रापूर्वक किसी से बोल सकती है। जन्म से लेकर मृत्यु तक की आजीवन कैद किस विधाता ने उसके भाग्य में लिख दी है।

बाल्यावस्था में पिता रक्षा करता है, युवा अवस्था में पति रक्षा करता है, वृद्धावस्था में पुत्र रक्षा करता है, इस प्रकार स्त्री कभी स्वतंत्र नहीं रह पाती है। भारतीय स्त्री की अवनति का सबसे प्रधान कारण उसकी 'आर्थिक पराधीनता' है। उसे एक–एक पैसे के आगे हाथ फैलाना पड़ता है। सिर्फ यहाँ तक नहीं और भी समस्याएं इन्हें परेशान करती हैं।

- अशिक्षा की समस्या : आज के स्वतंत्र भारत में भी स्त्रियों की शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं।

- पर्दा समस्या : पर्दा समस्या भी भारतीय नारी के लिए उन्नति के मार्ग में विघ्न बनी हुई थी।

- प्रसूतिका गृह की समस्या : हमारे देश में प्रसूतिका गृहों का अभाव भी एक बड़ी समस्या है। भारतवर्ष में अनेक स्त्रियाँ बच्चे को जन्म देने में ही इस संसार से चल बसती हैं और बहुत सी जन्म देने के कुछ दिनों के बाद। सरकार तथा शासन को प्रत्येक वार्ड या मौहल्ले में एक–एक प्रसूतिका गृह स्थापित करना चाहिये। इनमें जच्चा और बच्चे की देखरेख हो सकती है और स्त्रियों को अकाल मृत्यु से बचाया जा सकता है।

- बाल विवाह : बालविवाह भी भारतीय स्त्री समाज की अवनति का एक कारण है। छोटी अवस्था में ही माता–पिता का स्नेहपूर्ण घर छोड़कर बलिकाओं को अपरिचित दूसरे व्यक्तियों के घर जाना पड़ता है। भारतीय सरकार इसे बहुत कुछ रोकने में सफल हुई है परंतु गावों में अब भी 10 या 12 वर्ष की लड़की का विवाह कर देना पुण्य का काम समझा जाता है और वे इस कन्यादान के पुण्य को लूटते हैं।

- विधवा विवाह : भारतीय समाज की यह एक भयानक समस्या जो अब

दूर होती जा रही है। जब दुर्भाग्य से किसी नवयुवती का पति मर जाता था, तब जीवन अभिशाप बन जाता था।

- बहु–विवाह : बहु विवाह भी एक भयानक समस्या थी। एक पत्नी के होते हुए पुरुष दो–दो, तीन–तीन विवाह कर लेता था और अपने जीवन को नारकीय जीवन बना लेता था। प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय सरकार ने इस विषय में कठोर होकर समाज को नष्ट होने से बचा लिया है, परंतु गाँवों में अब भी यह दोष एक–एक धनी चार–चार पत्नियों का स्वामी बना बैठा है।

हर्ष की बात है कि भारतवर्ष के नये संविधान में स्त्रियों की समस्या सुलझाने के लिये विभिन्न नियमों का समावेश किया गया है। उन्हें पुरुषों जैसी स्वतंत्रता दी गई है, उनके लिए किसी प्रकार के काम पर रोक रखी नहीं गई है।

विवाह सम्बन्धी दूसरी समस्या दहेज की है। दहेज की समस्या के कारण कन्या का जीवन माता–पिता को दूभर मालूम पड़ता है। पहले तो गाँव में कुछ जातियों में ऐसी प्रथा थी कि लड़की का जन्म होते ही उसे आक का दूध पिला कर सुला दिया जाता था, घण्टे–आधे घण्ट में वह मर जाती थी। प्रसन्नता की बात है कि सरकार ने पर प्रतिबंध लगा दिया है परंतु इस कुरीति की जड़ें इतनी गहरी चली गई हैं कि उखाड़ने में समय तो लगेगा ही। ✿

महान् गुरुओं का चाहिए मार्गदर्शन

आज जहाँ द्वेष, ईर्ष्या और दुश्मनी ने लोगों के मन में जगह ले ली है, अणुव्रत हमें सबसे प्रेम करने की सीख देता है। हमें सबसे प्रेम करना चाहिए चाहे वह मनुष्य हो, पशु-पक्षी हो या कोई और जीवित वस्तु। जो दूसरों से प्रेम करता है, उसे बदले में प्रेम ही मिलता है।

◈ eR;|t ; oek 10वीं सी,
बिरला हाई स्कूल, 1 मोयरा स्ट्रीट
कोलकाता, पश्चिम बंगाल

vkज हमारी दुनिया ढ़ेर सारी समस्याओं के घेरे में है। ऐसा लगता है मानो लाखों लोग धर्म एवं सत्य के मार्ग से विचलित हो गए हैं। अंततः लोग गलत मार्ग पर चल रहे हैं। हमारा समाज चारों तरफ से झूठ, बेईमानी, आतंक, गरीबी से घिरा हुआ है और ऐसी बुराइयों से बेहाल है। आज हर कोई इस डर में जी रहा है कि न जाने कब उसकी जान की बलि चढ़ जाएगी या न जाने कब वह पूरी तरह से लुट जाएगा।

हर जगह हिंसा और आतंक का कहर है। आए दिन लोग बम व गोलियों के शिकार हो जाते हैं। ऐसा लगता है मानो इस पूरी दुनिया के लोग एक–दूसरे से लड़ते–झगड़ते मर जाएंगे। इन सबके ऊपर गरीबी की समस्या हर देश के चिंतन का विषय है। हमारी दुनिया, विशेषकर भारत को अपने महान् गुरुओं से मार्गदर्शन चाहिए और उन महापुरुषों के संदेशों के पालन से ही यह संभव है। इस समय युगीन समस्याओं का समाधान, जैन धर्म के संस्थापक श्री महावीर के अणुव्रत ही हैं। श्री महावीर के संदेश सदैव ही मनुष्यों को सारी बुराइयों को त्यागने के लिए प्रेरित करते थे और हमें इन संदेशों अथवा अणुव्रत को विस्तारपूर्वक समझने की ज़रूरत है।

आज समाज के हर एक व्यक्ति में एक सामान्य कमी है। यह कमी है आत्मनियंत्रण की। आज के समय में अगर एक व्यक्ति कुछ अपशब्द कहता है तो दूसरा उस पर ध्यान देने के बजाय उससे अपना बदला लेता है जो एक भीषण झगड़े का रूप ले लेता है। उसी तरह घर का एक छोटा झगड़ा पूरे परिवार को तोड़ देता है। ऐसे लोग परिवार को बदनाम करते हैं।

अगर दो देशों के बीच कहासुनी हो जाती है तो वह उन देशों के बीच युद्ध का कारण बन जाता है। अंत में यह युद्ध हज़ारों लोगों एवं लाखों की संपत्ति नष्ट होने का कारण बन जाता है। अणुव्रत का एक संदेश है कि लोगों का खुद पर नियंत्रण होना चाहिए। अगर कोई आपको मारता है तो आप उसकी तरफ कोई भी हलचल मत दिखाए। ऐसा करने पर खुद समाज के लोग ही उस पर थू–थू करेंगे। जैसा कि सब जानते हैं कि 'असली बहादुर वह है जो बदला न ले।'

अहिंसा भी अणुव्रत के कई संदेशों में से एक है। इसे सबसे ज़्यादा बढ़ावा महात्मा गांधी एवं मार्टिन लूथर किंग (ज्यूनियर) ने दिया था। यह एक ऐसा हथियार है जिससे को बिना खूनखराबे अथवा बिना मारपीट के बड़े से बड़े युद्ध को जीता सकता है। जिस कार्य को हिंसा द्वारा करना असंभव है, उसे अहिंसा से प्राप्त किया जा सकता है। इसका जीता–जागता उदाहरण भारत का स्वतंत्रता संग्राम है। हमारा देश अहिंसा के मार्ग पर चलने से ही आज़ाद हो पाया, भले इसमें बहुत कष्ट सहने पड़े हों।

अतः अहिंसा का मार्ग भले ही लम्बा और कष्टदायक हो लेकिन वह हमें अंत में जीत दिलाता है, इसलिए वह सर्वोपरि है। जैसे सारी दुनिया झूठ के मार्ग पर चलने लगी है, इस कलियुग में सत्य का जीना मानो असंभव हो गया है। मनुष्य झूठ बोलने लगा है। आज अगर वह कोई गलती करते हुए पकड़ा जाता है तो सत्य कहकर आत्मसमर्पण करने के बजाय वह झूठ कहकर बचना चाहता है। इसके बाद वह एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ के पहाड़ बनाता है और किसी भी तरह से बचता रहता है।

जैसा कि हम सब जानते हैं किः आसान रास्ता सदैव सबको लुभाता है, लेकिन अंत में वह उसे मुश्किलों में डाल देता है। इसके विपरीत में

कठिन रास्ता भले ही शुरूआत में कष्ट दे, लेकिन अंत में अवश्य जीत दिलाता है। इसलिए जब झूठ की बजाय सत्य कहते हैं तो भले ही हमें थोड़ा कष्ट सहना पड़े लेकिन अंत में हमारे मन में डर व भय नहीं रहता। अणुव्रत सदैव से ही हमेशा सत्य कहने की प्रेरणा देता है क्योंकि जो लोग सत्य कहते हैं वे चिंतामुक्त और शांत रहते हैं। उनका मन सदैव स्थिर और शांत रहता है।

इसी तरह आज दुनिया बेईमानी जैसे कुकर्म से नहीं बच पाई है। आज भाई ही भाई को लूटता है, एक दोस्त दूसरे दोस्त को धोखा देता है और बेटा ही अपने पिता को लूटता है। आज लोग सिर्फ अपने फायदे के बारे में सोच रहे हैं जो उन्हें बेईमानी के मार्ग पर चलने के लिए मजबूर कर रहा है। ऐसा कर वे लोग अंदर से बिल्कुल काले हो चुके हैं जिसमें किसी भी सद्भावना का वास होना लगभग असंभव है।

अणुव्रत लोगों को ईमानदार रहने की सीख देता है। ऐसे ईमानदार लोग सदैव सुखी रहते हैं और उनमें ही भरोसा व विश्वास किया जा सकता है। ऐसे लोग कभी भी बुरा काम नहीं करते हैं और हमेशा सच्चे मार्ग पर चलते हैं। उन्हें माया, लालच, स्वार्थ एवं बेईमानी जैसे भाव छू भी नहीं जाते हैं।

आज जहाँ द्वेष, ईर्ष्या और दुश्मनी ने लोगों के मन में जगह ले ली है, अणुव्रत हमें सबसे प्रेम करने की सीख देता है। हमें सबसे प्रेम करना चाहिए चाहे वह मनुष्य हो, पशु–पक्षी हा या कोई और जीवित वस्तु। जो दूसरों से प्रेम करता है, उसे बदले में प्रेम ही मिलता है। सब लोग उससे प्रेम करते हैं और उसका सम्मान करते हैं और वह सबके हृदय में बस जाता है। महावीर जी के अनुसार किसी भी जीवित प्राणी को मारना पाप है जिसे किसी को भी नहीं करना चाहिए।

अंततः आज की दुनिया की सारी समस्याओं को कोई हल कर पाए या नहीं, लेकिन अणुव्रत इसका असली समाधान है। यह आज भी लोगों को हर तरह की मुसीबत से बचा सकता है और इस कलियुग से पृथ्वी को आज़ाद कर और भी सुखद जगह बना सकता है जहाँ लोग सुख एवं शांति से जी सकते हैं। ✿

समस्याएं बदल जाएंगी समाधान में, बशर्ते...

◈ **jf'e** 9वीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
अशोक विहार, दिल्ली

ऊँची-ऊँची इमारतें, लम्बे-लम्बे मेट्रो पुल, नदियों पर बने बाँध, जमीन के नीचे और समुद्र के ऊपर तक बसेरा करने वाला इंसान यह भूल रहा है कि जब प्रकृति का संतुलन ही न रहा तो फ्लाई ओवर, बाँध, मैट्रो क्या टिकेगी। इंसान, भगवान समान बनकर बस संसार की नई तस्वीर की संरचना किये जा रहा है और प्रकृति के साथ खिलवाड़ किये जा रहा है।

vkज इस युग में हमने जितनी तरक्की की है उससे हमारा जीवन सुखद व सुखमय तो बन गया है साथ ही इस युग की युगीन समस्याएं बढ़ रही हैं। समय जैसे–जैसे आगे बढ़ रहा है वैसे–वैसे नई–नई सुविधाएं व समस्याएं जन्म ले रही हैं। इंसान सुविधाएं लेकर खुश हो रहा है। कई बार इंसान का जीवन बिल्कुल ही शून्य हो जाता है जब उसके साथ ऐसी–ऐसी समस्याएं आती हैं, जैसे बम–काण्ड, लाश का तंदूर में भुनना, चेहरों पर तेजाब फेंकना, नई उम्र की किशोरी से सामूहिक बलात्कार करना, तीन महीने के शिशु के साथ कुकर्म करना, राह चलती महिला को गोली मार देना, सूटकेस में महिला की लाश के टुकड़े–टुकड़े करना, स्कूली बच्चों के साथ दुष्कर्म करना, नेता व भक्षक डॉक्टरों का ही किया रोगी बलात्कार, आए दिन रिश्वत, भ्रष्टाचार, महंगाई, गरीबी नित नई समस्याएं। ये सभी तो रही सामाजिक समस्याएं लेकिन इस युग की समस्याएं यहीं समाप्त नहीं होती हैं। अभी तो बहुत कुछ बाकी है।

आधुनिक युग ने जैसे मोबाइल, लेपटॉप, मेट्रो ट्रेन, फैक्स, लेजर द्वारा मेडिकल इलाज करना, लेजर द्वारा मोटापा कम करना व अनचाहे बालों को मिटाना,

सी. टी. स्कैन, बड़ी और ऊँची–ऊँची इमारतें और सी. एन. जी. परिवहन और न जाने क्या–क्या तरक्की की है। हम कर रहे हैं इन सब चीज़ों से जिंदगी जितनी सुखद हम कर रहे हैं, उतनी समस्याएं हमारे सामने आ रही हैं। फ्रीज, माइक्रोवेव, ए. सी. आदि से जो गैसें प्रकृति में फैल रही हैं, उससे धीरे–धीरे प्रकृति अपनी प्रकृति को छोड़ती नज़र आ रही है।

आज के युग के मौसम बिना वक्त से सर्दी में गर्मी और गर्मी में सर्दी अहसास दिलाते हैं और वर्षा ऋतु में वर्षा न होकर गर्मी में गर्मी होती है, इस सबका कारण है सूर्य की तेज किरणें अब सीधे हमारी धरती पर पहुँच रही हैं क्योंकि धरती की सतह पर कुछ गैसों को रोकने वाली ओजोन पर्त फट रही है जिससे धरती पर सीधा आग की गर्मी, गर्म–तेज धूप मानव जाति को नुकसान पहुँचा रही है। हमारी हरी–भरी वन संपदा को जला रही है। कहीं नदियों के जन–जीवन को सुखा रही है और कहीं सी. एन. जी. परिवहन को जला रही है।

पिछले कई युगों में तापमान 35 डिग्री से ऊपर नहीं जाता था लेकिन आज के युग में तापमान 50 डिग्री तक जा पहुंचता है। यह नहीं कह सकते कि अग्रिम युग की हालत क्या रहेगी। इस तरह बढ़ती धूप–गर्मी को आने वाला मानव सहन कर पायेगा या नहीं, यह सोचने का विषय है।

ऊँची–ऊँची इमारतें, लम्बे–लम्बे मेट्रो पुल, नदियों पर बने बाँध, जमीन के नीचे और समुद्र के ऊपर तक बसेरा करने वाला इंसान यह भूल रहा है कि जब प्रकृति का संतुलन ही न रहा तो फ्लाई ओवर, बाँध, मैट्रो क्या टिकेगी। इंसान, भगवान समान बनकर बस संसार की नई तस्वीर की संरचना किये जा रहा है और प्रकृति के साथ खिलवाड़ किये जा रहा है। मिसाइलों द्वारा वर्षा करवाता है, भविष्य में इसके परिणाम सही नज़र नहीं आ रहे हैं।

आज का युग बेहद तरक्कीशील, तकनीक लैस है और इससे हर देश अपनी आंतरिक व बाह्य सुरक्षा को नज़र में रखते हुए कई विनाशकारी बम, मिसाइलें बना चुका है। उनका इस्तेमाल न चाहते हुए भी एक समय के अन्तराल पर करना होगा। क्योंकि किसी भी चीज़ की उम्र होती है। वह बढ़ती उम्र में घटती नहीं। कई प्रकार के अणु, परमाणु बम निष्क्रिय नहीं किये जा सकते।

जिन्हें हम समुद्र या पहाड़ों भी फेंके तो भी दुनिया का विनाश होना मानव ने निश्चित कर दिया है। हमने एक और तरक्की को चरम पर पहुँचा दिया है, दूसरी ओर विनाशलीला का मंच तैयार कर बैठे हैं।

आज हम अगर कृषि का हाल देखें तो सभी ओर खेती उर्वरकों के भरोसे की जा रही है। केमिकलों के सहारे सब्जी, फल, दूध बनाये जा रहे हैं। इन रसायनों की सही–गलत मात्रा को मापे बगैर केवल लालच में अंधे होकर लगातार इन्जेक्शनों से फल व सब्जियाँ बड़ी कर मॉर्किट में ला रहे हैं। मानव उनका सेवन करने पर मज़बूर है क्योंकि हर इंसान तो स्वयं के लिए खेती नहीं कर सकता है।

अनाज का भण्डार रासायनिक केमिकलों की सहायता से रखा जा रहा है। इन सबने इंसान की दिमागी, दिली हालत पर बुरा प्रभाव डाला है। हम देख रहे हैं कि नई पीढ़ी के परिवारों की खुशहाली को भी बिगाड़ दिया है। आज की महिलाओं में भ्रूण कम तैयार होने की समस्याएं बेहद तेज़ी से बढ़ रही हैं। मानव धीरे–धीरे नवयुग के साधनों का आदी होता जा रहा है। एक बार इंसान सभी चीजें, सुविधाओं के बगैर अपने आप को देखे तो समझ में आ जाएगा कि आज हम नवयुग की आधुनिक तकनीकी के बगैर शायद जी भी नहीं पाएंगे।

मानव ने धरती पर रहने वाले इंसान को चाँद पर पहुँचा दिया है। शायद कुछ समय बाद चाँद पर बसेरे भी बस जायेंगे। हमें चाहिए धीरे–धीरे कम से कम रसायन व खतरनाक अणु–परमाणु बमों को छोड़कर पिछले युगों की तरह पूरी धरती पर हरियाली लाएं। बनावटी दुनिया में अपना खानपान शुद्ध रखें। सभी एक–दूसरे को सहयोग करें। लोगों को अच्छा बनाने के लिए ज्यादा प्रोत्साहित करें और अच्छा माहौल तैयार करें। यह सब आचार्य तुलसी द्वारा अणुव्रत आंदोलन में समाहित है। स्वयं को बदल लेंगे तो समस्याएं भी समाधान में बदल जाएंगी। हर इंसान दूसरे इंसान की अच्छी सोच पर अमल करे तो हमारी नींव अगले युग के लिए तैयार होगी। अत्यधिक इमारतें, फ्लाई ओवर छोड़कर सादा घर व हरियाली भरे रास्ते तैयार करे। परिवार नियोजन पर हर इंसान चले तो शायद हमें नवयुग और अधिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। ✿

विस्तार नहीं, संयम देता है समाधान

आज अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी अणुव्रत की जीत दिखायी जाती है। जिस पंचशील ने अनेक राष्ट्रों को मैत्री के रूप में बांधा है, उसमें एक शील है आक्रमण न करना। साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का मूल हिंसा है और अनाक्रमण की वृत्ति का लाभ है शांति। अनाक्रमण मैत्री की पहली मंजिल है।

◈ çf{kk vkpfy;k 10वीं
संत मीरा गर्ल्स स्कूल
नीजातपुरा, उज्जैन, मध्यप्रदेश

eनुष्य मन वाला प्राणी है अर्थात् उसका मन दौड़ता है तो इन्द्रियाँ दौड़ती हैं। इन्द्रियों की दौड़ मनुष्य को भोगी, हिंसक, क्रूर व आतंकी बना देती है। जब मानव में आराम से जीवन बिताने की वृत्ति पनपती है तब वह कुछ नकारात्मक, अनावश्यक व अनुपयोगी शक्ति का उपयोग करता है व देश, समाज व विश्व में एक प्रश्न–चिन्ह बनकर उभरता है। धीरे–धीरे यही प्रश्न एक समस्या बन जाता है और यही समस्या युगीन समस्या है क्योंकि इसका भी जन्म मनुष्य के जन्म के साथ हुआ है अर्थात् किसी भी समस्या का जन्मदाता मनुष्य ही है। धीरे–धीरे एक समस्या से कई समस्याएं जन्म लेती हैं।

इतिहास गवाह है हिंसा, आतंक, क्रूरता आदि समस्याएं युगों से चली आ रही हैं और इनका समाधान वैज्ञानिक उपकरणों के आधार पर नहीं हो सकता व ना ही अनुवांशिकी विद्या के आधार पर हो सकता है। इनका समाधान अपनी अंतर्रात्मा के अनुसंधान से ही हो सकता है। आत्मा का अनुसंधान केवल अणुव्रत के आचरण से ही हो सकता है।

आज का सारा चिंतन परिस्थिति के आधार पर हो रहा है अर्थात् जैसा

वातावरण होगा, वैसा ही आदमी होगा। वह वैसा ही आचरण करता है। यह एक भ्रम है। इसी भ्रम को तोड़ने के लिए आचार्य तुलसी ने एक आंदोलन चलाया अणुव्रत आंदोलन, जो किसी भी समस्या के अंकुरण को फूटने से पहले ही इसका समाधान करता है।

किसी भी समस्या का एक कारण होता है उसमें मुख्य रूप से है–मनुष्य की भोग प्रवृत्ति, भोग विलास का अतिरेक व अतिसंग्रह। प्रत्येक व्यक्ति सुख–सुविधा व अधिकारों की उच्चता चाहता है। यह चाह उसे दूसरों के प्रति अन्याय व अधिकार हरण की ओर ले जाती है और हिंसा, युद्ध व शांति जैसी समस्याओं को जिंदा रखती है। इन निरंकुश इच्छाओं पर अहिंसा–अणुव्रत के द्वारा अंकुश लगाया जा सकता है।

अहिंसा का मूल आध्यात्मिक शांति की अनुभूति है। इसका अग्र प्रेम, मैत्री, समानता और एकता का व्यवहार है, स्वार्थ का विसर्जन इसका प्रतिबिम्ब है। हिंसा का मूल ममकार और अहंकार है। इसका अग्र है गाली–गलौज, उत्पीड़न व हत्या, इसका प्रतिबिम्ब है 'स्वार्थ'। अर्थ स्पष्ट है। जो व्यक्ति अहिंसा–अणुव्रत का पालन करता है वह स्वतः ही हिंसक प्रवृत्ति का त्याग करता है, किसी भी प्राणी के प्रति असत् आचरण नहीं कर सकता है।

अणुव्रत का अगला नियम है नैतिकता। व्रत की भावना में नैतिकता अन्तर्निहित है। नैतिकता एक भावना है जो करुणा में निहित है। जो व्यक्ति करुणा को पकड़ लेता है, वह अनैतिक नहीं हो सकता है, क्रूर नहीं हो सकता है। जिस व्यक्ति के हृदय में करुणा का स्त्रोत फूट पड़ता है, वह किसी के प्रति क्रूरता का आचरण नहीं कर सकता, किसी का अहित नहीं सोच सकता है।

चिरकाल से चली आ रही भोग विलास की प्रवृत्ति पर भी अणुव्रत के आचरण से अंकुश लगाया जा सकता है। व्यक्ति अगर संयम–अणुव्रत का पालन करता है तो व्रती जीवन में इच्छा नियंत्रित हो जाती है। सुखों को भोगने के लिये व्यक्ति के मन में संग्रह का भाव आता है। दूसरों का शोषण, उत्पीड़न दमन आदि के पीछे यही मनोवृत्ति होती है। अत्यधिक भोग के लिए व्यक्ति आतंक का सहारा लेता है और महा हिंसा व

महापरिग्रह की दिशा में चला जाता है। व्यक्ति अगर संयममय जीवन का निर्धारण करता है तो महा हिंसा व महापरिग्रह के अल्पीकरण की ओर चला जाता है।

संयम–अणुव्रत के द्वारा अति प्राचीन वेश्यावृत्ति पर भी प्रतिबंध लगाया जा कसता है और समाज की इस समस्या का समाधान हो सकता है। कोई भी नहीं चाहता है कि उसे कोई ठगे, धोखा दे, बईमानी उसके साथ हो, यह सब नहीं चाहना अणुव्रत को स्वीकार करने की प्रेरणा है। जहाँ आदमी अपना स्वार्थ छोड़ दे वहाँ व्यक्ति अणुव्रती होता है।

आज अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में भी अणुव्रत की जीत दिखायी जाती है। जिस पंचशील ने अनेक राष्ट्रों को मैत्री के रूप में बांधा है उसमें एक शील है आक्रमण न करना। साम्राज्यवादी मनोवृत्ति का मूल हिंसा है और अनाक्रमण की वृत्ति का लाभ है, शांति। अनाक्रमण मैत्री की पहली मंजिल है। आक्रमण की वृत्ति क्रूरता से बनती है। इन क्रूर वृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए निःशस्त्रीकरण की शरण लेनी होती है।

निःशस्त्रीकरण के लिए भावनात्मक धारा के परिवर्तन की आवश्यकता है और यह परिवर्तन एक अहिंसा अणुव्रती ही कर सकता है। 21 वीं शताब्दी की जो कल्पना की जा रही है वह आतंकवाद के रुप में श्राप होगी। 21 वीं शताब्दी रोबोट व कम्प्यूटर का युग है जो मानव का सारा काम कर देगा। आदमी निठल्ला बैठेगा। अत्यधिक आराम शारीरिक व्याधि को जन्म देता है, व्याधि का कुप्रभाव मन पर पड़ता है।

आदमी की मनोवृत्ति बदल जाती है। वह क्रूर, अपराधी बन सकता है। भावनाओं की बात करें तो अणुबम का भाव पहले आता है, निर्माण बाद में आता है। जब तक भावनात्मक निःशस्त्रीकरण नहीं होगा आतंकवाद की समस्या समाप्त नहीं होगी। यह परिवर्तन अहिंसा अणुव्रती ही कर सकता है। प्रत्येक राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता को बनाये रखने के लिए उसका विस्तार चाहता है। यह लोभ भय को जन्म देता है, भय शस्त्र को। यहाँ निर्लोभीकरण व अभयीकरण व्रत के बिना निःशस्त्रीकरण की बात सरल नहीं लगती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी समस्या का समाधान सीमा में है, संयम में होता है, विस्तार में नहीं। अतृप्ति का अन्त त्याग में होता है, आसेवन में नहीं। अणुव्रत के नियम संयममय हैं, अहिंसक हैं, साधना से परिपूर्ण हैं। व्यक्ति अपनी वृत्ति को सहज नहीं बदलता किन्तु अणुव्रत व्यक्ति की विविध मनोवृत्तियों को छोटे–छोटे संकल्पों से परिवर्तित कर देता है। जहां एक अणुबम विश्व विनाश कर सकता है, वहाँ एक अणुव्रत विश्व कल्याण कर सकता है। ✿

बोली ऐसी बोलिए...

एक बोली ही है अगर आप किसी की बेइज्ज़ती करते हैं तो वह आपके लिए अपने दिल में नफरत पालना शुरू कर देता है। उसका व्यवहार आपकी तरफ बदलने लगता है। वह हमेशा आपसे दूर भागता या फिर आपकी बेइज्जती करने का मौका ढूंढता है और चार लोगों को आपके बारे में भड़काता रहेगा।

◈ **xjyhu dkj** 8वीं बी
गुरु हरकिशन पब्लिक स्कूल
इंडिया गेट, दिल्ली

tैसा कि सभी को पता है कि जब हम किसी अन्जान को मिलते हैं तो हम सबसे पहले उसकी बोली से उसके बारे में बहुत कुछ जान लेते हैं– वह कैसे घर से होगा, उसके दोस्त कैसे होंगे? और भी बहुत सारी बातें हम उसके बारे जान सकते हैं सिर्फ और सिर्फ उस व्यक्ति के बोलने के ढंग से।

यहाँ पर मैं भाषा वाली बोली की नहीं बल्कि बोलने के ढंग वाली बोली को एक सामाजिक समस्या कह रही हूँ। शायद आप के मन में बहुत से सवाल उठ खड़े हुए होंगे कि बोली और एक सामाजिक समस्या? यही ऐसी सामाजिक समस्या, हाँ! हाँ सामाजिक समस्या है जिसे समाज के लोग अपनी रोज़ की जिंदगी में अनदेखा कर रहे हैं।

हमारे भारत में यह कहा जाता है कि शुरूआत हमेशा अच्छे से होनी चाहिए। तो चलिए! मैं आपको पहले बोली के लाभ बताती हूँ। किसी शायर ने कहा है– "खुदा को नामंजूर थी सख्ती जुबान में। इसलिए नहीं रखी, हड्डी जुबान में।"

वैसे बड़ी सही बात कही है उन्होंने। जब भगवान जो हमारे सब कुछ हैं, वो हमारी रक्षा से लेकर खाने का ध्यान रखते हैं, जब उन्हें किसी की भी जुबान में सख्ती नहीं पसंद थी तो उन्होंने हम मनुष्यों की जुबान में हड्डी ही नहीं रखी। जब उन्हें नहीं पसंद तो हम मनुष्यों को सख्ती की जुबान कैसे पसन्द आएगी।

e/kj ok.kh d cgr l ykÒ %

- उसे सारे लोग शरीफ, ईमानदार और एक अच्छा इंसान समझते हैं जिसे बोलने की तमीज हो।
- अगर हम एक विद्यार्थी हैं तो हमें अपनी बोली पर बहुत नियंत्रण रखना चाहिए तभी तो अध्यापक अच्छे अंक लोने वाले बच्चों को तो प्यार करता ही है पर तमीज़ से बात करने वाले विद्यार्थी को अलग प्यार करता है। वह जानता है कि यह बच्चा कभी भी नहीं बिगड़ेगा।
- हमें अपने छोटे और बड़ों दोनों से एक ही तरह की इज्ज़त देकर बात करनी चाहिए तभी तो उसके दिल में हमारे लिए इज्ज़त उत्पन्न होगी और दूसरा व्यक्ति खुद भी हमसे गंदी तरह से बात करने से पहले दस बार सोचेगा।
- हमें अपने दर्जे से छोटे लोगों को भी सम्मान देना चाहिए। क्योंकि अगर आप दूसरों के साथ इज्ज़त से बात नहीं करेंगे तो वह भी कैसे इज्जत करेगा। इसलिए हमें हमेशा अपने बोलने के ढंग का ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि बिना कुछ दिए, लेने की उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए।

अगर हमें किसी चीज़ का लाभ पता है तो हानि भी पता होनी चाहिए। तो अब हम चले हैं ढंग से किसी के साथ बात न करने की हानि पर। कबीर जी कहते हैं: "आवत गारी एक है, उलटत हुई अनेक। कह कबीर नाहिं उलटिए, वही एक की एक।"

उनके कहने का यह मतलब है कि कोई अगर आपको गाली देता है या फिर आपसे बदमीज़ी से बात करता है, अगर आप उसे उलटकर गाली

देते हैं या फिर उसके साथ बुरा बर्ताव करते हैं तो बात और बढ़ जाती है। अगर आप अपने में संयम रख कर उसे उलटकर जवाब नहीं देते हैं तो बात वहीं खत्म हो जाती है। अगर आप वैसा नहीं करते तो उस व्यक्ति और आप में क्या फर्क रह जाएगा।

- जैसे कि मैंने कहा था की आप दूसरे व्यक्ति के बोलने के ढंग को देखकर ही समझ जाते हैं कि वह व्यक्ति कैसा होगा। अगर आप किसी और के सामने अपने बोलने के ढंग को ठीक तरह प्रस्तुत नहीं कर पाते या फिर बहुत ही गंदे ढंग से बोलते हैं तो आपकी बात सुनने वाला व्यक्ति ही आपकी इज्ज़त नहीं करेगा और लोगों की तो आप बात ही मत पूछिए।

- एक बोलने का ढंग ही है जिसकी वजह से इतनी लड़ाईयाँ होती हैं समाज में क्योंकि आजकल का ज़माना ऐसा है कि आदर दो, आदर लो।

- अगर आप किसी से बदमीज़ी से बात करते हैं तो ज़ाहिर है कि दूसरा व्यक्ति भी आपको सम्मान देने की नहीं सोचेगा और इसी बात पर कितनी लड़ाईयाँ होती हैं। वही व्यक्ति आप के बारे में दूसरों को उस बात को नमक–मिर्च लगाकर कहेगा और आपकी समाज में कोई इज्जत नहीं रह जाएगी।

- एक बोली ही है अगर आप किसी की बेइज्ज़ती करते हैं तो वह आपके लिए अपने दिल में नफरत पालना शुरू कर देता है। उसका व्यवहार आपकी तरफ बदलने लगता है। वह हमेशा आपसे दूर भागता या फिर आपकी बेइज्जती करने का मौका ढूंढता है और चार लोगों को आपके बारे में भड़काता रहेगा।

आपके लिए दूसरों के दिल में आपकी इज्ज़त खत्म करने की कोशिश करता अगर वह इस चीज़ में कामयाब हो जाता तो आपके लिए कुछ ही दिनों में दुश्मनों की फौज तैयार खड़ी होगी जो आपके सिर्फ एक व्यक्ति से बुरा व्यवहार या गंदी तरह बोलने की वजह से हुआ है।

इसलिए किसी के साथ बुरा बोलने से पहले दस बार सोचिए। अगर आपको किसी व्यक्ति से अपना उल्लू सीधा करवाना है तो आप ज़ाहिर ही उसे ज्यादा इज्ज़त, मान, आदर देने लगेंगे क्योंकि आपको पता है कि वहीं आपका काम कर सकता है। अगर आप उसी से गंदी तरह बात करेंगे तो वह आपका काम करना तो छोड़ ही देगा और दस लोगों को भी आपका काम नहीं करने देगा क्योंकि दुनिया में आत्मसम्मान को सबसे बड़ा दर्जा दिया गया है।

- अगर आप किसी को सम्मान नहीं देते हैं तो वह आपको इज्ज़त नहीं देगा और दूसरे लोगों को आपके लिए कुछ अच्छा करने भी नहीं देगा।

- और एक यही बात मुझे सबसे बड़ी युगीन समस्या लगती है और शायद यह मेरा सोचना सच होता जा रहा है क्योंकि आतंकवाद और सारी बुरी चीजें सिर्फ हमारी बोली की वजह से बढ़ रही है क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जो सिर्फ सम्मान के लिए जीते हैं अगर इनके सम्मान को ठेस पहुंचती है तो वह बुरी चीज़ों का सहारा लेते हैं क्योंकि उन्हें बुराई का रास्ता ही ठीक लगता है। उनके अन्दर उस समय बदले की भावना उत्पन्न होने लगती है।

अगर हमें सारी बुराई खत्म करनी है तो बस एक यही समाधान है कि हमें शुरूआत अपने अन्दर से करनी होगी। अपने बोलने के ढंग को सुधारना होगा। अपने अंदर संयम की भावना लानी होगी। तभी हम इस समाज में चैन, सुख और बिना किसी झगड़े– लड़ाई के रह सकेंगे। ✿

भागीदारी से निकलेगा हल

हर्ष का विषय है कि हमारी सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है तथा हमने कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। बेकारी के निवारण के लिए देश का औद्योगिक विकास भी आवश्यक है। जो विभिन्न योजनाएँ सामने आ रही हैं, उनसे यह आशा बँधी है कि धीरे-धीरे यह समस्या सुलझती जाएगी।

◈ **fouhrk jko** 10वीं अ
रावमान सिंह पब्लिक स्कूल
पपरावट रोड, नजफगढ़, दिल्ली

Okरत संस्कृतियों से परिपूर्ण देश कहा जाता है लेकिन भारत में युगों से चली आ रही कुरीतियाँ, रूढ़ियाँ, कुप्रथाएँ भी हैं, जैसे भ्रष्टाचार, अशिक्षा, बाल–विवाह, गरीबी, दहेज–प्रथा, बढ़ती आबादी, महँगाई, बेरोजगारी आदि। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए भारत में अनेक प्रकार के अणुव्रत द्वारा प्रयोग व उपाय किए जाते हैं।

cdkjh dh leL;k% बेरोजगारी अथवा बेकारी का अर्थ है– काम करने योग्य और काम करने के इच्छुक लोगों के लिए काम का अभाव। देश में बेकारी की समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई है जिस पर नियंत्रण पाना सरकार के लिए असंभव–सा प्रतीत होने लगा है। बेकारी की समस्या पर कैसे काबू पाया जाए? इस संबंध में विचार करने से पूर्व इसके कारणों पर विचार अपेक्षित है। देश की बेकारी दूर करने के लिए कृषि का समुचित विकास आवश्यक है। इसके लिए किसानों को प्रशिक्षण, उन्नत बीज, उत्तम खाद तथा कृषि यंत्रों का प्रबंध और सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार आवश्यक है।

हर्ष का विषय है कि हमारी सरकार इस दिशा में प्रयत्नशील है तथा हमने कृषि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है। बेकारी के निवारण के लिए देश का औद्योगिक विकास भी आवश्यक है। जो विभिन्न योजनाएँ सामने आ रही हैं, उनसे यह आशा बँधी है कि धीरे–धीरे यह समस्या सुलझती जाएगी। आज के शिक्षित वर्ग ने जिस प्रकार परिवार नियोजन कार्यक्रम को अपनाया है उससे भी बेरोजगारी की संख्या अनियंत्रित रूप से नहीं बढ़ने पाएगी। सरकार की उदार आयात–निर्यात नीति के कारण अनेक बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार के नए अवसर प्राप्त हुए हैं।

c<rh vkckndh % भारत आजादी के इतने वर्षों बाद भी जिन अनेक समस्याओं से ग्रसित है, उनमें से सबसे भयंकर एवं विकराल समस्या है जनसंख्या वृद्धि। यही समस्या अन्य अनेक समस्याओं के मूल में है। गरीबी, बेरोजगारी, घटते संसाधन, भ्रष्टाचार आदि अनेक समस्याओं की जड़ यही है। इसके कारण नागरिकों का नैतिक पतन होता है, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय चरित्र को हानि तथा कार्यक्षमता एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर भी बुरा असर पड़ता है।

जनसंख्या बढ़ने के कारण अनेक हैं– छोटी उम्र में विवाह, पुत्र की कामना, सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताएं, भाग्यवादी दृष्टिकोण, अशिक्षा, जानकारी का अभाव आदि। इन सभी कारणों को दूर कर जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाना अनिवार्य है। यह सच है कि इस संबंध में सरकार द्वारा अनेक प्रयास किए गए हैं। जनसंचार माध्यमों द्वारा परिवार नियोजन के संबंध में व्यापक प्रचार किया गया है और किया जा रहा है। अनेक समाज सेवी संस्थाएं भी इस दिशा में कार्य कर रही हैं। विवाह की आयु निर्धारित की गई है। एक लड़की के लिए अनेक सुविधाएं दी जा रही हैं, फिर भी आशानुरूप सफलता नहीं मिल पाई है। यह केवल सरकार का ही नहीं अपितु नागरिकों का भी कर्तव्य है कि वे इस क्षेत्र में सजग प्रयास करें।

Ò"Vkpkj % आज के आधुनिक युग में व्यक्ति का जीवन अपने स्वार्थ तक सीमित होकर रह गया है। प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ प्रमुख हो गया है। समाज में अनैतिकता, अराजकता और स्वार्थपरता का बोलबाला हो गया है। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति और उसका पवित्र तथा

नैतिक स्वरूप धुँधला–सा हो गया है। इसका एक कारण समाज में फैल रहा भ्रष्टाचार भी है। भ्रष्टाचार के इस विकराल रूप को धारण करने का सबसे बड़ा कारण यही कि इस अर्थप्रधान युग में प्रत्येक व्यक्ति धन प्राप्त करने में लगा हुआ है।

मनुष्य की आवश्यकताएं बढ़ जाने के कारण वह उन्हें पूरी करने के लिए मनचाहे तरीकों को अपना रहा है। कमरतोड़ महँगाई भी इसका एक प्रमुख कारण है। हमें हमारे समाज में फन फैला रहे इस विकराल नाग को मारना होगा। सबसे पहले आवश्यक है प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना। यही नहीं, शिक्षा में कुछ ऐसा अनिवार्य अंश जोड़ा जाए जिससे हमारी नई पीढ़ी प्राचीन संस्कृति तथा नैतिक प्रतिमानों को संस्कार स्वरूप लेकर विकसित हो। न्यायिक व्यवस्था को कठोर करना होगा तथा सामान्य जन को आवश्यक सुविधाओं को सुलभ करना होगा। इसी आधार पर आगे बढ़ना होगा तभी इस स्थिति में कुछ सुधार की अपेक्षा की जा सकती है।

ngt çFkk% दहेज एक विकट समस्या है। आज दहेज एक बुराई का रूप धारण करती जा रही है। दहेज के लालच में बहुओं को परेशान किया जाता है। यदि बहू शारीरिक कष्ट और मानसिक पीड़ा देने पर भी दहेज पूरा न कर सकी, तो मिट्टी का तेल छिड़ककर, स्टोव फटने का बहाना बनाकर उसे अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है। दहेज की समस्या के समाधान के लिए कानून भी बने। दो–चार परिवार पुलिस की ज़्यादतियों और अदालतों के निर्णयों से दंडित भी हुए पर इससे क्या? आज भी दहेज की समस्या कानून की खिल्ली उड़ाते हुए पूरे देश में महामारी की तरह फैल रही है।

हमें इन समस्याओं को जड़मुक्त करना होगा। हम ऐसा अणुव्रत कार्यक्रमों में भाग लेकर भी कर सकते हैं। क्योंकि हमारे देश के विकास में ये समस्याएं बाधा के रूप में खड़ी हैं और अणुव्रत की विचारधारा अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी। ✿

ENGLISH

Wars are born in the minds of men

◈ **Debashray Roy** XI
Kalka Public School
Alaknanda, New Delhi

Since all our problems are rooted in the body-mind complex, transcending this is the ultimate solution. This will result not only in the freedom from sorrow and suffering, but in positive bliss. Yoga is the method recommended for its attainment.

Anuvrat is an effective solution to the problem of our time

> "Man thinks foolishly that he can make himself happy, and after years of struggle finds out at last that true happiness consists in killing selfishness and that no one can make him happy except himself."
>
> —Swami Vivekananda

Anuvrat: It is a code of conduct for building a healthy society. It is acquainting people with the philosophy of Anuvrat. It is making them trust, spiritual, moral and human values.

Life is full of problems

None is free from them except two : the perfect being who has transcended them and the absolute idiot who cannot even understand them! All other human beings in between, at various levels of evolution, are beset with them. And ironically,

our modern world, not withstanding all the progress we have made in science and technology, impile of raising our civilization to higher levels, has also multiplied them.

If lack of basic amenities of life worries certain segments of the world society, a surfeit of them is threatening life on earth itself in other sections. Problems and worries beget tensions. Tensions adversely affect the individuals, often forcing them to react more adversely. Natural and legitimate ambitions of life, coupled with inexperience, make the youth particularly susceptible to these tensions. Smoking, alcoholism, drugs, violent out bursts are just symptoms of a sick mind. Hence, all human problems including those of the youth who are part of the human society have to be tackled at a more fundamental level and a more fundamental solution has to be discovered.

The fundamental solution

A fundamental solution has got to be true and valid for all time. Their somtion is:

> "Deep faith in god, and cultivation of the concomitant virtues."

If we want to lift a load, we should first stand on a firm base which will not collapse or yield under the weight of the load in the process of lifting it. Deep faith in God provides us with such a firm base stationed in which we can successfully tackle all our problems.

Life is a serious business. So are its problems. So, should be the solutions too. And this remedy has been tested over the millennia and found to work.

On the way, we should remember.

> "The tragedy of life is not death, but what we let die inside of us while we live."

Practicing Anuvrat can help solve our problems.

To solve our problems: we need two basic things: Wisdom that covers the right solutions and the strength to implement them.

We get these and much more if we have the faith in God and pray to him sincerely. Then, just as the electrical energy from the generating station flows into our bulb when the switch is put on, or, the water of the town reservoir flows into good is really can be known only when we take it seriously and practise it. our bucket when the tap is turned on, even so, great wisdom and tremendous strength will flow into us by faith and prayer enabling us to tackle our problems effectively. The beauty is that

> The divine inflow is directly proportional to the intensity of prayer and faith!

Stages of Life

The Ashrama scheme leads the individual gradually through four stages of life, each stage having an in built system of training for that stage and preparing the ground for the next. The training during Brahmacharya, the first stage, helps him to not only gain intellectual knowledge but also inculcates in him the essential moral and spiritual values, of which self mastery forms the bed rock. This helps him to glide safely into Garhasthya, the married state or the state of the homeholder, where self-mastery is as essential as the obligation to raise and maintain a family. In this stage, he is experted not only to lead a decent and economically independent life, but also discharge his various obligations to the society as a whole. The stage of renouncement, vanaprastha and life of sannyasi – These two stages remain as a rare option in the modern times. Only the first two stages remain and that too is a metamorphosed or even distorted state.

“Satyam vada, Dharman Chara”—The very first piece of advice that a vedic teacher has given to his students is this

“Speak the truth, act according to Dharma”. This advice rendered over five thousand years ago, is valid even today.

Our ‘modern heroes’, born and brought up an atmosphere of lies are apt to laugh at this as simply ridiculous. But, it is often the ridiculously simple things, that are the greatest truths. Universal love implied by the words ahimsa (non-violence) and daya (compassion) should be our first principle of life. This is the best and safest antidote for hatred. Hatred begets more hatred. Violence begets more violence. Just as fire, cannot be quenched by another fire, but by water, even so, hatred can be mullofied only by love.

A saying goes as such:

> The power of love is infinitely of greater potency than the power of hatred.

In these days, it is rather strange that violence among people and wars among nations have steadily been increasing. Perhaps, it is not so strange, since a popular saying goes:

> Wars are born in the minds of men!

The ultimate solution

Since all our problems are rooted in the body-mind complex, transcending this is the ultimate solution. This will result not only in the freedom from sorrow and suffering, but in positive bliss. Yoga is the method recommended for its attainment.

Keeping the Anuvrat philosophy of life as the basis we can deduce some practical disciplines to be followed in our daily life.

1. We are what our thoughts have made us so we should take care of what we think.

We should keep the body fit through proper food and exercise. Suryanamaskar and yogasana are excellent aids in this regard. Avoid all excesses. Let there be moderation, whether in eating, sleeping or work and exercise.

> Any thing that makes us weak physically, intellectually and spiritually should be rejected as poison!

2. We should try to acquire enough professional skill and competence. But too much of it that may cut into other legitimate fields of life should be avoided. We should resist the temptation to earn more money than is really needed to lead a decent and peaceful life and provide for future emergencies. Also try to help others to the best possible extent.

> "So long a millions live in hunger and ignorance, I hold every man a traitor who having been educated at their expense pays not the least need to them"
>
> —Swami Vivekananda

3. We should try to develop a sense of appreciation, a little capacity to enjoy good music, dance or drama or paintings, especially of the classical aesthetic experience leading to spiritual evolution, those of the worried types that degrade our minds should be ruthlessly avoided.

Conclusion

We should try to practice consciously by the three principles of life already mentioned: Universal love and compassion; contentment and absence of greed; and control of passions. We should never mind failures, rather try and try again. Begin the next day with a firm resolve to do better and put this thought frequently in our mind that "I am becoming better and better, in all respects day by day!' We should thus remember.

“Our mistakes have a place here, Go on. Don’t look back if you have done something that is not right.

Now, do you believe you could be what you are today, had you not made those mistakes before?

Bless your mistackes, then

They have been angels

Unawares……..

Hold onto the Ideal—March on!”

All this is not a good dames goody goody advice.

We cannot change the world overnight. But, if we follow the message underlying the principles of Anuvrat, we can slowly realize that the world is also slowly Improving! So, we should start with ourself first. Also, we should try to influence the member of our family and the circle of our intimate friends if we can.

Swami Vivekananda says—

> Truth alone gives strength, strength alone is the medicine for the world’s disease! ✿

Anuvrat council for universal peace

◈ **Sunanya Pilania** XI C
Vaish Model School
Loharu Road, Bhiwani,
Haryana

Anuvrat does not interfere in the person's individual religious belief. Anuvrat lays emphasis on the fact that an individual should endeavour to preserve the purity of his life and character.

Anuvrat has already created a deep impact on Indian Society. It has been warmly welcomed by all sections of society. On account of the strong support from masses it has emerged as a national compaign from the regeneration of moral and spiritual value. Anuvrat does not interfere in the person's individual religious belief. Anuvrat lays emphasis on the fact that an individual should endeavour to preserve the purity of his life and character. Anuvrat mean small vows. Anu means small and vrat means vow. It inspire individuals to practice some basic moral values.

Acharya Mahapragya travelled on foot carrying torch of Anuvrat from one corner of the country to other radiating a message of peace, love and friendship among the people for the regeneration of moral and spiritual values. The time had come when Anuvrat movement carried to all part of the world. It is responsible for planning sustaining and expanding Anuvibha international work. It coordinates various sub-commettees and pleased to say that—

ANUVRAT COUNCIL FOR UNIVERSAL PEACE has now acces to eight thousand peace and non-violence oriented NGOs based in 192 countries. Tulsi was keenly aware of relevance of non-violence at psychological level. He also believed that although the danger of another world war may have receded, Tulsi hailed from a Tulsi hailed from a devout family of Jain traiders in Ladnun and showed early friendship quality and spiritual bet of mind. Destiny knocked when acharya Kalugani, his family guru, came human greed and economic imperialism continue their fair share of violence on the world.

Under his guidance. A compaign has been launched to impart practical training in non-violence. This Missionaries carried his message to meet many dignitaries and religious heads such aDalai Lama, to promote peace and harmony in the world.

Since, ordinary people find the five vows—Non violence, non-stealing, celiacy non-acquisition, common to Hinduism, Buddhism and Janisim.

Preksha Dhyan was the next logical step. Preksha literally means looking deeply the technique involves engaging of the internal phenomenon of consciousness and purify emotions. The science of living aims at all round. Though Anuvibha has been organized its activities in USA for the last many years, with the birth of Anuvibha's counter part in USA it is hoped that it will generate mass awareness of ahimsa and will undertake a series of constructive activities such as organization of annual conference on peace and non-violence training week in schools and colleges and coordination of the event to be organized at UN Head Quarters.

Today, Tulsi has become a synonym of Jainism through his Terapanth, founded the smallest and the newest Jain Sect.

Mahaprajana attribute it to the fact that “Gurudev Tulsi” has had not only a vision but also the inner resource to give it form and movement.

Tulsi hailed from a devout family of Jain traiders in Ladnun and showed early friendship quality and spiritual bet of mind. Destiny knocked when Acharya Kalugani, his family Tulsi had also tried to unite the fraction of Jain community by opening lines of communication.

Jain bano na bano
Good man bano

It doesn’t matter if you become a jain, aspire to become a good man, a moral man. ✿

Good as well as evil are eternal

Social reform is possible through the reform of individual and then the nations as a whole registers regeneration. The dream of social and national reconstruction is entirely dependent on individual reform. The main plank of the philosophy of Anuvrat is building individual character.

◈ **Neha Narula** XI A
M.M Public School
Vasudha Enclave
Pitampura, New Delhi

Anuvrat has already created a deep impact on Indian Society. It has been warmly welcomed by all sections of people Anuvrat does not interfere in a person's individual religious beliefs. It is not interested in knowing the mode of worship an individual follows or the sacred name he recites. Nor is it interested in knowing whether one goes to a temple, mosque or a church, or visits monks and nuns. It also shows no interest in finding out whether one believes in a doctrine of the soul or a super-soul or in the doctrine of moksha (liberation). Anuvrat is pure religion and no sect; nor is it associated with any sect. It is not Jainism, Buddhism, Vedic injuctions, Islam or Christianity. It is a religion without a denomination.

Philosophy

Violence inheres in man; it manifests itself in social life. It is precisely because the seed of violence is there that springs up whenever it gets an occasion to do so. The result is the

outburst of riots and acts of vandalism. Violence assumes many forms, one damages from being hatred. It is spurred by egoism. But for hatred and egoism humanity would never have got divided and the feelings of touchable-untouchable or high-low on the basis of colour or class would never have arisen.

Not everything in the world is variable; there are things invariable too. Nature is perennial; so is human nature. it con sists of different habits at the back of which are elements like anger, vanity, deceit and greed. Good as well as evil are eternal. The twentieth century has been characterized by the importance given to the concept of socialism. The concept has been developed and refined with the result that attempts are being made from all direction to build a healthy society do fare as Anuvrat is cenerned, it aims first at building individuals or human character. Building society, according to it, is the second step.

Social reform is possible through the reform of individual and then the nations as a whole registers regeneration. The dream of social and national reconstruction is entirely dependent on individual reform. The main plank of the philosophy of Anuvrat is building individual character.

Principles

1. Senstivity to the existence of others
2. Unity of mankind
3. Co-existence
4. Communal harmony
5. Non-violent resistance
6. Limited individual acquisition and consumption
7. Intergrity in behaviour
8. Belief in the purity of means
9. Fearlessness, objectivity and truthfulness

Aims

1. To inspire people to observe self-resistant irrespective of their caste, colour, creed, country or language.
2. To establish the values of friendship, unity, peace and morality.
3. To build a non-violent society.

Means

Intellectual revolution

1. Acquainting people with the philosophy of Anuvrat.
2. Making them trust spiritual, moral and human values.
3. Inspiring them to become Anuvratis.

Behavioural revolution

Balancing change of heart and social order.

Eligibility

Everyone believing in developing character can be an Anuvrati

Categories

Anuvrati—one who pledges to follow Anuvratas of the class concerned and the rules pertaining to the sustained practice of Anuvrat.

Anuvrati in relation to one's class-one who follows or practices the Anuvrat of the class concerned.

Anuvrat can be of many types like student's Anuvrat Teacher's Anuvrat Business men's anuvrat officers/ employer's Anuvrat and many more

Sadhna

I will practice Preksha meditation and introspection.

I will practice peaceful coexistence in the domestic life.

I will practice self-restraint in consumption.

I will practice diligence, self-reliance and simplicity.

I will abstain from non-vegetarian food.

I will share or part with a part of my earnings.

I will attend at least one training course in Anuvrat.

The Psychological view

Psychology says that man is governed by the unconscious. All his activities and behaviour are conducted by the unconscious. It again is a partial truth, because there is much behind the unconscious which also acts as conductor. Our wakeful awareness or the conscious also act as conductor. Our wakefulness awareness or the conscious has also something unique about it. Further, the soul which is beyond the unconscious has its own importance too. We thus treat the unconscious as a midpoint with the soul at its back and "intelligent awareness in its fore. Between the two ends operates the unconscious. Man is countless and it is difficult to define him in a few words.

Society and Relations

Let us now consider the nature of relations. Society is a chain of relations. Relation means social orientation or orientation towards society is relation-oriented, i.e. characterized by realtions. These relations start with the very birth of a child. He gets related to parents, brothers, sisters, etc. One who is beyond relations is a sanyasi or mumukshu, can be ascetic who renounced the world or one who is desirous of salvation. The first characteristic of a muni according to the uttaradhyanan Sutra" is freedom from relation. But on the world by plane, the child is surrounded by relations right from its birth. A relation is based on duality.

Individuality & communality

It is true that man is a social living being but it is not true that he is social and nothing else. He is as much individual as he is social. Existentialist philosophers lay emphasis on their individual features, not on common or universal feature. In their opinion, individuality is man's exclusive quality and he cannot be understood by underplaying it. Sociologists hold the view that man cannot survive without water. Here we have two diverse views premium on individuality by existentialist and that on communality by sociologists. It is only by combining both that we get total view.

Songs

Let life be full of self-control.
Bathing in sacred stream of morality,
Every human mind everywhere purify,
Let life be full of self-control ...1

Self-discipline is ANUVRAT, by definition,
Voice of religion, devoid of class, colour or tradition,
Bringing in minds a revolution, by bits of resolution,
Let life be full of self-control ...2

Whether man or woman, student or teacher,
Worker or employer, all living with moral fervor,
Steadily narrowing the gap, between saying and doing,
Let life be full of self-control ...3 ✿

Violence has many forms

◈ **Mast Vikrant R. Gandhekar** I A
Arya Gurukul
Nandivali Village
Kalyan, Maharashtra

Greed and selfishness as individual instincts give birth to cruelty. In fact one man's cruelty shifts to the victim and makes him cruel too. Many of these problems would not have appeared if there had been no greed in man.

Anuvrat is a movement launched by Acharya Shree Tulsi—the head of a Jain Sect and a leading visionary of India on March 1, 1949. Anuvrat has been engaged in the noble task of uplifting human life and revitalizing rapidly vanishing morals and spiritual values among the people of the entire world irrespective of castes, creed and colour. It is the key to understand one's nature and to make efforts to transform it for good.

Principles of Anuvrat

Anuvrat has put forth three principles.

1. Do not indulge in inessential violence.
2. Do not spread communal frenzy and do not practice untouchabiliyt.
3. Do not engage in sectariansim and do not shed blood in the name of religion.

Strict observance of these principles will lead to the birth of new man. He will be worthy of living on this earth and he will make the earth a worthy place to live on. And it will be possible only when he gets rid of personal vanity.

Problems of our world

Violence and crime are two major problems we face today.

Violence has many forms. One major factor behind violence is the individual tendency to grab more and more denying others their share. The latter react with violence which sometimes takes the shape of terrorism. Even as one man is busy earning, he wants to earn at the cost of others. This exploitation is an important cause of violence. If we analyse the phenomena of thefts, robberies, kidnapping and murders, we find that one man's instinct is encouraging the instinct of other person.

Greed and selfishness as individual instincts give birth to cruelty. In fact one man's cruelty shifts to the victim and makes him cruel too. Many of these problems would not have appeared if there had been no greed in man. Man has not grasped the true importance of the instinct of 'I' and 'My'.

How Anuvrat can provide solution?

Anuvrat says that any system howsoever good will not ensure good results unless the quality of the individual is good. We do not a good constitution law and orders, but lack on the quality implementing them. The solution lies in activating the layer of the neocortey. (part of brain developed in higher mammals.) It is beyond the ability of political parties and various institutes and organization. For effective change the following three factors are responsible

1. ***Education*—**Primary education is very important for structuring the new brain. It is between the ages of five and ten years that the cruicial decision, as to which layer

of the brain has to be made more effective, has to be taken. If we succeed in arranging the right type of primary education and proper attention to the child and its brain upto he or she enters the secondary stage, it should be possible to change the social and economic systems, exploitation, crime and corruption control.

2. ***The Media—***The second important element is the media. They should re solve not to give publicity to any event or use languae likely to excite and activate the animal brain.

3. ***Responsibility of a religious teacher—***Religious teachers can play the most important role for achieving the above purpose. The situation can be changed and improved if they have to be formed in their followers and their animal brain has to be vendered in effective. ✿

'Hate the sin, not the sinner'

In this modern era the man has become money minded and he can do anything for the sake of his benefit. Thus there is a dire need of spiritual and idealistic preaching to him so that he would not diverst from his real path of life.

◈ **Shivani Adhana** VII A
Kamal Public Sr. Sec. School
D-Block, Vikaspuri, New Delhi

Anuvrat is a movement, which was launched by late Acharya Tusli on March1, 1949 for the purpose of uplifting and revitalizing human life and crumbling moral and spiritual values rapidly among the people of the world.. irrespective of casts, creed and colour. Anu in Hindi means small and vrat means resolution. By taking small resolutions each one of us can perform a part in conserving nature in our day to day life.

There are five basic principles of Anuvrat i.e. truth, non-violence, non-possession, non-stealing and self discipline in our personal life. The ultimate goal of the movement is to create a non-violent political world order with the help of a world wide network of self tranformed people. The most important thing about the Anuvrat movement is that it strives after the middle path steering clear of the two extremes of absolute ascetism and unbridled materialism resulting in moral torpor and acedia. It also aims at ushering in an era of self awakening the antithesis of the Atomic age.

Acharya Mahapragya, a great thinker and a man of highest spiritual order thought that the primary need of the modern age is to train every individual in non-violence using the methods of Jivan Vigyan (science of living) and preksha dhyan for an effective tranformation of the society which leads the purpose of Anuvrat movement.

The same type of movements were lead by some western thinkers i.e. Bertrand Russel and Marin Luther King. They organised huge peace rallies exorting the people to raise their voice against the senseless genocide caused by nuclear holocaust in Hiroshima and Nagasaki.

Anuvrat Balya is a part ofAnuvrat movement based on child psychology that orients a child towards non-violence and peace by bringing about behavioural changes in his pesonality through using various child oriented activities to establish a rapport coith him and provides an environment where he feels at home.

Our great freedom fighters as well as spiritual leaders always uttered

> Violence is sin, don't do it.
> Always tell the truth, never tell a lie.
>
> —Gandhiji

If we follow the above statements then our life would be full of peace and contentment. One more statement of the same person is "Hate the sin, not he sinner.". which is hundred percent logical. If all the human beings follow this slogan then the world will transform into a heaven.

In this modern era the man has become money minded and he can do anything for the sake of his benefit. Thus there is a dire need of spiritual and idealistic preaching to him so that he would not divert from his real path of life.

In the contemporary time the most alarming evils of the

society are—bribery and corruption for abolishing them some rallies and dharnas are being lead by Shree Anna Hazare (a freedom fighter and an ex-service man of defence department) and yoga guru Baba Ramdev. They have the same slogan.

"Abolish Corruption, save our Nation."

So from making their utterings true we must put our hundred percent endeavour with full zeal and enthusiasm so that a major purpose of Anuvrat will be resolved

Anuvrat is all about picking out any evil from the society and the heart of human beings and enriching them with fruitful idealistic thoughts. It would inculcate the living standard of all the common folk.

It is completely true that we all have become the victim of materialistic approach of behaviour. Thus we don't follow the appropriate way of working, mannerism, idealism and behaviourism.

If we compare ourselves with the people of 'Satyug' then we are not even decimal before them in the matter of personality. What is its reason? Its reason is that we don't know the real meaning of humanity, truth, honesty, manners and apt behaviour.

So for enhancing the above stated points in us there is dire need of adoption of Anuvrat principles in our heart and mind. Then we would be moulded as a true human. Then after our deeds would be matching our utterings and the whole world will convert into a world of satyug once again.

For all this 'Anuvrat' can play a vital role. It could perform many tasks. It is a great platform for moulding the behaviour, ideas, thoughts and modus operandi of the modern man. As it opposes violence, killing, dishonesty, dowry, smoking, drinking etc and supports their antonyms

which shows that its goal is to provide mental and emotional stability to all of us, and in turn it will lead us to a healthy society and will lay a solid foundation for a healthy nation, thus leading the way to a peaceful world for generations to come.....

So let us tranform this movement into a fitting instrument of constructive activities and a veritable laboratory for testing our belief in the Anuvrat movement and philosophy. It would certainly lead us desciplined broad-minded and responsible citizens free from the narrow prejudices of caste, colour, greed and sect.

It we wish to preserve our nature and maintain a healthy and peaceful environment around us, then we should follow the preachings of Anuvrat. It we wish to preserve our nature and maintain a healthy and peaceful environment around us, then we should follow the preaching of Anuvrat.

Thus in conclusion we might remember Neil Armstrong's spontaneous utterance on first stepping on the soil of moon, "One small step for a man but one giant leap for mankind." Who knows Acharya Shree's step (anuvrats or atomic vows) may enventually turn out to be a giant leap of mankind. ✿

The most important thing about the Anuvrat Movement is that it strives after the middle path steering clear of the two extremes of absolute ascetism and unbridled materialism resulting in moral torpor and acedia.

World is to awake into a heaven of freedom

◈ **Swati Kochar** XI E
Arya Girls Public School
Panipat, Haryana

The Anuvrat movement has been engaged in the noble task of uplifting human life and revitalizing the rapidly crumbling moral and spiritual values among the people of the world irrespective of casts, creed and colour for the last three and a half decades.

Launched on 1st March, 1949 by Acharya Shree Tulsi— the head of Jain Sect and a leading visionary of India – The Movement has since grown steadily in size and stature. Though it does not lay claim to any spectacular success on achievement, there is no gain saving fact that its universal appeal for gains saving the f1'act that its universal appeal for self awakening has created a great impact on the outlook and behaviour of many people. It was hailed and patronized by eminent people like late Dr. Rajendra Prasad, lt. Rajgopalchari, lt. Jawaharlal Nehru, Dr. S. Radhakrishnan and Jai prakash Narayan. It has been striving to infuse with new life, people degenerating fast into what T.S Elliot optly calls. "automatications or living shadows inhibiting the great wasteland".

While many western celebrities like Bertrand Russell and Martin Luthar king were organizing huge peace rallies exhorting the people to raise their voice against the senseless genocide caused by the nuclear holocaust in Hiroshima and Nagasaki, by a strange coincidence, as it were, a relatively unknown religious preceptor of the east heading a Jain sect, seated for away in a remote town of Thar desert of Rajasthan, was engaged in an identical mission, though a small way, of rousing the masses against violence and moral torpor. He heard the inner call that commanded him to throw off the yoke of spectrum dogmatism and launched crusade against caste, untouchability, subjection of women and religious intolerance. His response to the call resulted in the birth of Anuvrat Movement. It was in this very way that Simon and Andrew responded when Jesus was walking through the sea of Galilce called to them. The only difference was that the call Acharya Tulsi heard came from within not unlike the one as in the case of saint Joan had heard for centuries before in France. But unlike as in her case the inner voice directed the Acharya to launch a movement for liberating the individual from a bigoted sectarian outlook, fanaticism and an unethical approach, thereby automatically ensuring the imancipation of mankind.

The root of the malady lies in the individual. The Acharya realized that society can't be purged without an inner transformation of man. Instinctively motivated by the maxim:

> In small proportion we just beauties see;
> And in short measures life may perfect be.

Acharya Tulsi began his mission by carefully drawing up a code of conduct for all individuals in society. The code consisted of atomic or small vows. He launched what came to be known as the Anuvrat Movement urging the individuals to pledge themselves willingly to observe the Anuvrat. The Movement embodies a vision and that of

Tagore's heaven of freedom as pictured by him in his immortal work Geetanjali.

The most important thing about the Anuvrat Movement is that it strives after the middle path steering clear of the two extremes of absolute ascetism and unbridled materialism resulting in moral torpor and acedia. The Anuvrat Movement aims at ushering in an era of self awakening.

The Acharya carried his message on far and wide covering thousands of miles on foot, enjoying the discipline of Anuvrats.

The voice of the Movement has by now permated the masses focusing their attention on the importance of self-restraint. The phenomenal rise in incidents is growing multicultural societies mushrooming all over the world giving rise to frenzied massacres like the ones the world watched helplessly in Sri Lanka, Lebanan and South Africa makes it imperative for every one to carry the movement across the seas to ensure amity and reconciliation between different groups and cultures.

The ideational phase of the movement is over. It is time to give it a programmatic and practical shape. Let us transform the movement into a fitting instrument of constructive activities—a veritable laboratory for testing our belief in the Anuvrat philosophy.

Acharya Shree has launched a new scheme of Jivan Vigyan for educating youngster in the doctrine of Anuvrats so that they may grow up as disciplined, broad minded and responsible citizens free from the narrow prejudices of caste, colour, creed and sect. He pins his hope of transforming mankind into a family on this young generation. As head of a religious sect he had set the peace for other religious leaders. It they take from him, the world that lies steeped in communal and ethnic violence today is certain to awake into a heaven of freedom.

In conclusion, we might remember Neil Armstrong's spontaneous utterance on first stepping on the soil of the moon, ' One small step for a man but one giant leap for mankind'. Who knows Acharya Shree's step (Anuvrats or atomic vows) may eventually turn out to be a giant leap for manking? ✿

Let the life be full of self control

The modern world is full of insecurity, fear, war, worry. Everyone wants to escape but the ignorance of the fact of having some changes in themselves, don't let them for the same. Anuvrat helps people to bring about the required changes so as to earn a much better & peaceful life.

◈ **Seema** XII D
Rao Maan Singh Sr. Sec. School
Najafgarh, New Delhi

Indroduction

Whenever we look around, the carefree expression life seems be lost somewhere, in this world. The cry of unrestness can be heard from every direction. This unrestness deprives us from the joy of having a beautiful life. The Chords of our impulses, instincts and institutions are always vocal and vibrant. No doubt, the problem of our modern time in differnt parts of world, under different socio-political systems, differ in counters and contents. But one thing is certain that the modern world is against problems, the like of which does not exist in the past.

For instance, who succeed to find a man to earn a living, do not find sweet song or care free comfort. A host of problem keep staring them in their faces-inadequate house, transport and severage, poor medical & recreational facility shortages, dust and smoke, crimes and what not.

The modern world is full of insecurity, fear, war, worry Everyone wants to escape but the ignorance of the fact of having some changes in themselves, don't let them for the same. Anuvrat helps people to bring about the required changes so as to earn a much better & peaceful life.

Anuvrat

Self discipline is Anuvrat, by definition
Voice of religion, devoid of class, colour
or tradition, bringing in mind a revolu
tion by bit of resolutions...
Let the life be full of self control!

The above few lines of Anuvrat songs depict-what Anuvrat means? In other words, Anuvrat is the philosophy of change. Its sole purpose is to enable man to introspect, understand his own nature and to make efforts to transform it. Leaving al the barriers of disparties, religion, caste, greed rage and violence, behind, it inspires one to transform into a generous, kind and a social well-being. Anuvrat is progressing. It proclaims

"sudhre vyakti, samaj vyakti se"

The main plank of philosophy of Anuvrat is building individual character and developing a feeling of mutual understanding, harmony & brotherhood among various individuals.

MAJOR PROBLEMS OF OUR TIME

Lackness of Mutual understanding

People don't have time for themselves. They remain busy in the outer world and never try to look inside themselves. Their world has now get limited upto their own feelings & thoughts. They are unable to understand others because they haven't understand themselves yet. This lackness of mutual

understanding creates among rich and poor, imperil and weak, white and black and too long.

Increasing Crime

The disease of rage, lust and abuse has destroyed the pour soul of the people, especially, the youth. One when gets fail to achieve his/her goal in life, inspite of making correction, instead of learning a lesson, instead of trying for at least once more, just committs a crime and walk on the wrong bridge of life. Their such actions may provide them a feeling of elavation for a moment, but the resultant make them to sunk in gloom for a much longer time.

Violence

Violence is not a new problem. The histroy of mankind is full of violence. The differentiating part of past and present is that each path, each street and every society has been a place for violence in today's world.

Terrorism

It's like a slur to human society. Thousands of people have to give up their life without any specific purpose or reason. It has made every path of this world insecure and dangerous. The whole world has been swallowed by the monster of terrorim.

Enviornment Degradation

May be the science has put the man to heights but these hollow heights don't mean a lot as when we give a look to its negtaive effects, such result appear which can not be igored. Pollution of air, water, soil, deforestation has lead to crisis of various natural resources, creating a great threat not only for human's generations but for other creatures too.

Other problems

Some other major problems are—depression, developing of

wrong habits of drug addiction etc. among youth, degrading humanity among human etc. one more of the corruption political instability.

Anuvrat can play an important role in solving the problems of our time.

Anuvrat : A Solution

Anuvrat helps people to understand themselves and thus understanding others. It creates harmony, brotherhood and peace among people. Anuvrat is like the most powerful weapon to fight against the evils of society, without any violence and swords.

Communal Harmony

Anuvrat helps and inspires people to believe that all human beings whether rich or poor, white or black, belongs to one God. All creatures are equal. Anuvrat makes one to realise or to introspect himself/herself and thus one comes to know the reality of this fascinating world. This tranforms a person into a kind & generous well-being and such person gives birth to a society where the mutual understanding eliminates the evil of disparities and domination etc.

Non-violence

Rage, lust, revenge, depression, abhor, abuse are some of the root causes of violence. Anuvrat eliminates all these infections and provides a pure soul and the contended one. All such evils like rage, lust etc, remain for away & thus one has no reason to create violence in the society, yet the whole history of civilisation is a narration victory of swords but the fact is that violence can only in birth to rush, rage, lust and destructive outcomes. Someone has said

> People try non-violence for a week,
> and when it does not work,

they go back to violence,
which hadn't work for centuries.

Anuvrat develops that feeling of self-realisation among individuals. It makes one to believe that—Non violence is a weapon available to all, more likely to produce constructive outcome than destructive outcomes.

Peace

Peace is a state of harmony characterised by the lack of violence conflict. It is not only the assence of war or conflict but also the presence of cultural and economical understanding & unity. But peace has unfortunately all along been a pious wish or a dream. Anuvrat is a very glorious path of creating peace in the world. It helps to make people sensitive to the existence of others, co-existing with other in an enviornment of peace and harmony. Persons with such mentality build up a society with bricks of peace & cement of harmony.

Environment Protection

The imbalance in the nature's ecosystem is all due to the mean nature of human being. He enjoys the conforts & luxurious which he wants, but at the cost of environmental degradation. It's when the soul inherents the qualities of being generous and inselfishness, we beign to think for others too. Our efforts to protect enivornment are the results of the same. it is when, we think to ensure the security of coming generation, to save various wild cretures and inducing such thoughts is also a part of Anuvrat.

Targets the root cause

'Anuvrat' is a term, too wider to elaborate. It gives a full stop to most of the evils of society and solves almost all the problems of our society. This is why because Anuvrat destroys the reason or the causes due to which various evils

come into existence. It focuses on the reality and nourishes the part of life. It destructs the feelings of lust, rage, greed and replaces it with contentment. It successfully helps in eliminating the problems of our time by eluminating the root cause of the problems.

Conclusion

> Our people are suffering from a disease
> An infection of lust, abuse, molestation,
> rape, violence, pornography, smoking...
> destroying the pure of soul of our youth...

Anuvrat aims at eliminating all those causes, habits or thoughts which have made the today's world insecure, fill with fear, abhor, rage etc.

1. Inspiring people to observe self restraint irrespective of their caste, colour, creed, country or language.
2. Establishing values of friendship, untiy, peace & morality.
3. Building a non-violent society.

Anuvrat can prove a very effective solution to the problems of our time. Its provides such prosperity at intellectual level which is bright enough to brighten all its surrounding. Its a weapon to win the battle of life. Anuvrat is like the jewellery that beautifies the human nature.

Thus Anuvrat can be an effective soulution to the problem of our time. ✿

Violence is the root cause of terror

One can safely conclude that solutions to most of the social problems lies in adopting the principles of Anuvrat in this age of science and scientific inventions that have made the life casier but has been unable to transform the intellectually aware and intelligent people.

◈ **Bhavesh Rajkumar Ailani** I D
Arya Gurukul School
Nandivali Village
Haji Malang Road
Kalyan East, Maharashtra

What is Anuvrat? It literally means “small vows”.Anu stands for small and vrat for vows. The beauty of Anuvrat is that it does not interfere with our religion or religious beliefs. It is not interested in your mode of worship, not interested in knowing whether one goes to a temple, a mosque or a church.

Anuvrat only emphasizes that an individual should try to preserve the purity of his life and character. It has nothing to do with ones religion, books, sacred places of philgrimage or symbols of religions. It only wants to ensure that his Dharma becomes a part of his behaviour.

Anuvrat inspires individuals to practice some basic moral values—An Anuvrat student will not use unfair means for passing exams, an Anuvrati employee will not accept bribes, an anuvrati farmer will not treat his animals cruelly and so on.

The human religion of Anuvrat as taught by Acharya Tulsi provides a solution to the problems prevailing in the society. It prohibits violence and terror. Violence is the root casue of terror and terrorism.

Human being is prone to greed and ego which are the basic reasons for all the violence and crime taking place in the society. Anuvrat has come up with solutions to these problems. It encourages people to take a vow of non—violence. Even though violence is acceptable once in a while the vow helps to curb violence and build cordial relations.

Lord Mahavir (origin of Anuvrat) gave us a principle of Equipose i.e., self awareness of not doing to others what we think is bad for ourselves. For example we do not like to get robbed so we must not rob other. It we find pain unbearable we must not cause pain to others and so on It curbs our ego and half the society's problems are solved.

The other problem that affects the society is unjust distribution i.e., plenty for few and very little for the majority. Anuvrat teaches us the principles of avoiding unjust consumption which in turn results in more equitable distributions. People get their share and general satisfaction prevails in the society.

Anuvrat has already created a deep impact on Indian society. It has been welcomed by all sections of society and garnered strong support from the masses.

One can safely conclude that solutions to most of the social problems lies in adopting the principles of Anuvrat in this age of science and scientific inventions. Inventions that have made the life casier but has been unable to transform the intellectually aware and intelligent people. ✿

Everything a successful man does is disciplined. There is no arbitrariness or haphazardness about it. It is obvious to people that food, water and more importantly, breath mean life , but they wonder how self restraint can be life.

Desires keep multiplying

◈ **Fatima Sultana** X
Saraswati Vidyalaya
Saraswati Bhawan
Ansari Road, Daryaganj, Delhi

Anuvrat is an effective solution to the problem of our times.

The human religion enunciated by Anuvrat Anushasta Tulsi, provides a solution to the problems pervading the whole society, a solution that does not create new problems and therefore renders violence unnecessary. Various forms of violence are striking terror in society. The increasing bitterness is also a product of violence.

Let us examine the two terms “human being” and “relation” in the above context. First, it is necessary to understand the meaning of ‘human being’. Many branches of knowledge including sociology, psychology have philosophy and interrupted the term and tried to understand man to be basically a social being. Psychologists have explained man and his behavior on the basis of his unconsciousness and basic instincts.

Philosophers have made karma the basis of their interpretation. Spiritual teachers have defined man on the

basis of their intellectual awareness. Aristotle defined man as a rational animal. This kind of ability to reason is not found in any other being. With a partial or one sided view point, no single view or opinion is either fully right or wrong.

Individual Communality

It is true that man is a social living being but it is not true that he is social and nothing else. He is as much individual as he is social. Existentialist philosophers lay emphasis on his individual features, not on common or universal features. In their opinion, individuality is man's exclusive quality and he cannot be understood by underplaying it. Sociologists hold the view that man cannot survive without water. Here we have two diverse views-premium on individuality by existentialist and that on communality by sociologists. It is only by combining both that we get total view.

The Psychological view

Psychology says that man is governed by the unconscious. All his activities and behaviour are conducted by the unconscious. It again is a partial truth, because there is much behind the unconscious which also acts as conductor. Our wakeful awareness or conscious also acts as conductor. Our wakeful awareness or conscious is also something unique about it. Further, the soul which is beyond the unconscious has its own importance too. We can thus treat the unconscious as a midpoint with the soul at its back and intelligent awareness in its fore.

Society and relations

Let us now consider the nature of relations. Society is a chain of relations. Relation means social orientation or orientation towards society is relation-oriented, i.e. characterized by relations. These relations start with the very birth of a child.

He gets related to parents, brothers, sisters, etc. One who is beyond relations is a sanyasi or mumukshu (an ascetic who renounced the world or one who is desirous of salvation). The first characterstic of a muni according to the uttaradhyanam Sutra is freedom from relation. But on the wordly plane, the child is surrounded by relations right from its birth. A relation is based on duality.

I and My

Let us discuss the ways of improving relations on the basis of both advaita and davita. It is the basic instinct which is responsible for relations. Two of our basic instincts are 'I' and 'My'. I represents selfishness and my represents relation. All relations are based on the basis of the instinct of possession. As the instinct of possession extends in scope, the relations multiply.

There would have been no relation in the absence of that instinct. An extension of that instinct is an extension of relations. The problems we face in respect of relation have 'I' at their back, because the 'I' instinct breeds increasing selfishness. The 'my' instinct gets divided into many categories. If it is my son or my family, they can be partners in the profits, I earn. But my servant cannot share in the profits. Again the factor influencing such a categorization of relations is the 'I' instinct. Once 'I' ceases to be narrow and confined and spread out to others all problems pertaining to relations come to an end. 'I' in its narrow form breeds bitterness in relations resulting in complicated problems.

Causes of violence

Violence and crime are two major problems we face today. Violence has a myriad from. One major factor behind violence is the individual tendency to grab more and more, denying others their share. The latter reacts with violence which sometimes assumes the shape of terrorism. Even as

one man is busy earning, he wants to earn at the cost of others. This exploitation is an important cause of violence. If we analyse the phenomena of thefts, robberies, kidnappings and murders, we find that one man's instinct is encouraging the instinct of other person. Greed and selfishness as individual instincts give birth to savagely cruelty. In fact, one man's cruelty shifts to the victim and makes him cruel too. Many of these problem would not have appeared if there had been no greed in man. Man has not grasped the true import of the instinct of 'I' and 'My'. In fact, he has fed them to such an extent that they have made all other instincts secondary.

Material objects and peace are not the same

Let us elaborate the above proposition, for it is essential if people want to lead a happy and peaceful life. Society has come into being so that man may live in peace, and be free from all worry and anxiety. There can be no happiness in the absence of peace. One can pile up items of comfort, but not of peace and happiness. We should never forget the fact that material objects and peace are not the same. We should also remember the fact the problems and unhappiness are not the same. A problem may occur at the physical level or mental level. However, intellectual awareness transcends these levels. If we cling to a problem, there can be no solution. If we are generally improving human relations we should refine the instinct 'I' and 'My' so that selfishness is not forfeited and the freedom of others is not transgressed.

The Solution

Bearing all these in mind, one concludes that the solution lies in adopting the principles of anuvrat and follow the exercise of Preksha Dhyan. What can cause a bigger surprise than the fact that in this scientific age intellectually aware and intelligent people are unable to transform themselves or

even to think of its need, while daily new invention are being made and radical changes are taking place unabated. It is therefore imperative that steps are taken with a view to ensuring a bright future for humanity and a life led with sublime human qualities. One prior condition of such a consumption is an equal and simultaneous emphasis on a change of social order and refinement of attitudes. It is possible through reflection, firm resolution and persistent practice. Let us therefore move forward in that direction.

Familiar Harmony

There was a time when everything was based on and centered upon the married couple. Organised life revolved around the couple. The concept of society was not yet born. There was no management and no planning. Today we see not only organized societies but also an explosion of population. Hence family planning methods are being employed. In the pre-society era there was a built-in balance in nature which has now vanished. In many contries there are more boys than girls which has resulted in an imbalance. In fact, any expansion brings into wake the need and problem of planning. The growth of the family system gave rise to the need for planning. There are three major requirements of man:

1. Assurance
2. Trust
3. Development

Collective morale

Collective morale is essential for development. It has a very important place in social psychology. James Drekker speaks of three constituents of morales

1. Self-control
2. Self-confidence
3. Disciplined action

Collective morale does not exist in the absence of the above three factors and no organization, big or small, can function without collective morale, thereby making development impossible.

Self-control

The first constituent of collective morale is self-control. Nobody can be suitable for an organization if he cannot himself , cannot bridle instincts and impulses. In fact he proves a hindrance to the organization.

Self-confidence

The second constituent is the self confidence. It is the chief key to success. No one can ever succeed if he lacks self confidence and is subject to doubts and uncertainties. Self confidence is truly a collective morale.

Discipline

The third constituent is discipline. Everything a successful man does is disciplined. There is no arbitrariness or haphazardness about it

Collective morale has two aspects

1. Mental aspect
2. Social aspect

Modern principles of Mangement

Methods of management have greatly developed so that they have acquired a scientific character.

Ancient principles of Mangement

Four out of twelve components of ancient principles of management are the following four qualities.

1. Friendship
2. Sublime Joy

3. Compassion
4. Considered disregard

Life is self restraint

It is obvious to people that food, water and more importantly, breath mean life , but they wonder how self restraint can be life.

Control of Desires

One of the important components of self-control is control over desires. Everything desired is not necessarily desirable, for, the desire in another man may result in a clash causing destruction and death.

A wise man knows how to curb and birdle his desire. He does not set about fulfilling each one of his desires. Desires keep multiplying and it is not possible to fulfill all of them. A wiseman, an organizational head and a disciplined member of an organization do not go about proclaiming that once they have a desire, they invariably satisfy it.

Non discrimination

One of the principles of management is non-discrimination. I would not ever say that a family is completely free from discrimination. Some discrimination even in the mind, cannot be ruled out. But it should not be such as others would find disagreeable, and as knows no end. When collective will power is discussed in social psychology, it is held that there should be as little discrimination as possible.

Worring about the loved ones

Worry can be on two counts- worrying about the loved one and worrying about his well-being. People do worry about the latter. The building of a good life is related to the latter. If a fond mother falls prey to the instinct of material love and gives the child something prohibited by the physician

to eat, she does not indulge her love but in the process does infinite harm to the childs well-being.

Worry about the well-being

Love takes a back seat when the focus is on the well-being. But in today's families it is the former that has driven away the latter. It accounts for the fact that discipline is on the wane, homogeneity is lacking and the collective feeling is not developing. And in their absence the joint family loses its very raison deter. The head of the family must realise that he should not worry only about those things desired by the family but also about the well being of the family. ✿

The root of the malady lies in the individual. The Acharya realised that society cannot be purged without the transformation of man. In short measures, life may be perfect. Anuvrat is the only movment of its kind in the world that seeks peace through individual commitment to certain basic human values.

Individual ego is perennial human traits

◈ **Vivek Arunkumar** VIII C
St. Mary's High School
Chakki Naka, Kalyan (East)
Maharashtra

While many western celebrities like Bertrand Rusell and Martin Luthar King were organising huge peace rallies exhorting the people to raise theri voice agaisnt the senseless genocide caused by the nuclear holocaust in Hiroshima and Nagasakti, by a strange coincidence, as it were, a relatively unknown religious preceptor of the East heading a Jain Sect, seated far away in a remote town of Thar Desert of Rajasthan, was engaged in an identical mission, though in a small way. He heard the inner call that commanded him to throw off the yoke of sectrism, dogmatism and launched a crusade against caste, untouchability, subjection of women and religious intolerance. His response to the call resulted in the birth of Anuvrat Movement.

The Anuvrat Movement has been engaged in the noble task of uplifting human life and revitalizing the rapidly crumbling moral and spiritual values among the people of the world irrespective of caste, creed and colour for the last three and half decades.

“World peace will never be stable until enough of us find inner peace to stabilize it.”

The root of the malady lies in the individual. The Acharya realised that society cannot be purged without the transformation of man.

“In short measures, life may be perfect.”

Anuvrat is the only movment of its kind in the world that seeks peace through individual commitment to certain basic human values—the degeneration of which is at the root of unrest violence, hatred, fanatism and conflicts that mark the world today.

Individual desire and ego are perential human traits. Whenever they have been conjoined with power there has been a general increase in war hysteria to the repetition of bloody and violent effects in history. The reason why moral values have been held in the highest esteem is that they transform this evil conbination of desire, ego and power into courteous humility.

The value system enunciated in Anuvrat by its Anushasta Acharya Shri Tulsi, provides a solution that does solve the problems prevailing create new problems and solution that does not unnecessary. The increasing bitterness proves violence relations is also a product of violence.

It is very difficult to know how to improve relatins and how to make them cordial. The difficulty is caused by the persistant presence of the ego or the ‘I’. Anuvrat has given philosophy for this purpose. The First step is to resolve or to take a vow, which symbolizes great strength.

The slogan of Anuvrat is

“Sanyamah Khalu Jeevanam.”

Any culture and civilization which is externally rich ut internally hollow is bound to go utterly bankrupt one day.

“As happens sometimes, a moment settled and hovered and remained for much more than a moment and sound stopped for much more than a movement stopped, more than a moment.”

Acharya Shri Tulsi heard came from within, not unlike the one as in the case of Saint Joan had heard for senturies before in France. But unlike as in her case the inner voice direction the Acharya launched a movment for liberating the individual from a sectarian outlook, fanaticism and an unethetical approach.

Change means movment. Movement means friction. Only in the frictionless vacuum of a nonexistant abstract word can move or change occur without that friction of conflict.

In conclusion, we might remember Neil Armstrong’s spontaneous utterance on first stepping on the soil of moon, “one small step for a man but one giant leap from mankind” Who knows Acharya Shree’s step may eventually turn out to be a giant leap for mankind. ✿

Destiny can be changed

◈ **Sanjana Sharma** X B
Modern Child Public School
Nangloi, Delhi

One of the important components of self-control is control over desires. Everything desired is not necessarily desirable for the desire in another man may result in a clash causing destruction and death. A wise man knows how to curb and birdle his desires.

The human religion enunciated by Anuvrat Anushasta Tulsi, provides a solution to the problem pervading the whole society, a solution that doesn't aeate new problems and therefore renders violence unnecessary. Various forms of violence are striking terror in society. The increasing bitterness is also a product of violence. Let us examin the two terms 'human beings and relation in the above context.

First, it is necessary to understand the meaning of 'human being'. Many branches of knowledge includng sociology, psychology & philosophy have interrupted the term and tried to understand man to be basically a social being. Psychologists have explained man and his behaviour on the basis of his unconsciousness and basic instincts. Philosophers have made Karma the basis of their interpretation. Spritiual teachers have defined man on the basis of intellectual awareness.

Aristotle defined man as a rational animal. This kind of

ability to reason is not found in any other being. I feel that though none of these interpretations is wrong, none of these intepretations is entirely right either with a partial or one-sided view point, no single view or opinion is either fully right or wrong.

Self-control
Self-confidence
Disciplined Action

Collective morale does not exist in the absence of the above 3 factors & no organization, big or small, can function without collective morale, thereby making development impossible.

Self-Control

The first constituent of collective morale is self-control. Nobody can be suitable for an organizational if he can't himself instinct and impulse.

Self-Confidence

The second constituent is self-confidence. It is not possible to run an organization or any development to occur in a situation where people live in full of doubts and uncertainties.

Discipline

The third constituent is discipline. Everything a successful man does is discipined. There is no arbitariness or haphazardness about it.

Collective morale has two aspects

1. Mental aspects
2. Social aspects

Anuvrat depends on one's own desire. One of the Acharyas made the following submission to Lord Mahavira. 'I want

to travel in that particular region'. Lord Mahavira tried to dessuade him but he did not relent. He kept on insisting on going there. Mahavira saw that he was obstinate disregarding the submission.

In this context the following couplet is very opposite: Arhats (the 24 Tirathankars or Jain saints) are very powerful but can they force an individual to perform a desirable action? They can merely inspire. It is up to a man's desire if he wants a good life. Can anyone forcibly make someone else righteous? No, it is not possible. Therefore it is necessary to practice discreet disregard as the time and place demand. From these 4 managements of friendship, sublime joy, compassion and considered disregard belong to the past, they are unquestioned relevanace for present day managment

Control of Desires

One of the important components of self-control is control over desires. Everything desired is not necessarily desirable for the desire in another man may result in a clash causing destruction and death. A wise man knows how to curb and birdle his desires. He does not set about fulfilling each one of his desires. Desire keep multiplying & it is not possible to fulfill all of them. A wise man, an organizational head and a disciplined member of an organization do not go about, proclaiming that once they have a desire, they invariably satisfy it.

Destiny can be changed

The Jain mode of spiritual practice concedes that humaneffort can change destinty. It is my firm belief that new direction of development, change and managment can open only if we believe in the principle that astrological predictions based on hororscopes and lines can be falsified and refuted. Let us accept the fact that the future can be

shaped and that it has happened in innumerable cases.

Revered Gurdev was once spending the four rainy months in Rajaldesar. An astrological prediction stated that he would not be able to leave Rajasthan.

When he moved out of there, the prediction was made that he would not be able to hold the Maryada Mahotsav at Sujangarh. That too was duly help. Then the third prediction, said he would not be able to proceed to Delhi. He reached Delhi hale and heartly. I must say that the foretellers were also not wrong. I too know astrology a bit and believe in it too. The predictions were not inaccurate at all, but they were rendered inaccurate. Strong character, willpower and self confidence reduce those predictions to nothing. They would have come out true in the absence of those strong qualities. But now the foretellers have been rendered speechless.

Therefore Anuvrat is an efective solution to the problems of our time. ✿

Material objects and peace are not the same

◈ **Sanjana** XI E
Maharaja Agrasen School
Pitampura, New Delhi

Violence and crime are two major problems we face today. Violence has myriad forms. One major factor behind violence is the individual tendency to grab more and more, denying others their share. The latter react with violence which sometimes assumes the shape of terrorism.

The human religion enunciated by Anuvrat Anushasta Tulsi, provides a solution to the problems, prevailing the whole society, a solution that does not create new problems and therefore renders violence unnecessary. Various forms of violence are striking terror in the society. The increasing bitterness is also a product of violence.

It is true that man is a social living being but it is not true that he is social & nothing else. He is as much individual as he is social. Existentialist philosophers lay emphasis on his individual features, not on common or universal features. In their opinion, individuality is man's exclusive quality and he cannot be understood by underplaying it. Sociologists hold the view that man cannot survive without water. Here we have two diverse views- premium on individuality by existentialist and that on communality by sociologists. It is only by combining both that we get total view.

Psychologists say that man is governed by the unconscious. All his activities and behaviour are conducted by the unconscious. It again is a partial truth because there is much behind the unconscious which also acts as conductor. Our wakeful awareness or the conscious also acts as conductor. Our wakeful awareness or the conscious also something unique about it. Further, the soul which is beyond the unconscious has its own importance too. We can thus treat the unconscious as a midpoint with the soul at its backs intelligent awareness in its fore. Between the two ends operate the unconscious. Man is countless and is difficult to define him in a few words.

Co-ordination between Dvaita & Advaita

The philosophy of anekant subscribes neither to dvaita nor to advaita. It coordinates the two, we cannot explain relations purely on the basis of advaita alone. We have to resort to both in order to explain relations. An exclusive allegiance to advaita will mean perpetual bitterness in relation as a result of accentuating difference and distance. It will be impossible to remove that bitterness. In fact advaita is inherent in Dvaita. It is on the basis of advaita tradition that one treats everyone like oneself, that self realization takes place and one observes equanimity in both joy and sorrow. But advaita alone is not adequate and one has to resort to advaita. If the ‘other’ is their, adaita will have to be explained that human nature and behaviour will have to be undertood on that basis and one has to resort to advaita. If the ‘other’ is their, advaita will have to be explained and human nature and behaviour will also understand on their basis.

I and My

It is the basic instinct which are responsible relations. Two of our basic instructs are ‘I’ and ‘My’. I represents selfishness and my represents relations. All relations are based on the

bais of instinct of possession. As the instinct of possession extend in scope, the relations multiply.

There would have been no relations in the absence of that instinct. An extension of that instinct is an extension of relations. But if there had been no 'I' there would have been no problem in relations. The problems we face in respect of relations there. The 'my' instinct gets divided into many categories. If it is my son or my family, they can be partners in the profits I earn. But my servant cannot share in the profits. Again, the factor influencing, such as categorization of relations is the 'I' instinct . Once 'I' ceases to be narrow and confined and spread out to others, all problems pertaining to relations come to an end.

Causes of Violence

Violence and crime are two major problems we face today. Violence has a myriad forms. One major factor behind violence is the individual tendency to grab more and more, denying others their share. The latter react with violence which sometimes assumes the shape of terrorism. Even as one man is busy earning, he wants to earn at the cost of others. This exploitation is an important cause of violence. If we analyze the phenomena of thefts, robberies, kidnappings and murders, we find that one man's instinct is encouraging the instinct of other person. Many of these problems would not have appeared if there had been no greed in man.

Material Objects and Peace are not the same

There can be no happiness in the absence of peace. One can pile up items of comfort, but not of peace and happiness. We should never forget that fact that problems and unhappiness are not the same. A problem may occur at the physical or mental level. However, intellectual awareness transcends these levels. If we cling to a problem, there can

be no solution. We are generally improving human relations. We should refine the instincts 'I' and 'my' so that selfishness of other is not transgressed. If someone is mine, it does not mean that he or she has no independent existence. Every living being has a right to live in freedom. A relation is justified only to the extent it is useful without tramping on someone's freedom.

Life's Relativeness

Our life is relative. Life cannot be led in isolation. Everyone requires someone else. For sustaining one life the labour of a thousand of people is needed. The labour of a large number of people is involved between the time a seed is planted and its product is cooked in the kitchen. It is only thereafter that someone eats a meal. Being so much relative, it will be the height of unwisdom on the part of a man not to closely deliberate upon relations and to make them cordial.

The Principal of Equipoise

Lord Mahavira gave a principal for rousing self awareness. Vyas gave a similar principle. By practicing these principles we generate compassion. If pain is unfavourable to us, it is equally unfavourable for others. 'Robbing others of their bread is bad, because I do not like my bread to be robbed. By balancing the two scales we refine our disposition and the ego is curbed. If I had been alone in the world, the world would have been mine my ego would have been expanded. But the world is peopled by countless other like me this thought puts on curbing on my ego, limits it within well-defined confines.

Familiar Harmony

There was a time when everything was based on and centered upon the married couple. Organized life resolved around the couple, The concept of society was not yet born. There was no management and no planning. Today we see

not only organized societies but also an explosion of population. There are three major requirements of man:

1. ***Assurance*—**Man wants assurance. Who will take care of us and protect us in old age and when we are ill and in adversity? Man wants assurance on his score.
2. ***Trust*—**The second requirement is trust. Who can be trusted to come to our rescue in our house of need?
3. ***Development*—**The third requirement is development. Every man wants development to go forward and grow better.

Collective morale is essential

Collective moral is essential for development. It has a very important role in social psychology. Three controls are:

1. Self control
2. Self-confidence
3. Disciplined action

***Self control*—**The first constituent of collective moral is self-control. Nobody can be suitable for an organization if he cannot himself, bridle instincts and impulses.

***Self-confidence*—**The second constituent is self confidence. It is not possible to run an organization or any development to occur in a situation where people live in full of doubts and uncertainties.

***Disciplined action*—**The third constituent is discipline. Everything a successful man does is discipline. There is no arbitrariness about it.

Collective morale has 2 aspects

1. Mental aspects
2. Social aspects

Worry about the well-being

Love takes a back seat when the focus is on the well-being. But in today's families it is the former that has driven away the latter.

It accounts for the fact that discipline is on the wane, homogeneity is lacking and the collective feeling is not developing. The head of the family must realize that he should not worry only about those things desired by the family but also about the well being of the family. ✿

Anuvrat is the worship of Ahimsa

◈ **Ankita S. Shukla** XII
Green English School
Milap Nagar, MIDC
Dombivali (East), Maharasthra

Ahimsa yatra is an endeavour to awaken a new faith in the infinite non-violence in the hearts of the people. It involves a lot of people and inspires the positivity in unison with one another.

Acharya is a small oath ordiscision to control ourself and our activities. By making oath of living peaceful life and do not show of your own things is called as Anuvrat. Anuvrat global organization was firstly started by Shri Acharya Mahapragya. He was a only man who had give us a thought of peaceful environment and to being a disciplined person in your life. In Anuvrat song, Shri Acharya said that, “By controlling ourself we should make a great nation, By making discipline in our daily routine we should make our nation India a s developed nation, We should look a man or woman in same way. We should not avoid woman’s success because an educated woman is said to be the backbone of our nation. Anuvrat is the worship of Ahimsa.

What is Ahimsa Yatra?

Yatra or a journey on foot with a purpose is not new in the non-violent Jain tradition. Lord the 24th Tirthankar who asserted that all Jivas were equal walked all his life to

allemisery. The Jain ascetics are supposed to be on the move till they breath their last. They are of their lifelong vow to keep walking till the end of their life is to carry the message of non-violence far and wide and inspire the masses to live a good life.

Ahimsa yatra is an endeavour to awaken a new faith in the infinite non-violence in the hearts of the people. It involves a lot of people and inspires the positivity in unison with one another. As a result the cosmic energy system because percolating through the minds of lakhs of people and unleashes a torrent of spiritual washing away the negative thoughts of the masses. This spiritual power was amply derived the Gandhi's Dandi March which went a long way in electrifying the nation. Acahry Mahapragya said that, "Negative thoughts cause violence and positive thoughts helps natural evolution of the ahimsa. The negative ones are anger, arrogance, greed hatred, fear, communal feelings of caste supremacy. Tolerance, politeness, dispassionate attitude, love communal harmony and human solidarity are positive thoughts. Ahimsa Yatra aims training in the strategies to transform the negative thoughts into positive ones."

Anuvrat and Ahimsa is the only way to survive:

The advent of the new millenium brought unprecedented turmoil and unrest adding to the people who were already in miserable conditiions. World wide terrorist attacks, coethnic clashes, conflicts arising from glibalization, poverty, expoitation and the increased power and walth among people ahve made social life insecure and vulnerable.

The situation touched Acharya Mahapragya deely. He meditated on its caused and got the conclusion that the problems that afflict the civil society today cannot be solved unless the compaign in launched for mass physchological

and attitudinal transformation. With this he was formulated a constructive programme to educate and train children and non-violence at national level. On parttern on compulsory military training in many ways suggest that training in non-violence should be made compulsory in all schools and colleges. He embared on Ahimsa yatra at Sujangarh and generated tremendous support among the people.

Thousands joined the yatra and experienced the joy and happiness which awakened state of higher consciouness. When he decided to take his Ahimsa Yatra he was warmed and strongly advised not to go, but he declared firmly, come what may and he went.

As the yatra entered the state of Gujarat which was aflamed with communication environment began to change. Exitinguishing the flameses of anger and hatred which was led by Acharya Mahapragya generated a sense of confidence in the victims and the had a real changes of heart. The response was undoubtedly positive.

Addressing humber of villages in Gujarat Acharya Shri said, “Only that country becomes strong whose citizens have controled their emotions. No country can energe powerful without peaceful coexistence. It is impossible for a country to ensure peaceful co-existence of its people without the discipline. Some people are educated in communal and cate frenzey. The frenzied minds give rise to an anti-social environment. The government tries to resist it through but it is the dury of the citizens to see the hooligans do not convert into community.

People have to resist such tendencies non-violently by arousing their consciousness. “This was a boon to the strifetorn people of Gujarat. Those who indulged in rioting and blood shed violence would cause more violence taking a heavy toll of innocent lives. The very good Acharya

disarmed them. They eschewed violence and pledge to refrain from killing cretures. They persuaded others to join the Acharya's mission of regenerating human beings.

Impact of Ahimsa Yatra and Anuvrat on society

Acharya Shri said at another meeting, "Ahimsa yatra's main objective is to create awareness among the people. The moment an individual's attention is reiveted on ahimsa, peace springs within, which not only makes him happy but all othes. The worst affected place in Gujarat was Ahmedabad where hundreds of innocent children and men were massacred only because they belonged to different community. The Acharya said, " Whatever happened in Ahmedabad and other areas of Gujarat is shameful."

Acharya Mahapragaya's Ahimsa Yatra continued till peace prevailed everwhere. We bow in reverence before their crusader for peace. We salute him. ✿

Violence assumes many forms

◈ **Durga Menon** I B
Arya Gurukul School
Mumbai

Violence inheres in man, it manifests itself in social life. It is precisely because the seed of violence is there that it springs up whenever it gets an occasion to do so.

Anuvrat is the philosophy of change. Its sole purpose is to enable man to introspect, understand his own nature and to make efforts to transform it. Its goal is to avoid unnecessary killing of even the smallest being both from the ecological and a healthy society's point of view the Anuvrat or Non-violence is extremely important. It gave the concept of religion free from sectarianism. Anuvrat is pure religion and no sect, nor is it associated with any sect. It is not Jainism, Budhism, Vedic injuctions, Islam or Christianity. It is a religion without a denomination.

It proclaims sudhre vyakti, samaj vyakti se'. Social reform is possible though the reform of individuals and then the nation as a whole registers regeneration. The dream of social and national reconstruction is entirely depended on individual reform. The main plank of the philosophy of Anuvrat is building individual character. The main aims of Anuvrat are (i) to inspire people to observe self-restraint irrespective of their caste, colour, creed, country or language,

(ii) to establish the values of friendship, unity , peace and morality. (iii) to build a non-violent society.

Anuvrat means intellectual as well as behavioural revolution. In short Anuvrat is a constructive endeavour towards a non-violent multicultural society.

Violence inheres in man, it manifests itself in social life. It is precisely because the seed of violence is there that it springs up whenever it gets an occasion to do so. The result is the outburst of riots and acts of vandalism. Violence assumes many forms, one dangerous form being hatred. It is spurred by egoism. The spirit of religion – the most sublime part of life –got suppressed and overcome by uncompromising sectarianism. For the same reason violence grew in the name of religion. Religion without morality is intellectually incomprehensible. Unfortunately religion stripped of morality gained acceptance. That is why a person claiming to belong to a religion also practices dishonesty. It is amazing that a man devoid of integrity or morality in the practice of his trade or profession is regarded religious. Anuvrat has tried to Shaffer this illusion and firmly stated the impossibility of being religious without being moral. ✿